CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनू, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

वर्ष : 10 अंक : 162 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, सोमवार 07 जुलाई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.50 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

खान विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित

राजस्व वृद्धि के लक्ष्यों की प्राप्ति में कोताही बर्दाश्त नहीं : भजनलाल

खनन की प्रभावी रोकथाम के लिए प्रतिबद्ध राज्य सरकार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने खनिज सम्पदा का समुचित दोहन करते हुए राजस्व लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि खनन अधिनियमों और नियमों की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए अवैध खनन गतिविधियों की प्रभावी रोकथाम की जाए। शर्मा ने रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर खान विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में खनिज संपदा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और यहां खनन की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने खान विभाग को नये खनन क्षेत्रों की खोज में तेजी लाने और नीलामी प्रक्रिया को और गति देने के लिए निर्देशित किया। शर्मा ने कहा कि नीलाम किए गए ब्लॉक्स में खनन कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाए ताकि उपभोक्ताओं की मांग के अनुरूप समय पर पूर्ति सुनिश्चित हो सके।

शास्ति प्रक्रिया में लाएं आवश्यक सुधार

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के राजस्व में खनन की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसे में खनन विभाग समयबद्ध रूप से तय राजस्व लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करे। इस कार्य में किसी भी स्तर पर कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने शास्ति प्रक्रिया में सुधार लाने और इसे आवश्यकतानुसार सुसंगत बनाने के लिए निर्देशित किया।

नवीन तकनीकों से लगाएं अवैध खनन पर प्रभावी रोकथाम

शर्मा ने कहा कि नवीन सूचना प्रौद्योगिकी तकनीकों का समावेश करते हुए विभाग अवैध खनन पर प्रभावी रोकथाम करे। उन्होंने सीसीटीवी कैमरे, ड्रोन सर्वे और मालवाहक गाड़ी की सख्त चेकिंग सुनिश्चित करते हुए अवैध खनन पर अंकुश लगाने के लिए निर्देशित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि अवैध खनन पर रोकथाम के लिए सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। इसके लिए पुलिस, जिला प्रशासन, वन विभाग, परिवहन विभाग और खान विभाग आपसी समन्वय के साथ काम करें।

एम-सैंड को व्यापक रूप से करें प्रोत्साहित

मुख्यमंत्री ने कहा कि एम-सैंड पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ ही गुणवत्तापूर्ण भवन निर्माण सामग्री का एक बेहतरीन विकल्प है। इसे व्यापक रूप से प्रोत्साहित किया जाए ताकि बजरी के दोहन में कमी आए। शर्मा ने क्रेशर डस्ट के उपयोग को भी प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए।

विभाग के पुनर्गठन पर हो कार्य

शर्मा ने कहा कि विभागीय कार्मिक अपनी जिम्मेदारी का समर्पण भाव से निर्वहन करें और राज्यहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। उन्होंने विभागीय कार्यों की गुणवत्ता अभिवृद्धि के क्रम में खान विभाग की रिस्ट्रक्चरिंग करने और लंबे समय से विभाग में पदस्थापित कार्मिकों को स्थानांतरित के लिए भी निर्देशित किया। मुख्यमंत्री ने नए ब्लॉक्स की नीलामी की संभावनाएं तलाशने, डीएमएफटी और एनएमईटी से संबंधित प्रकरणों की विस्तृत समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। साथ ही, उन्होंने ओडिशा सहित अन्य राज्यों में खनन क्षेत्र में क्रियान्वित श्रेष्ठ कार्यप्रणालियों का अवलोकन कर इन्हें राजस्थान में लागू करने की संभावना पर कार्य करने के लिए भी निर्देशित किया। बैठक में संबंधित विभागों के उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रशासनिक प्रक्रियाओं में किया बदलाव, विकास को मिलेगी रफ़्तार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के निर्देश पर विकास कार्यों को तेज़ रफ्तार देने के लिए प्रशासनिक प्रक्रियाओं में बड़ा बदलाव किया है। अब टेंडर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद फाइलों को वित्त विभाग में पुनः भेजने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे न केवल अनावश्यक देरी खत्म होगी बल्कि कार्यों की लागत और समय की भी बचत होगी। सरकार ने तय किया है कि कार्यकारी विभाग अब निविदा प्रक्रिया पूरी होने के बाद सीधे कार्यादेश जारी कर सकेंगे। उन्हें प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति के लिए दोबारा वित्त विभाग को प्रस्ताव नहीं भेजना होगा। यह बदलाव पिछली सरकार की उस व्यवस्था को खत्म करता है, जिसमें विभागों को पहले सैद्धांतिक स्वीकृति मिलती थी और फिर दोबारा पूरी फाइल भेजनी पड़ती थी। पुरानी प्रक्रिया के कारण विकास कार्यों में 15 से 30 दिन की अतिरिक्त देरी हो रही थी। इससे आमजन तक योजनाओं का लाभ समय पर नहीं पहुंच पा रहा था और लागत भी बढ़ रही थी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस दोहराव को खत्म करने के निर्देश दिए जिसके बाद अब कार्यकारी विभाग स्वयं पोर्टल पर निविदा के बाद प्रशासनिक और वित्तीय स्वीकृति की राशि अपलोड कर सकेंगे। सरकार का कहना है कि इस नए निर्णय से विकास कार्यों को समय पर और गुणवत्ता के साथ पूरा करने में मदद मिलेगी। पारदर्शिता, सुशासन और त्वरित सेवा की दिशा में इसे एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

देश में वन क्षेत्र बढ़ाने की जरूरत

सरकार वन संरक्षण कानूनों को लागू कराने में विफल- खड़गे

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि देश का वन क्षेत्र औसतन अपने भौगोलिक क्षेत्र का 25.17 प्रतिशत है, जो अपर्याप्त है। इसे कम से कम 33 प्रतिशत होना चाहिए। एआईसीसी प्रमुख वन महोत्सव (पौधरोपण उत्सव) कार्यक्रम में बोल रहे थे, जो हरिरु कल्याण कर्नाटक पहल का हिस्सा है। खरगे ने कहा कि कर्नाटक का वन क्षेत्र केवल 21 प्रतिशत है। उन्होंने सड़क किनारे, घर के पास, स्कूल-कॉलेज और कृषि क्षेत्र के आसपास पौधे लगाने का आह्वान किया। खरगे ने कहा कि देश का वन क्षेत्र औसतन अपने भौगोलिक क्षेत्र का 25.17 प्रतिशत है, जो अपर्याप्त है। इसे कम से कम 33 प्रतिशत होना चाहिए। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अमेरिका से व्यापार समझौते को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीखी आलोचना की है। राहुल ने कहा कि व्यापार वार्ता के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ समय सीमा के आगे झुक जाएंगे। राहुल की यह टिप्पणी केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल के उस

बयान के बाद आई है, जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत के राष्ट्रीय हित सर्वोच्च प्राथमिकता है। दरअसल, अमेरिका चाहता है कि भारत की ओर से कृषि उत्पादों पर टैरिफ में कटौती हो, जबकि भारत चमड़ा और कपड़ा जैसे श्रम से जुड़े क्षेत्र में अमेरिका से छूट चाहता है। राहुल के बयान पर पलटवार करते हुए केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि यह नया भारत है, जो पूरी तरह से आत्मविश्वास से भरा है। राहुल को अब कोई गंभीरता से नहीं लेता, क्योंकि वे, उनके सहयोगी और उनकी पार्टी लगातार नकारात्मकता फैलाते हैं। इसलिए जनता ने उसे शासन से बाहर कर दिया। गोयल ने कहा कि भारत किसी भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौते में समयसीमा के दबाव में नहीं आता, बल्कि अपनी आर्थिक और रणनीतिक ताकत के आधार पर बातचीत करता है।

सुपरपावर देशों की तानाशाही से बढ़ा टकराव: गडकरी

खतरा: कभी भी हो सकता है विश्व युद्ध

जयपुर टाइम्स

नागपुर(एजेंसी)। केंद्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने रविवार को कहा कि दुनिया में रूस-यूक्रेन और इस्राइल-ईरान जैसे युद्धों के कारण टकराव का माहौल बन गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि ऐसी स्थिति बन रही है जिससे कभी भी विश्व युद्ध छिड़ सकता है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी नागपुर में 'बियॉन्ड बॉर्डर्स' नाम के पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि बड़ी महाशक्तियों की तानाशाही और अधिनायकवाद के चलते दुनिया से समन्वय, सौहार्द और प्रेम खत्म होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया में संघर्ष का वातावरण है। रूस-यूक्रेन और इस्राइल-ईरान के बीच युद्ध जारी हैं। ऐसे हालात बन रहे हैं कि कभी भी वर्ल्ड वॉर जैसी स्थिति पैदा हो सकती है।' केंद्रीय मंत्री ने इस मौके पर भारत की सांस्कृतिक विरासत की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत बुद्ध की धरती है, जिसने दुनिया को सत्य, अहिंसा और शांति का संदेश दिया है। नितिन गडकरी ने कहा कि युद्ध की तकनीक अब पूरी तरह बदल चुकी है। अब टैंक और पारंपरिक विमान कम उपयोगी हो गए हैं, जबकि मिसाइल और ड्रोन जैसे आधुनिक हथियारों का ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है।

उन्होंने कहा कि अब मिसाइलें सीधे नागरिक बस्तियों पर गिराई जा रही हैं, जिससे मानवता की रक्षा करना मुश्किल होता जा रहा है। यह एक गंभीर समस्या है जिस पर वैश्विक स्तर पर चर्चा की जरूरत है'। उन्होंने कहा कि बड़ी महाशक्तियां जो दुनिया पर अपना दबदबा बनाना चाहती हैं, उनकी तानाशाही और अधिकारवादी रवैये के कारण दुनिया में समरसता खत्म होती जा रही है। उन्होंने कहा कि यह कहना ठीक नहीं होगा, लेकिन सच्चाई यह है कि दुनिया धीरे-धीरे विनाश की ओर बढ़ रही है'। नितिन गडकरी ने इस बात पर जोर दिया कि भारत को वैश्विक घटनाओं की गंभीर समीक्षा कर भविष्य की नीति तय करनी चाहिए, जिससे दुनिया में शांति और स्थिरता लाई जा सके।

तकनीक और लोगों के हित को बनाएं सहकारी क्षेत्र की कार्य संस्कृति: अमित शाह

जयपुर टाइम्स

आणंद(एजेंसी)।। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को सहकारिता क्षेत्र के नेताओं से अपील की कि वह पारदर्शिता, तकनीक का उपयोग और सदस्यों के हित को अपनी कार्य संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनाएं, ताकि सफलता हासिल की जा सके। शाह आणंद में अमूल डेयरी परिसर में सहकारिता मंत्रालय के चौथे स्थापना दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पारदर्शिता, तकनीक और सदस्यों (किसानों और सहकारी संस्थाओं) को प्राथमिकता देना आवश्यक है। तकनीक के बिना सहकारिता की समृद्धि संभव नहीं है। उन्होंने यह भी कहा, अपने कार्य के केंद्र में लोगों के हितों को रखना भी बहुत जरूरी है। शाह ने सहकारिता से इन तीन सिद्धांतों को अपनी कार्य संस्कृति में आत्मसात करने और जम्मू-कश्मीर से कामाख्या (असम का एक मंदिर) और देश के हर गांव तक फैलाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इस समारोह के दौरान शुरू की गई दस पहलों से एक मजबूत ब्रांड का निर्माण होगा, जैसा कि अमूल है। इनमें गुजरात में एक नमक सहकारी संस्था की स्थापना भी शामिल है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सहकारी क्षेत्र में दो लाख प्राथमिक कृषि ऋण

समितियों (पीएसी) का पंजीकरण, देश के पहले राष्ट्रीय सहकारी विश्वविद्यालय 'त्रिभुवन' की स्थापना और डेयरी क्षेत्र में तीन नए राष्ट्रीय सहकारी संस्थानों का गठन किया गया है। शाह ने क्षेत्र को आगे बढ़ने के लिए पांच 'पी' – 'पीपुल्स' (लोग), 'पीएसी' (प्राथमिक सहकारी समितियां), 'प्लेटफॉर्म' (डिजिटल जैसे मंच), 'पॉलिसी' (नीति) और 'प्रोसपेरिटी' (समृद्धि) – को अपनाने की सलाह दी। मंत्री ने कहा कि चार साल पहले प्रधानमंत्री मोदी ने 'सहकारिता से समृद्धि' के मंत्र के साथ सहकारिता मंत्रालय की नींव रखी थी, जिससे इस प्रणाली को नया जीवन मिला। उन्होंने बताया कि इन चार वर्षों में केंद्र सरकार ने इन पांच 'पी' के आधार पर 60 से अधिक पहलें शुरू की हैं।

रास्ता खोलो अभियान ग्रामीणों के लिए बना राहत का दूसरा नाम

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल से दूर हो रहीं दूरियां, सुशासन हो रहा साकार

जयपुर में राहत 1300 पार, कलेक्टर कर रहे सतत मॉनिटरिंग

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में जयपुर जिले में संचालित रास्ता खोलो अभियान अब ग्रामीणों व किसानों के लिए राहत का दूसरा नाम बन गया है। 8 महीने से भी कम समय में जयपुर जिले में बरसों से बंद एक हजार 310 रास्ते खुलवाकर लाखों ग्रामीणों की खेतों एवं गांवों की राह आसान की है। जयपुर जिले में रास्ता खोलो अभियान के सफल क्रियान्वयन व अधिक से अधिक आमजन को लाभांवित करने के लिए जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी स्वयं अभियान की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। अभियान के तहत रास्ते खुलवाने के मामले में फागी अव्वल है जहां सर्वाधिक 118 रास्ते खुलवाए गए हैं

तो वहीं, मौजमाबाद में प्रशासन ने 96 रास्ते खुलवा कर ग्रामीणों को राहत प्रदान की है।

फागी के लदाना में 50 साल पुरानी राह हुई सुगम

रास्ता खोलो अभियान जिले में सुशासन की परिकल्पना को किस तरह साकार कर रहा है इसकी बानगी देखने को मिली फागी उपखण्ड के लदाना ग्राम में। जहां आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल शिविर में ग्रामीणों ने मुख्य आबादी से गांव के श्मशान घाट को जाने वाले रास्ते को अतिक्रमण मुक्त करवाने के लिए ज्ञापन सौंपा।
जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशों की अनुपालना में ज्ञापन पर त्वरित कार्यवाही को अंजाम देते हुए उपखण्ड अधिकारी राकेश कुमार के नेतृत्व में प्रशासन की टीम ने मौका देखा और विगत 50 वर्षों से अतिक्रमण का दंश झेल रहे रास्ते को महज 3 दिनों में सहमति के आधार पर ना केवल अतिक्रमण मुक्त किया बल्कि इस रास्ते पर सीसी रोड व नाली का निमार्ण भी करवा दिया। प्रशासन की इस त्वरित कार्यवाही व संवेदनशील पहल से 4 फीट का तंग रास्ता अब 12 फीट की सुगम राह में तब्दील हो गई है

रास्ता खोलो अभियान से बदल रही तस्वीर

अभियान के नोडल अधिकारी ए व अतिरिक्त जिला कलक्टर व अभियान नोडल अधिकारी देवेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देशन में प्रत्येक तहसील में हर सप्ताह 3 रास्ते खुलवाकर लाखों ग्रामीणों को राहत प्रदान की जा रही है। रास्ता खोलो अभियान के तहत जिला प्रशासन ने समझाइश व सहमति से गांवों, खेतों और ढाणियों के बरसों से बंद पड़े एक हजार 310 रास्ते खुलवाए गए हैं। उन्होंने ने बताया कि 15 नवंबर 2024 से 4 जुलाई 2025 तक अभियान के तहत जयपुर तहसील में 4 रास्ते, कालवाड़ तहसील में 8 रास्ते, आमेर तहसील में 69 रास्ते, जमवारामगढ़ तहसील में 60 रास्ते, आंधी तहसील में 74 रास्ते, बस्सी तहसील में 69 रास्ते, तूंगा तहसील में 45 रास्ते खुलवाए गए। वहीं, शाहपुरा तहसील में 82 रास्ते, जोबनेर तहसील में 71 रास्ते, किशनगढ़-रेनवाल तहसील में 60 रास्ते, फुलेरा तहसील में 73 रास्ते, रामपुरा-डाबड़ी तहसील में 57 रास्ते, जालसू तहसील में 45 रास्ते, चौमूं तहसील में 88, सांगानेर तहसील में 27 रास्ते खुलवाए गए। उन्होंने ने बताया कि चाकसू तहसील में 75 रास्ते, कोटखावदा तहसील में 51 रास्ते, माधोराजपुरा तहसील में 70 रास्ते व दूदू तहसील में 68 रास्ते खुलवाए गए। उन्होंने बताया कि जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने अधिकारियों को रास्ता खोलो अभियान के तहत बंद रास्ते खुलवाए जाने के पश्चात खोले गए रास्तों पर ग्रेवेल, सी.सी. रोड़ बनवाये जाने की कार्यवाही भी जल्द से जल्द अमल में लाने के निर्देश दिए हैं, इन निर्देशों की अनुपालना में अधिकांश स्थानों पर ग्रेवल रोड बनाने की कार्यवाही भी आरंभ की जा चुकी है। वहीं, जिन रास्तों के वाद न्यायालय में विचाराधीन है परिवादियों की ओर से संबंधित न्यायालय से ही अनुतोष प्राप्त किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में रास्तों की भूमि पर अतिक्रमण को लेकर जनसुनवाई के दौरान बड़ी संख्या में परिवाद प्राप्त होते हैं। रास्तों को लेकर न्यायालय में भी वाद दायर किए जाते रहते हैं। ऐसे प्रकरणों में निरन्तर बढ़ोतरी होने से आमजन को न्यायालय के चक्कर लगाने व जन-धन की हानि होने के साथ-साथ क्षेत्र की कानून व्यवस्था भी प्रभावित होती है। इसलिए प्रशासन ने रास्ते सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण के लिए 'रास्ता खोलो अभियान' चलाने का निर्णय लिया गया।

CMYK

ऐतिहासिक एवं यादगार रीजन 2 सांवरियाँ की रीजन अवार्ड्स सेरेमनी "मुस्कान" में बाँटे शानदार अवार्ड्स

21 वीं लायंस क्लब अलवर मत्स्य की इंस्टालेशन सेरेमनी सम्पन्न

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। लायंस क्लब्स इंटरनेशनल के डिस्ट्रिक्ट 3233 ई 1 के रीजन 2 सांवरियाँ के रीजन चेयरपर्सन एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता ने अपने सत्र 2024-25 की अवार्ड सेरेमनी "मुस्कान" को ऐतिहासिक एवं यादगार बना डाला स्वयं मुख्य अतिथि डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पी.एम.जे.एफ. लायन सुनील अरोड़ा (2024 - 25) ने अपने उद्बोधन में कहा कि रीजन चेयरपर्सन एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता ने पद से उतरने के बाद भी इतनी शानदार रीजन अवार्ड्स सेरेमनी को अंजाम दिया वही 21 वीं लायंस क्लब अलवर मत्स्य की इंस्टालेशन सेरेमनी में नयी कार्यकारिणी में लगातार दूसरी बार अध्यक्ष पद पर एम.जे.एफ. लायन डॉ. मंजू अग्रवाल, सचिव पद पर लायन सुधा अग्रवाल, कोषाध्यक्ष पद पर लायन यामिनी (मीना) गुप्ता को वर्ष 2025-26 के लिए शपथ दिलवाई गयी। रीजन चेयरपर्सन एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता ने बताया कि कि कार्यक्रम का शुभारम्भ मेल्विन जोहन्स, क्लब चार्टर एवं गणेश जी की

प्रतिमा के आगे दीप प्रज्वलित कर, माला एवं पुष्प चढ़ाकर किया गया तद्पश्चात एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता ने विधिवत कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की ध्वज वन्दना, दो मिनट का विश्व शांति हेतु मौन, राष्ट्रगान करवाया गया।
अपने स्वागत उदबोधन में एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि डिस्ट्रिक्ट का मूल मन्त्र था स्प्रेड हैप्पीनेस इसलिए उन्होंने इसी से मिलता जुलता नाम "मुस्कान" अपनी बेटी के नाम पर रीजन अवार्ड्स सेरेमनी का रखा। मुख्य अतिथि डिस्ट्रिक्ट गवर्नर पी.एम.जे.एफ. लायन सुनील अरोड़ा (2024 -25), इंस्टालेशन ऑफिसर PDG, MJF लायन अशोक ठाकुर, प्राइड ऑफ इवनिंग VDG -2, MJF लायन आर.एस. मदान, मुख्यवक्ता PDG,MJF लायन मानक चंद गुप्ता, मेहमान ए खास PDG,MJF लायन इंजी सुभाष जोशी, डायमंड ऑफ द इवनिंग इंडक्शन ऑफिसर PDG ,MJF लायन शशि गोयल, अतिविशिष्ट अतिथि PMJF लायन के सी शर्मा, अतिविशिष्ट अतिथि MJF लायन प्रभु पाटिल, स्टार ऑफ द इवनिंग MJF लायन ओ.पी.मंगल, अतिविशिष्ट अतिथि लियो डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट लियो अमन गुप्ता ,मेंटोर ऑफ द रीजन MJF लायन डॉ एस.सी.मित्तल मंच ,लेडी मेंटोर ऑफ़ द रीजन लायन अल्का मित्तल वर्ष 2025-26 के रीजन 9 के रीजन चेयरपर्सन लायन ओमप्रकाश खंडेलवाल, जोन 4 के जोन चेयरपर्सन लायन सत्येन्द्र त्यागी मंच पर सुशोभित थे।

रीजन अवार्ड्स सेरेमनी में

"कोहिनूर ऑफ़ द रीजन अवार्ड - रीजन मेंटोर एम.जे.एफ. लायन डॉ.एस.सी.मित्तल, रीजन भामाशाह अवार्ड - एम.जे.एफ. लायन डॉ. वी.के.अग्रवाल, डबल डायमंड ऑफ़ द रीजन अवार्ड पी.डी.जी., एम.जे.एफ. लायन मानक चन्द गुप्ता को, लेडी मेंटोर ऑफ़ द रीजन अवार्ड - रीजन एडमिनिस्ट्रेटर लायन अल्का मित्तल, संरक्षक अवार्ड लायन घनश्याम अग्रवाल, मोस्ट एक्टिव मेल लायन लीडर अवार्ड लायन सुरेश चाँद गुप्ता हुंडई वाले,
लायंस क्लब अलवर मत्स्य की नई टीम वर्ष 2025-26 का 21 वाँ शपथ ग्रहण समारोह में लायंस क्लब अलवर मत्स्य की अध्यक्ष एम.जे.एफ. लायन डॉ. मंजू अग्रवाल ने विधिवत सभा प्रारंभ करके अपने स्वागत उद्बोधन में पधारे हुए सभी अतिथियों का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। इंस्टालेशन ऑफिसर पी.डी.जी., एम.जे.एफ. लायन अशोक ठाकुर ने बड़े ही निराले रूप में शपथ दिलवाई जिसमे लायंस क्लब अलवर मत्स्य की अध्यक्ष- एम.जे.एफ. लायन डॉ.मंजू अग्रवाल, सचिव - लायन सुधा अग्रवाल, कोषाध्यक्ष - लायन यामिनी (मीना) गुप्ता सहित नयी कार्यकारिणी सदस्यों ने शपथ ग्रहण करी। नवनिर्वाचित अध्यक्ष एम.जे.एफ. लायन डॉ.मंजू अग्रवाल ने माय ईयर के अंतर्गत इस वर्ष में करने वाले मानव सेवा कार्यो से सदन को अवगत करवाया तथा पिछले वर्ष जो कमी रह गयी थी उन सभी को दूर करके एक बेहतरीन साल की योजनाओ को पी.पी.टी. के माध्यम से सदसं के समक्ष प्रस्तुत किया। लायंस क्लब अलवर मत्स्य की तरफ से पूर्व अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष को धन्यवाद स्वरुप गिफ्ट देकर बेहतरीन कार्यकाल के लिए बधाई प्रेषित करी
लायंस क्लब अलवर मत्स्य की पूर्व अध्यक्ष होने के नाते एम.जे.एफ. लायन डॉ.मंजू अग्रवाल ने अपने क्लब के सभी सदस्यों को उनके सहयोग हेतु टोकन ऑफ़ रेगार्ड्स के रूप में पुरुस्कृत किया वही क्लब के 7 सदस्यों को आउटस्टैंडिंग अवार्ड से सम्मानित किया जिसमे उनके पति एम.जे.एफ.लायन डॉ. वी.के. अग्रवाल, एम.जे.एफ.लायन गिरीश गुप्ता, लायन सत्यनारायण अग्रवाल, लायन रामबाबू गुप्ता, लायन अनिल बंसल, लायन गोविन्द गोयल, लायन महेश धानावत के नाम सम्मलित थे !कार्यक्रम पश्चात् नवनिर्वाचित अध्यक्ष एम.जे.एफ. लायन डॉ.मंजू अग्रवाल ने विधिवत कार्यक्रम स्थगित करने की घोषणा की। सभी कार्यक्रमों की भूरी भूरी प्रशंसा करी।
मास्टर ऑफ़ सेरेमनी डायनेमिक लायन मेम्बर लायन संध्या अग्रवाल एवं एम.जे.एफ. लायन गिरीश गुप्ता थे।

पुरुषार्थी समाज का प्रतिभावान सम्मान समारोह 13 को

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। जिला पुरुषार्थी समिति की ओर से प्रतिभावान बालकों व युवाओं का सममान समारोह 13 जुलाई को प्रताप आडिटोरियम में सुबह 9 बजे से होगा। इसमें अलवर और खैरथल जिले के प्रतिभावान बच्चे ओर युवा भाग लेंगे। समिति के महासचिव राजेश मककड़ ने बताया कि इसमें कक्षा दसवीं और बारहवीं सहित सभी बड़ी कक्षाओं के प्रतिभाशाली विद्यार्थी, प्रशासनिक सेवाओं में सफलता प्राप्त करने वाले युवा, एमबीबीएस में प्रवेश पाने वाले और चिकित्सक बनने वाले युवा तथा प्रतिभावान खिलाडि़यों का सममान होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री व सांसद भूपेन्द्र यादव और विशिष्ट अतिथि विधायक सुखवंत सिंह होंगे। जबकि अध्यक्षता राज्य मंत्री व अलवर शहर विधायक संजय शर्मा करेंगे। इस अवसर पर पंजाबी संस्कृति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा जिसमें प्रवेश निशुल्क है। इस कार्यक्रम में अलवर और खैरथल जिले के सभी बलाकों से समाज के लोग आएंगे जिनका जोरदार तरीके से स्वागत किया जाएगा। इसके लिए विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया है। मुख्य सलाहकार राकेश अरोड़ा ने बताया कि पुरुषार्थी समाज के इस कार्यक्रम को लेकर सभी में उत्साह है। समिति प्रतिभावान बच्चों को सममानित कर रही है। यदि कोई प्रतिभावान विद्यार्थी आर्थिक संकट में है तो उसकी सहायता भी की जा रही है।
तैयारियां जोरों पर कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर पुरुषार्थी समिति और कार्यक्रम संचालन समिति की टीम जोर शोर से लगी हुई है। तैयारियों को लेकर हुई बैठक अध्यक्ष कुलदीप कालरा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में मुख्य सलाहकार राकेश अरोड़ा, राजेश सेतिया, के. के. मदान, तिलक चावला, राजेश मुखीजा, दिनेश शर्मा, तिलक झाम, अशोक आहूजा, रवि जुनेजा आदि ने विचार व्यकत किए।

अपनाघर शालीमार सोसायटी के डायरेक्टर से ऑफिसर एनक्लेव-द्धद्ध के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सहित कार्यकारणी सदस्यों ने की शिष्टाचार भेंट

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अपनाघर शालीमार ऑफिसर एनक्लेव-14 बीघा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष रमेश गंडाला एवं कार्यकारणी सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने अपनाघर शालीमार सोसायटी के डायरेक्टर अशोक सैनी से उनके शालीमार स्थित कार्यालय पर शिष्टाचार भेंट कर मुलाकात की। अध्यक्ष एवं कार्यकारणी सदस्यों ने डायरेक्टर अशोक सैनी को साफा पहनाकर एवं गुलदस्ता भेंट कर उनका स्वागत सम्मान किया। इस दौरान अध्यक्ष रमेश गंडाला ने सोसायटी की मूलभूत सुविधाओं एवं सोसायटी की समस्याओं के निस्तारण को लेकर कई बिंदुओं पर चर्चा भी की। अपनाघर शालीमार सोसायटी के डायरेक्टर अशोक सैनी ने ऑफिसर एनक्लेव-द्धद्ध 14 बीघा को निखारने के लिए अपना पूरा समर्थन और सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर अपनाघर शालीमार ऑफिसर एनक्लेव-द्धद्ध के संरक्षक जीतू ठाकुर, अध्यक्ष रमेश गंडाला, उपाध्यक्ष शिंभू सिंह राठौड़, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र अग्रवाल, सचिव मनोज सैनी, सहसचिव मोहन लाल गुप्ता, प्रवक्ता जितेंद्र सेतिया, रामेश्वर दयाल आदि सदस्य मौजूद रहे।

जॉब लगवाने के नाम पर 2.5 लाख की ठगी, कांग्रेस नेता पर धोखाधड़ी का केस दर्ज

जोधपुर(निसं.)। जोधपुर में नौकरी दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी का गंभीर मामला सामने आया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रदेश महामंत्री महेंद्र सिंह भाटी पर पांच युवकों से 2.5 लाख रुपए हड़पने और उनके मूल दस्तावेज दबाने का आरोप लगा है। पुलिस ने युवक की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित भोमाराम मेघवाल, निवासी भालू राजवा ने बताया कि वह लंबे समय से मानव अधिकार न्याय सुरक्षा परिषद से जुड़ा हुआ है। उसे एजाज खान नाम के व्यक्ति ने अच्छी प्राइवेट कंपनी में नौकरी लगवाने का भरोसा दिलाया और महेंद्र सिंह भाटी से मिलवाया। महेंद्र सिंह ने प्रति व्यक्ति ?50,000 की मांग की।

केंद्रीय मंत्री ने भिवाड़ी में CETP और STP प्लांट का किया औचक निरीक्षण, जिला प्रशासन को जल्द से जल्द समस्या दूर करने के दिए निर्देश

भिवाड़ी जलभराव की समस्या का जल्द होगा निदान

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)।। केंद्रीय पर्यावरण, वन एंव जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने रविवार को भिवाड़ी में दूषित जलभराव और साफ-सफाई व्यवस्था को लेकर जिला प्रशासन के साथ औचक निरीक्षण किया।
इस दौरान केंद्रीय मंत्री यादव ने CETP प्लांट, STP प्लांट, तथा बाईपास टी-पॉइंट पहुंचकर वहां की स्थिति का जायजा लिया। भूपेंद्र यादव ने कहा कि दूषित जलभराव भिवाड़ी की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। उन्होंने बताया कि पिछले एक वर्ष से प्रशासन के साथ मिलकर इस समस्या को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ प्रयास अब रंग ला रहे हैं, जिससे काफी हद तक समाधान भी हुआ है। उन्होंने कहा कि इस समस्या को पूरी तरह जड़ से समाप्त करने में करीब एक वर्ष और लग सकता है, उसके बाद भिवाड़ी एक साफ और स्वच्छ शहर के रूप में सामने आएगा। भूपेंद्र यादव ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि तिजारा में आयोजित सभा के दौरान मुख्यमंत्री ने भिवाड़ी को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए सभी संसाधनों की कोई कमी नहीं रहने देने का आश्वासन दिया। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भिवाड़ी देश के नक्शे पर एक उभरता हुआ औद्योगिक केंद्र है, और दिल्ली के निकट होने के कारण यह सबसे बड़ा इंडस्ट्रियल एरिया बनकर उभर रहा है। उन्होंने अपील की कि भिवाड़ी के सभी गांव और स्थानीय निवासी इसे स्वच्छ बनाने में सहयोग करें। इस दौरान केंद्रीय मंत्री यादव ने ग्वालदा गांव में प्रस्तावित ट्रीटमेंट प्लांट हेतु भूमि का निरीक्षण किया और कहरानी गांव में प्रस्तावित चिड़ियाघर के लिए आवंटित भूमि का भी अवलोकन किया। इस दौरान जिला कलेक्टर किशोर कुमार, पुलिस अधीक्षक ज्येष्ठा मैत्रेयी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी अतुल प्रकाश सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। रविवार को अंतरराष्ट्रीय वैश्य समाज के तत्वावधान में ग्राम ढढ़ीकर स्थित होटल ताज परिसर में एक भव्य पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा रहे। इस अवसर पर समाज के जिलाध्यक्ष मनोज कुमार चाचान एवं अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में लगभग 500 पौधे रोपित किए गए। मंत्री संजय शर्मा ने कहा कि "पर्यावरण संरक्षण हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। हर पौधा आने वाली पीढ़ी के लिए एक जीवनदायिनी विरासत है समाज के अध्यक्ष मनोज कुमार चाचान ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा करना केवल सरकार या संस्थाओं का काम नहीं बल्कि हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है। इस पौधरोपण कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रमोद विजय, हरिशंकर खण्डेलवाल, राकेश खण्डेलवाल, प्रदीप जैन, देवकीनंदन गुप्ता, प्रहलाद अग्रवाल, राजेश गुप्ता, अशवनी गुप्ता, गोपाल विजय, मोहित बटवाड़ा, रजनीकांत खण्डेलवाल, भरत राम माहेश्वरी, रामवतार विजय, पुष्पेन्द्र जैन, ब्रजेश सर्राफ, विशाल विजय, सीमा विजय, मनोज जैन, किशन बटवाड़ा, महेंद्र गोयल, नरेश गोयल, सुरेश भुख्मारिया, सुभाष खण्डेलवाल, उमेश खण्डेलवाल, धर्मेन्द्र गुप्ता, कपिल जैन, अनिल बंसल, सत्यनारायण अग्रवाल, संजय डाटा, शशांक झालानी सहित समाज के पदाधिकारी एवम ग्रामीण उपस्थित रहे।

जिला कलक्टर ने किया सीएचसी एंव पशु चिकित्सालय ईशरोदा का निरीक्षण

जिला कलेक्टर ने दिए मरीज को बेहतर सुविधा के निर्देश

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने रविवार को सीएचसी ईशरोदा एंव पशु चिकित्सालय ईशरोदा का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने अस्पताल में उपस्थित मरीजों से वार्ता कर हॉस्पिटल की व्यवस्थाओं एवं डॉक्टर के बारे में फीडबैक लिया। इसके साथ-साथ उन्होंने भर्ती मरीजों से बातचीत कर उनको दी जाने वाली सुविधा का अवलोकन किया। उन्होंने अस्पताल के उपकरणों का निरीक्षण भी किया। उन्होंने अस्पताल में काम कर रहे कार्मिकों से उनके कार्य की जानकारी लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए तथा साफ-सफाई का भी जायजा लिया। उन्होंने कहा कि अस्पताल आने वाले मरीज एवं उनके परिजनों से सौहार्दपूर्ण व्यवहार करें। उन्होंने भर्ती मरीजों को भी प्रावधान के अनुरूप सभी सुविधा उपलब्ध करवाने को कहा। उन्होंने सरकार द्वारा प्रदत्त सभी सुविधाओं से मरीजों को लाभ पहुंचाने का निर्देश भी दिया। जिला कलेक्टर ने ग्राम पंचायत ईशरोदा स्थित पशु चिकित्सालय का निरीक्षण भी किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पशुओं के टीकाकरण कार्यक्रम की प्रगति की जानकारी ली तथा विभागीय अधिकारियों से नियमित टीकाकरण, दवाइयों की उपलब्धता और स्टाफ की उपस्थिति जैसी व्यवस्थाओं की समीक्षा की। कलेक्टर ने मौके पर मौजूद चिकित्सा कर्मियों से पशुपालकों को समय पर सेवाएं देने के निर्देश दिए और रजिस्टरों का अवलोकन कर आवश्यक सुधार संबंधी सुझाव भी दिए। निरीक्षण के उपरांत उन्होंने 'हरियालो राजस्थान' अभियान के अंतर्गत अस्पताल परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

कलेक्टर कुमार ने आम के पौधे का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संतुलन और स्वच्छ वातावरण हेतु वृक्षारोपण एक आवश्यक कदम है, और इस अभियान को जन-आंदोलन का रूप देने की आवश्यकता है। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी संजीव कुमार वर्मा, पशुपालन विभाग के अधिकारी, ग्राम पंचायत प्रतिनिधि व स्थानीय ग्रामीण भी उपस्थित रहे।

शिवानी सिंह होगी कोटपूतली-बहरोड़ जिले की प्रथम जिला एवं सत्र न्यायाधीष

राजस्थान हाईकोर्ट ने किया स्थानान्तरण

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) वर्ष 2013 बैच की न्यायिक अधिकारी शिवानी सिंह कोटपूतली-बहरोड़ जिले की प्रथम जिला एवं सत्र न्यायाधीया होगी। उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार ने इसी बजट सत्र में नवगठित जिला कोटपूतली-बहरोड़ में जिला एवं सत्र न्यायालय एवं इसके समकक्ष न्यायालयों को खोले जाने की घोषणा की थी। जिसके बाद राज्य सरकार की बजट घोषणा अनुरूप राजस्थान हाईकोर्ट ने नवगठित जिले के मुख्यालय कोटपूतली में डीजे कोर्ट का गठन कर जिला एवं सत्र न्यायालय खोला था। साथ ही कार्यवाहक डीजे के रूप में एडीजे प्रथम डॉ. राजेया कुमार को जिम्मेदारी सौंपी थी। अब राजस्थान हाईकोर्ट ने शिवानी सिंह को यहां का जिला एवं सत्र न्यायाधीश बनाया है। यह तीसरी बार होगा जब नवगठित जिला कोटपूतली-बहरोड़ में जिला स्तरीय सबसे महत्वपूर्ण पद महिला अधिकारी को सौंपा गया है। प्रथम कलक्टर के रूप में यहां शुभम चौधरी को दायित्व सौंपा गया था। साथ ही प्रथम एसपी के रूप में भी रंजिता शर्मा को जिम्मेदारी दी गई थी। अब तीसरी बार महिला अधिकारी के हाथों ही जिले की न्यायिक व्यवस्थाओं की कमान होगी। गठन के बाद से ही कोटपूतली-बहरोड़ जिला महिला नेतृत्व के हाथों रहा है। यहां कलक्टर पद पर शुभम चौधरी के बाद कल्पना अग्रवाल व प्रियंका गोस्वामी की तैनाती की गई है। जबकि पुलिस अधीक्षक के पद पर रंजिता शर्मा के बाद वंदिता राणा व ज्येष्ठा मैत्रेयी को लगाया गया था। हालांकि कानून व्यवस्था को लेकर आ रही चुनौती एवं सीमावर्ती जिला होने के कारण ज्येष्ठा मैत्रेयी का एक ही दिन में स्थानान्तरण कर तेज तर्रार व बोल्ड पुलिस अधिकारी माने जाने वाले राजन दुष्यंत को जिले का पुलिस कप्तान बनाया गया था। कोटपूतली में नियमित डीजे लगाये जाने पर प्रतिक्रिया देते हुये जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष एड. उदयसिंह तंवर ने कहा कि इससे जिला एवं सत्र न्यायालय की व्यवस्थायें जल्द से जल्द सुचारू हो सकेगी। साथ ही न्यायिक कार्य सुगम व सुलभ हो सकेगें। राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा षिवानी सिंह को जल्द से जल्द कार्यभार ग्रहण करने के लिये निर्देषित भी किया गया है।

डॉ. अम्बेडकर विचार मंच (समिति) की बैठक का आयोजन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.)। ग्राम रामसिंहपुरा स्थित अम्बेडकर छात्रावास में रविवार को डॉ. अम्बेडकर विचार मंच (समिति) की बैठक का आयोजन जिलाध्यक्ष पूरण सिंह की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में पूर्व मीटिंग में लिए गए प्रस्तावों की समीक्षा की गई। प्रथम प्रस्ताव पूर्व निलंबित अध्यक्ष द्वारा चार्ज नहीं दिए जाने की सूचना प्रदेशाध्यक्ष को भिजवा दी गई। दूसरा प्रस्ताव नगर परिषद स्थित बाबा साहब डॉ. बी आर अम्बेडकर की प्रतिमा के कैमरे ठीक करवा दिए गये। साथ ही वहां सफाई की व्यवस्था भी की जा चुकी है। तीसरा प्रस्ताव राजकीय एलबीएस पीजी महाविद्यालय परिसर में बाबा साहब की प्रतिमा लगवाने हेतु मेघवाल विकास समिति व मंच समिति के संयुक्त तत्वाधान में उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा से मिलकर ज्ञापन सौंपने। उप मुख्यमंत्री ने महाविद्यालय परिसर में बाबा साहब की प्रतिमा लगवाने का आष्वासन दिया। छात्रावास अधीक्षक की जिम्मेदारी मंच समिति उपाध्यक्ष राजेन्द्र को दी गई। डॉ. अम्बेडकर छात्रावास के जीना नं. 02 का निर्माण करवाने, छात्रावास में रह रहे छात्रों की शिकायतों का निवारण जल्द से जल्द करने व भविष्य में मंच समिति की मीटिंग में व्यवधान उत्पन्न करने वाले लोगों पर कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया। इस दौरान अध्यक्ष जगदीश मेघवाल, संरक्षक आर एस झांझरिया, रतिराम जीलोवा, छोटूराम सामरिया, मेघवाल विकास समिति अध्यक्ष मदन लाल वर्मा, बदलुराम, राजेश बायला, कुलदीप बायला, एड. सतीश हांडिया, राजेन्द्र भरत सिंह, बंशीधर लूनीवाल, दुलीचंद आर्य, उदमीराम नैनावत, रामनिवास खारड़िया समेत अन्य मौजूद रहे।

राजस्थान में नई साइबर ठगी तकनीक का खुलासाः कॉल फॉरवर्डिंग के जरिए परिचितों से ऐंठ रहे रुपए

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान में साइबर अपराधी लगातार नई तकनीकों से लोगों को ठग रहे हैं। अब उन्होंने कॉल फॉरवर्डिंग की तकनीक का इस्तेमाल शुरू किया है, जिसके जरिए वे पीड़ित के परिचितों से फोन करके रुपयों की मांग कर रहे हैं। साइबर क्राइम शाखा ने इस नई तकनीक को लेकर एडवाइजरी जारी की है और लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। एसपी (साइबर क्राइम) शांतनु कुमार ने बताया कि अपराधी सोशल मीडिया से लोगों की निजी जानकारी जैसे जन्मदिन, शादी की सालगिरह आदि निकालते हैं। फिर वे किसी पार्सल या डिलीवरी का बहाना बनाकर कॉल करते हैं और एक खास नंबर डायल करवाते हैं, जो आमतौर पर *21* से शुरू होकर किसी नंबर के साथ खत्म होता है। जैसे ही व्यक्ति यह नंबर डायल करता है, उसके मोबाइल की कॉल फॉरवर्डिंग सक्रिय हो जाती है और सभी कॉल और OTP अपराधियों के पास पहुंच जाते हैं। इसके बाद वे सोशल मीडिया या फोन कॉल के जरिए परिचितों से पैसे मांगते हैं।

जयपुर में 18 लाख की स्मैक के साथ तस्कर गिरफ्तार, भाई के साथ मिलकर करता था तस्करी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सांगानेर सदर थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 18 लाख रुपए कीमत की स्मैक के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान कमलेश तंवर (21) निवासी अकलरा भालता, झालावाड़ के रूप में हुई है।डीसीपी क्राइम कुंदन कंवरिया ने बताया कि आरोपी 350 किलोमीटर दूर झालावाड़ से स्मैक लाकर जयपुर में सप्लाई देने आया था। पुलिस ने कॉन्स्टेबल राजेश की सूचना पर घेराबंदी कर उसे सांगानेर सदर क्षेत्र के वाटिका में पकड़ा। तलाशी के दौरान आरोपी के पास से 90 ग्राम स्मैक बरामद की गई, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत लगभग 18 लाख रुपए है। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी अपने सगे भाई रामविलास तंवर से स्मैक लेकर जयपुर लाता था और पवन गुर्जर नामक व्यक्ति को सप्लाई देने आया था। कमलेश ने कबूल किया कि वह मौज-मस्ती और शौक पूरे करने के लिए तस्करी के धंधे में शामिल हुआ। पुलिस अब उससे जुड़े नेटवर्क की जांच कर रही है।

गहलोत का गजेंद्र सिंह पर पलटवारः बोले- माफी कौन मांग रहा, उनकी मां स्वर्ग में शिकायत कर रही होंगी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के मानहानि केस पर पलटवार करते हुए तीखी टिप्पणी की। गहलोत ने कहा कि गजेंद्र सिंह माफी की बात कर रहे हैं, लेकिन "माफी मैं क्यों मांगूं?" मैं आज भी उनकी मां का सम्मान करता हूं, लेकिन वह स्वर्ग में शिकायत कर रही होंगी

कि उनके नाम से पैसे जमा कराकर उन्हें बदनाम किया गया। गहलोत रविवार को जयपुर में कांग्रेस के नए मुख्यालय भवन के निर्माण शुभारंभ कार्यक्रम के बाद मीडिया से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा, "मेरी गजेंद्र सिंह से कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है। मैं उनके पिताजी का भी बहुत सम्मान करता हूं। लेकिन यह बड़ा मुद्दा है, जिसमें खुद वे भागीदार बने।" उन्होंने कहा कि गजेंद्र सिंह शेखावत ने संजीवनी क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसाइटी के संचालकों की तारीफ की, मंच साझा किया और कई मीटिंग्स में भाग लिया। गहलोत ने तंज कसते हुए कहा, "अगर आप निर्दोष हैं, तो कहिए कि मुझसे गलती हो गई, लेकिन वे उल्टा मुझसे माफी की मांग कर रहे हैं।" संजीवनी घोटाले पर बोलते हुए गहलोत ने कहा, "सरकार बदलते ही 2 महीने में नई रिपोर्ट तैयार हो गई। हाईकोर्ट ने एफआईआर रद्द नहीं की है, सिर्फ राहत दी है क्योंकि पुलिस और एसओजी ने कह दिया कि मामला नहीं बनता।" गहलोत ने दोहराया कि यदि सरकार चाहे, तो अब भी केस को आगे बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि वे पहले भी ट्वीट के माध्यम से यह स्पष्ट कर चुके हैं और आज उसी को दोहराया है। पूर्व मुख्यमंत्री के इस बयान से एक बार फिर संजीवनी घोटाले की सियासत गर्मा गई है।

IIT जोधपुर में भर्ती घोटाला उजागर, असिस्टेंट रजिस्ट्रार और सुपरिटेंडेंट पर धोखाधड़ी का मामला दर्ज

जयपुर टाइम्स

जोधपुर(निसं.) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर में भर्ती प्रक्रिया में गंभीर अनियमितताओं का मामला सामने आया है। इस संबंध में कार्यवाहक कुलसचिव अंकुर गुप्ता ने करवड़ थाने में संस्थान के ही तीन कर्मचारियों के खिलाफ धोखाधड़ी और पद के दुरुपयोग का मामला दर्ज कराया है। शिकायत में कहा गया है कि दिसंबर 2019 से अगस्त 2023 के बीच हुई भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता का अभाव रहा, नियमों की खुली अवहेलना की गई और अयोग्य उम्मीदवारों का चयन किया गया जबकि योग्य अभ्यर्थियों को जानबूझकर बाहर कर दिया गया। धांधली के आरोप जिन कर्मचारियों पर लगे हैं, उनमें असिस्टेंट रजिस्ट्रार लक्ष्मण सिंह, प्रशांत भारद्वाज और जूनियर सुपरिटेंडेंट रॉबिन सिंह कांतुरा शामिल हैं। आरोप है कि इन अधिकारियों ने भर्ती प्रक्रिया में जानबूझकर धोखाधड़ी, नियमों का उल्लंघन और निजी लाभ के लिए पदों का दुरुपयोग किया। शिकायत में यह भी कहा गया है कि CVO, FFC और आधिकारिक जांच रिपोर्ट में भर्ती अनियमितताओं की पुष्टि हुई है। ऐसे में इन अधिकारियों की भूमिका की गहन जांच जरूरी है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। संस्थान के भीतर उठे इस घोटाले से IIT जोधपुर की साख पर सवाल खड़े हो गए हैं।

नाम परिवर्तन

मेरे पासपोर्ट में मेरा नाम लालनाथ दर्ज है। अब मैंने मेरा नाम लाल नाथ सिद्ध पुत्र गिरधारी नाथ सिद्ध (LAL NATH SIDDHA S/o GIRDHARI NATH SIDDH) रख लिया है। भविष्य में मुझे लाल नाथ सिद्ध पुत्र गिरधारी नाथ सिद्ध, वार्ड नं.- 18, सांडवा,तहसील बीदासर जिला चूरू (राजस्थान) के नाम से जाना पहचाना जावें।

केन्द्रीय सहकारी बैंक अकृषि ऋण भी देः मंत्री गौत्तम दक, सहकारिता मंत्रालय के स्थापना दिवस पर बोले- 250 करोड़ की रिकवरी से भूमि विकास बैंक पुनर्जीवित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सहकारिता मंत्री गौत्तम दक ने कहा कि राज्य में सहकारिता क्षेत्र को और अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता है। इसके तहत केन्द्रीय सहकारी बैंकों द्वारा अकृषि ऋण वितरित करने और नई शाखाएं खोलने की दिशा में काम किया जा सकता है। उन्होंने यह बात राजस्थान सहकारी शिक्षा एवं प्रबंध संस्थान (राइसेम) में सहकारिता मंत्रालय के चौथे स्थापना दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में कही। मंत्री दक ने कहा कि सहकारी भूमि विकास बैंकों के ऋणी सदस्यों के लिए शुरू की गई एकमुश्त समझौता योजना से अब तक 250 करोड़ रुपए की रिकवरी हो चुकी है। उन्होंने इसके लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस योजना से प्राथमिक सहकारी भूमि विकास बैंकों के पुनर्जीवन को गति मिल रही है। उन्होंने सहकारिता को सशक्त करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई और कहा कि विश्व की सबसे बड़ी विकेन्द्रीकृत अन्न भंडारण योजना के अंतर्गत अधिक से अधिक गोदाम बनाकर उन्हें एनसीसीएफ, नैफेड और एफसीआई जैसी संस्थाओं को किराए पर दिया जा सकता है। मंत्री दक ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार जताते हुए कहा कि 6 जुलाई 2021 को सहकारिता मंत्रालय की स्थापना देश में सहकारी आंदोलन के लिए मील का पत्थर साबित हुई है। उन्होंने बताया कि मंत्रालय के माध्यम से 'सहकार से समृद्धि' योजना के अंतर्गत 61 पहलें राज्य में लागू की जा रही हैं, जिससे सहकारी क्षेत्र निरंतर सशक्त हो रहा है। इस मौके पर उन्होंने 'हरियालो राजस्थान' और 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत पौधारोपण भी किया। समारोह में सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव मंजू राजपाल सहित विभाग के अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। मंजू राजपाल ने बताया कि इस वर्ष राजस्थान सहकारी गोपाल क्रेडिट कार्ड योजना के तहत 2.50 लाख अतिरिक्त पात्र गोपालक परिवारों को लाभ देने का लक्ष्य रखा गया है। इसके साथ ही किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि का भी लाभ दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह अवसर है यह विश्लेषण करने का कि सहकारिता विभाग ने अब तक क्या उपलब्धियां हासिल की और किन क्षेत्रों में अभी और प्रयास किए जाने बाकी हैं।

डॉ. एस.पी. सिंह के आईएएस पदोन्नति पर हुआ सम्मान समारोह,क्षेत्रिय लोगों ने दी शुभकामनाएं

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. एस.पी. सिंह के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में पदोन्नत होने के अवसर पर शनिवार को जमुनापारी, मुरलीपुरा क्षेत्र के लोगों ने एक गरिमामय अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर क्षेत्र के अनेक समाजसेवियों, शिक्षाविदों और वरिष्ठ नागरिकों ने डॉ. सिंह को पुष्प गुच्छ भेंट कर उनके प्रशासनिक योगदान की सराहना की। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि डॉ. एस.पी. सिंह की यह पदोन्नति न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि यह ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और जनसेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने वाले प्रत्येक अधिकारी के लिए प्रेरणा है। वे प्रशासनिक कार्यों में अपनी स्पष्ट सोच, योजनाबद्ध कार्यशैली और जनसरोकारों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। डॉ. सिंह ने 1998 में एचसीएम रीपा, जयपुर से प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशासनिक सेवाओं में पदार्पण किया था। इसके पश्चात उन्होंने मावली, झालोद, सांभर, चाकसू, सरदारशहर, चोमू, डीग, जयपुर जैसे उपखंडों में उपखण्ड अधिकारी के रूप में सराहनीय सेवाएं दीं। ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबरा से मास्टर इन पब्लिक पॉलिसी की डिग्री प्राप्त कर उन्होंने राज्य की योजनाओं को वैश्विक सोच के साथ बेहतर दिशा देने का कार्य किया। इस अभिनंदन समारोह में फूल चंद रोज, डॉ. राम धन सेपट, डॉ. अर्जुन बलौदा, लक्ष्मण कुड़ी, गोपी राम बूरी, सुखदेव रुलानिया, सुभाष देवंदा, लक्ष्मी नारायण देवंदा, लक्ष्मण बोचौलिया, शिवलाल ओला , सीताराम सामरिया, मोहन डागर, गंगा राम भावरिया, महावीर प्रसाद ,ओमवीर पुनिया आदि महानुभाव उपस्थित रहे" उपस्थित जनसमूह ने एकमत से कहा कि ऐसे अधिकारी जब उच्च पदों पर पहुंचते हैं तो जनता का विश्वास प्रशासन पर और भी मजबूत होता है। डॉ. सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उनकी नहीं, बल्कि उस प्रत्येक नागरिक और सहयोगी की जीत है, जिनके सहयोग से उन्होंने हर कार्यक्षेत्र में जनहित को प्राथमिकता दी। उन्होंने विश्वास जताया कि वे आईएएस के रूप में भी उसी समर्पण और पारदर्शिता से कार्य करते रहेंगे।

RCA में बड़ा बदलावः दीनदयाल कुमावत ने संभाला पदभार, बिहाणी के फैसले किए रद्द

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की एडहॉक कमेटी में बड़ा प्रशासनिक बदलाव देखने को मिला है। नए संयोजक दीनदयाल कुमावत ने रविवार को RCA एकेडमी में पदभार ग्रहण किया और तत्काल प्रभाव से पूर्व संयोजक जयदीप बिहाणी द्वारा लिए गए सभी निर्णयों को रद्द कर दिया। दीनदयाल कुमावत ने कहा कि विधायक होने के कारण बिहाणी ने अपनी व्यस्तता के चलते इस्तीफा दिया था, जबकि दूसरी ओर पूर्व संयोजक बिहाणी का कहना है कि उन्हें हटाया गया है। पदभार ग्रहण करने के बाद हुई पहली बैठक में RCA की सभी पुरानी समितियों और सब-कमेटियों को भंग कर दिया गया। साथ ही बिना एडहॉक सदस्यों की सहमति से नियुक्त किए गए लोकपाल और एथिक्स ऑफिसर की नियुक्ति भी रद्द कर दी गई। कुमावत ने स्पष्ट किया कि RCA में अब केवल क्रिकेट पर ही ध्यान रहेगा, किसी प्रकार की राजनीति या विवाद को स्थान नहीं दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि एडहॉक कमेटी के पांच सदस्य मिलकर न केवल चुनाव की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएंगे बल्कि रणजी ट्रॉफी से लेकर अंडर-23, अंडर-19 और अंडर-16 टूर्नामेंट्स का संचालन भी सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने कहा कि सभी लंबित जिला संघों की जानकारी ली जाएगी, जहां कोर्ट में मामले लंबित हैं, उन्हें समझकर आगे की कार्यवाही की जाएगी। इसके बाद RCA चुनाव की प्रक्रिया को भी शुरू किया जाएगा। कार्यक्रम में एडहॉक कमेटी के सदस्यों के साथ कुमावत के परिजन भी मौजूद रहे।

राजस्थान के 24 जिलों में आज बारिश का अलर्ट, श्रीगंगानगर में हादसा–बच्चे की मौत, बूंदी में बड़ा बचाव

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान में सक्रिय मानसून रविवार को कुछ धीमा जरूर पड़ा, लेकिन खतरा अभी भी बरकरार है। *सोमवार को राज्य के 24 जिलों में बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। इनमें से 2 जिलों में ऑरेंज अलर्ट और 22 जिलों में येलो अलर्ट लागू किया गया है। श्रीगंगानगर के श्रीविजयनगर में शनिवार देर रात बारिश के बीच दो मकानों की छत गिरने से 5 साल के बच्चे की मौत हो गई और 5 लोग घायल हो गए। उधर, बूंदी के नमाना क्षेत्र में भारी बहाव के कारण एक कार घोड़ा पछाड़ नदी में जा गिरी, लेकिन पिता-पुत्र समय रहते बाहर निकल आए, जिससे बड़ा हादसा टल गया। मौसम विभाग के अनुसार, पश्चिम बंगाल के ऊपर बना साइक्लोनिक सर्कुलेशन अब उत्तर-पश्चिम भारत की ओर बढ़ रहा है। इसके असर से 8-9 जुलाई से जयपुर, भरतपुर, कोटा संभागों में तेज बारिश शुरू होने की संभावना है। 12 जुलाई तक पूर्वी राजस्थान में भारी वर्षा हो सकती है। रविवार को जयपुर, कोटा, उदयपुर, अजमेर, भरतपुर में मौसम साफ रहा, जिससे तापमान 2 से 5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया। बीसलपुर बांध में 12 सेंटीमीटर पानी की आवक दर्ज की गई, लेकिन चौथे दिन पानी की रफ्तार धीमी रही। बांध का जलस्तर 313.69 आरएल मीटर तक पहुंच गया है।

जयपुर पुलिस पर फायरिंग करने वाला बदमाश गिरफ्तार, अवैध हथियार बरामद

जयपुर(कासं.) जयपुर पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए पुलिस पर फायरिंग से जुड़े एक गैंग के शूटर राजेश स्वामी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से देसी पिस्टल और कारतूस बरामद किए गए हैं। यह बदमाश संदीप राज गैंग का सक्रिय सदस्य है, जो सट्टा, ब्याज वसूली और भूमाफियाओं से रंगदारी वसूलने का काम करता है। डीसीपी (नॉर्थ) राशि डोगरा डूडी ने बताया कि आरोपी राजेश स्वामी (24) निवासी करधनी को भट्टाबस्ती थाना पुलिस ने अमानीशाह दरगाह के पास से देर रात घेराबंदी कर पकड़ा। पुलिस को सूचना मिली थी कि एक युवक किसी बड़ी वारदात की फिराक में घूम रहा है और उसके पास अवैध हथियार हो सकता है। पूछताछ में खुलासा हुआ कि राजेश गैंग के लिए हथियारों की व्यवस्था, शरण देना और पैसों का प्रबंध करता था। गैंग टारगेट तय कर रंगदारी मांगता, और इंकार करने पर धमकी व फायरिंग करता था। गौरतलब है कि 1 जून को संदीप राज गैंग ने रामनगरिया इलाके में पुलिस पर फायरिंग की थी, जिसके बाद गैंगस्टर काली स्कॉर्पियो से फरार हो गया था। जांच में सामने आया कि फायरिंग के बाद संदीप राज ने हथियार राजेश को सौंपे और स्कॉर्पियो गाड़ी को चौमूं में छिपाने में भी वही शामिल था। बाद में उसने गैंगस्टर को फुलेरा रेलवे स्टेशन तक छोड़ा।

हाईकोर्ट सख्तः संविदाकर्मियों को न्यूनतम वेतन नहीं देने पर वित्त और विधि सचिव तलब

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान हाईकोर्ट ने महाधिवक्ता (एजी) और राजकीय अधिवक्ता (जीए) कार्यालय में कार्यरत संविदाकर्मियों को न्यूनतम वेतन नहीं देने पर नाराजगी जताई है। अदालत ने इस गंभीर अवहेलना को देखते हुए वित्त सचिव और विधि सचिव को सोमवार को व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में पेश होने के निर्देश दिए हैं। हाईकोर्ट ने 13 जनवरी 2022 को आदेश दिया था कि इन संविदाकर्मियों को न्यूनतम वेतन दिया जाए। सरकार ने इस आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने 5 दिसंबर 2024 को एसएलपी खारिज कर दी। इसके बावजूद आदेश की पालना नहीं की गई। यह आदेश मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस चंद्रप्रकाश श्रीमाली की खंडपीठ ने राज्य सरकार की अपील व संविदाकर्मियों की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया। संविदाकर्मियों के वकील सुरेश पारीक ने बताया कि ये कर्मचारी पिछले 17 वर्षों से संविदा पर कार्यरत हैं। ना तो उन्हें न्यूनतम वेतन मिल रहा है और ना ही वेतन सीधे उनके खातों में आता है। वे स्थायीत्व की भी मांग कर रहे हैं। इस मामले में करीब 9 महीने पहले मनीष सैनी नामक संविदाकर्मी ने आत्महत्या कर ली थी। उसने सुसाइड नोट में लिखा कि सरकार ने उसका भला नहीं किया। इस घटना के बाद सरकार ने मानदेय तो बढ़ा दिया, पर न्यूनतम वेतन अब भी नहीं दिया जा रहा है।

विकास का क्रम निरन्तर जारी, समान रूप से हर गांव-ढ़ाणी तक पहुंचेगें विकास कार्य- पटेल

विधायक हंसराज पटेल ने ग्राम भालोजी, बसई व नांगड़ीवास में विभिन्न विकास कार्यो का किया उद्घाटन, जिला प्रमुख रमा चौपड़ा रही मौजूद

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) विधायक हंसराज पटेल ने रविवार को क्षेत्र के ग्राम भालोजी, बसई व नांगड़ीवास में विभिन्न विकास कार्यो का बतौर मुख्य अतिथि लोकार्पण किया। इस दौरान विधायक पटेल ने जिला प्रमुख रमा चौपड़ा के साथ ग्राम भालोजी में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के नवनिर्मित भवन का भी उद्घाटन किया। साथ ही वहां उपलब्ध करवाई गई सुविधाओं की जानकारी ली। पटेल ने कहा कि पीएचसी निर्माण से ग्रामीणों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध होगी। राज्य सरकार गांव देहात में जन सुविधाओं को सुलभ बनाने का हरसम्भव प्रयास कर रही है। विकास का क्रम निरन्तर जारी है, सभी जगह समान रूप से विकास कार्य पहुंचेगें। इस दौड़ में कोई भी गांव-ढ़ाणी पीछे नहीं रहेगी। उन्होंने भालोजी में डामर सड़क से श्मषान भूमि व डामर सड़क से राजेन्द्र के मकान की ओर जाने वाली इन्टरलॉक सड़क एवं श्मषान भूमि में टीनषेड़ निर्माण कार्य व इन्टलॉकिंग सड़क समेत पीर बाबा के स्थान पर नवनिर्मित भवन का भी लोकार्पण किया। वहीं पटेल ने ग्राम नांगड़ीवास, बसई में हाथी कॉलोनी से प्रकाष फौजी की ढ़ाणी की ओर जा रही सड़क, नांगड़ीवास जाटान और कसाना की ढ़ाणी की ओर जा रही सड़क व पूर्व सड़क से शिव मंदिर की ओर जा रही सड़क का भी लोकार्पण किया। उक्त सड़कों के निर्माण में 85 लाख रूपयों की लागत आई है। इस दौरान विधायक पटेल व जिला प्रमुख रमा चौपड़ा का ग्रामीणों ने स्वागत किया। सरपंच प्रतिनिधि सत्यवीर मीणा, पूर्व सरपंच नाहर सिंह व सरपंच कृष्ण आर्य ने आभार व्यक्त किया। इस दौरान एसडीएम बृजेष चौधरी, बीसीएमओ डॉ. पूरण चंद गुर्जर, पीएचसी प्रभारी डॉ. रोहित कुमार, भाजपा मंडल अध्यक्ष राजवीर यादव, पंसस एड. दयाराम गुर्जर, पंसस विक्रम सिंह फाईनेंसर, सरपंच जगमाल सिंह यादव, शीषराम सरपंच, जिला पार्षद प्रतिनिधि अमीचंद धानका, एड. कमल कसाना, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कमल सैनी समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण, अतिथिगण व भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहें।

संपादकीय जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
7 जुलाई, 2025

जनता को तंग करने वाले फैसले

पता नहीं यह निकाय किस आधार पर इस नतीजे पर पहुंच गया कि 10 वर्ष पुराने डीजल और 15 वर्ष पुराने पेट्रोल वाहनों के इंजन ऐसे हो जाते हैं कि उनका उत्सर्जन इतना बढ़ जाता है कि वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण बनता है। इस नतीजे पर पहुंचने के पहले अध्ययन एवं विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया ही गया होगा, लेकिन शायद इसकी अनदेखी कर दी गई कि कई वाहन मालिक अपने वाहनों का कम इस्तेमाल करते हैं। अधिकतर उनका कमर्शियल इस्तेमाल भी नहीं करते। इसके चलते उनके वाहनों के इंजन इतने खराब नहीं होते कि उन्हें प्रदूषण फैलाने का दोषी मान लिया जाए। कुछ लोगों के पास तो ऐसे वाहन हैं, जो 10 साल में 50 हजार किमी भी नहीं चले होते। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर केंद्र सरकार अपनी वाहन नीति में फेरबदल करती रही है, पर उससे वायु प्रदूषण से निपटने में सफलता नहीं मिली। उत्तर भारत और विशेष रूप से राजधानी दिल्ली एवं उसके आसपास के इलाकों...

हाल में राजधानी में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के इस आदेश ने दिल्ली एवं एनसीआर के लाखों वाहन मालिकों के लिए परेशानी पैदा कर दी कि उम्र पूरी कर चुके अर्थात 10 वर्ष से पुराने डीजल और 15 वर्ष से पुराने पेट्रोल वाहनों को ईंधन नहीं दिया जाएगा। यह आदेश इसलिए दिया गया, क्योंकि ऐसे वाहनों को चलन से बाहर करने के उसके आदेश पर अमल नहीं किया जा रहा था। ऐसे वाहनों को पेट्रोल-डीजल न देने के फैसले से दिल्ली के कई पेट्रोल पंपों पर अफरातफरी फैल गई। एक-दो दिन के अंदर ही यह एक राजनीतिक मसला बन गया और ऐसी आवाजें भी उठीं कि उम्र पूरी कर चुके वाहनों को एकाएक ईंधन न देने का फैसला सही नहीं है। खुद दिल्ली सरकार को आगे आना पड़ा और सीएक्यूएम से कहना पड़ा कि वह अपना फैसला वापस ले। प्रदूषण रोधी निकाय सीएक्यूएम के पास पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु की गुणवत्ता के प्रबंधन का अधिकार है। पता नहीं यह निकाय किस आधार पर इस नतीजे पर पहुंच गया कि 10 वर्ष पुराने डीजल और 15 वर्ष पुराने पेट्रोल वाहनों के इंजन ऐसे हो जाते हैं कि उनका उत्सर्जन इतना बढ़ जाता है कि वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण बनता है। इस नतीजे पर पहुंचने के पहले अध्ययन एवं विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया ही गया होगा, लेकिन शायद इसकी अनदेखी कर दी गई कि कई वाहन मालिक अपने वाहनों का कम इस्तेमाल करते हैं। अधिकतर उनका कमर्शियल इस्तेमाल भी नहीं करते। इसके चलते उनके वाहनों के इंजन इतने खराब नहीं होते कि उन्हें प्रदूषण फैलाने का दोषी मान लिया जाए। कुछ लोगों के पास तो ऐसे वाहन हैं, जो 10 साल में 50 हजार किमी भी नहीं चले होते। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर केंद्र सरकार अपनी वाहन नीति में फेरबदल करती रही है, पर उससे वायु प्रदूषण से निपटने में सफलता नहीं मिली। उत्तर भारत और विशेष रूप से राजधानी दिल्ली एवं उसके आसपास के इलाकों में वायु प्रदूषण एक विकट समस्या बना हुआ है। आबादी जैसे-जैसे बढ़ रही है, शहरों में वाहन भी बढ़ रहे हैं और उनके उत्सर्जन से होने वाला प्रदूषण भी। उत्तर भारत की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि सर्दियां प्रारंभ होते ही हवा में धूल और धुएं का मिश्रण स्माग बना देता है। इसके चलते वायु प्रदूषण कई गुना बढ़ जाता है। अब साफ हवा हिमालय से लगे कुछ क्षेत्रों और सुदूर दक्षिण भारत के चंद इलाकों को छोड़कर पूरे देश में खराब ही रहती है। सर्दियों में हवा और खराब एवं कई बार तो जानलेवा हो जाती है। वायु प्रदूषण के मूल कारणों में सड़कों एवं निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल, वाहनों एवं कल-कारखानों का उत्सर्जन है। इसके अलावा कोयला, लकड़ियां, उपले आदि जलाने से निकलने वाला धुआं भी वायु प्रदूषण का कारण बनता है। सर्दियों के प्रारंभ में पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि में खेतों में फसलों के अवशेष यानी पराली जलाने का चलन भी वायु प्रदूषण बढ़ाने का काम करता है। दिल्ली सहित उत्तर भारत के सभी प्रमुख शहरों में ट्रैफिक जाम की स्थिति देखने को मिलती है। जब वाहन धीमी गति से चलते हैं तो वाहनों का उत्सर्जन कई गुना बढ़ जाता है। ट्रैफिक जाम से बचने के लिए जैसी सड़कें और अन्य आधारभूत ढांचा होना चाहिए, उसका अभाव दिखता है। यह अभाव धीरे-धीरे सारे देश भर में दिखने लगा है। हमारे शहर ट्रैफिक जाम, धूल, धुएं के लिए जाने जाते हैं। जहां सड़कों के किनारे फुटपाथ होते हैं, उनका उपयोग पैदल यात्री छोड़कर अन्य सब करते हैं। कहीं पार्किंग होती है और कहीं छोटी-मोटी दुकान लगी होती हैं। चूंकि अतिक्रमण से ग्रस्त फुटपाथों पर पैदल यात्री नहीं चल पाते, इसलिए वे मजबूरी में सड़कों पर चलते हैं। इससे सड़कों पर वाहनों का चलना और धीमा हो जाता है। इसका नतीजा जाम और वाहनों का उत्सर्जन होता है। इस स्थिति से सब अवगत हैं, लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिचय देने से इन्कार किया जा रहा है। वाहनों के खराब इंजन के चलते उनसे निकलने वाले उत्सर्जन को मापने के जो तौर-तरीके प्रचलित हैं और जिसके तहत पेट्रोल पंपों से वाहन चालक सर्टिफिकेट लेते हैं, वे फेल हो चुके हैं। एक तो लोग ऐसे सर्टिफिकेट लेने की परवाह नहीं करते और दूसरे, वाहन का इंजन चाहे जैसा हो, मनचाहा सर्टिफिकेट पैसे देकर मिल ही जाता है। होना यह चाहिए कि वाहनों के जो भी सर्विस सेंटर, वर्कशाप या सड़क किनारे के मैकेनिक हैं, उनके पास ऐसे उपकरण हों कि वे वाहनों के उत्सर्जन की भी ढंग से जांच-परख कर सकें। यह नियम बनना चाहिए कि ये सब अपने पास आए किसी भी वाहन के उत्सर्जन को हर हाल में नियंत्रित करें। उन्हें वाहन की हर तरह की कमी दूर करने और उसके ठीक हालात में होने का सर्टिफिकेट देने का भी अधिकार होना चाहिए। इस अधिकार की निगरानी वाहन निर्माता कंपनियों और सरकार को संयुक्त रूप से करनी चाहिए। वे आसानी से यह काम कर सकती हैं। वाहन निर्माता कंपनियों के पास मुनाफे के साथ सीएसआर फंड भी होता है।

सम्पादकीय

अदृश्य दीवारें

ग्रामीण समाज में अक्सर ऐसी घटनाएं देखने को मिलती हैं, जिसमें बचपन से लेकर जवानी तक साथ-साथ पले-बढ़े भाइयों तक के बीच में किसी बहुत मामूली-सी बात को लेकर अनबन हो जाती है । छोटी-सी बात कब बड़ी बन जाती है, पता ही नहीं चलता। ऐसे में दोनों के बीच जिस तरह बातचीत बंद हो जाती है, वह वक्त कब दिन, महीनों से साल दर साल में बदलता चला जाता है, समझ ही नहीं आता । स्वाभाविक है ऐसे में दोनों परिवारों के बीच में भी बातचीत बंद हो जाती है और आपस में कोई सामाजिक सहभागिता भी नहीं हो पाती । हालांकि, दोनों दूसरे-तीसरे व्यक्ति के माध्यम और तरीके से एक-दूसरे की खबर लेते रहते हैं । एक भाई का परिवार दूसरे भाई के परिवार के दुख के बारे में सुनकर दुखी होता है और सुख के बारे में सुन कर खुश होता है। बावजूद इसके दोनों परिवार के बीच घुलना-मिलना तो दूर बातचीत तक बंद रहती है । ऐसा नहीं है कि दोनों समझौता नहीं चाहते होंगे, लेकिन दिक्कत यह रहती है कि पहले बातचीत शुरू कौन करे। छोटी- सी बात से शुरू हुई यह कहानी अहम का मामला बन जाता है और प्रेम पर भारी पड़ जाता है । दो दोस्तों, दो रिश्तेदारों, परिजनों के बीच अक्सर इस तरह का मामला देखने को मिलता है । शिकायत रहती है कि उसने मुझे पहले फोन नहीं किया । वह मुझे फोन नहीं करता फिर मैं क्यों करूं? छोटी-छोटी शिकवे-शिकायतों का यह सिलसिला लगातार चलता रहता है। फोन हाथ में है और दोस्त को बस लगाना ही तो है । फिर हम अपने आपको बटन दबाने से रोक क्यों लेते हैं? ऐसा नहीं है कि यह मनोभाव एक ही व्यक्ति के मन में उमड़ती -घुमड़ती रहती होगी। सभी इंसान ही हैं। ये ऐसी भावनाएं हैं जो सबके अंदर में आती- जाती हैं। बस उसका बरसना बाकी रह जाता है। ऐसी घटनाएं नकारात्मक तरीके से व्यक्ति के मन में परत-दर-परत जमती जाती हैं और आखिर में ये किसी पहाड़ से भी बड़े स्वरूप का आकार ले लेती हैं। ये कहीं दिखती नहीं है, लेकिन मन में जरूर खड़ी रहती है और कई बार खुन्नस, रंजिश, प्रतिशोध सहित तमाम बुराइयों को जन्म देती है । कई बार मन के भीतर प्रेम रहते हुए भी लोग इसलिए सख्त व्यवहार करते हैं कि उनका अहंकार उनके वास्तविक भाव पर हावी होता है। वे अपने भीतर बसे या छिपे प्रेम का, भावना का प्रकटीकरण नहीं कर पाते हैं। ऐसे में सवाल यह उठता है कि आखिर ऐसा क्यों होता है ? लोग मन में बसे अहं के अदृश्य दीवार को गिरा क्यों नहीं पाते हैं ? अपनी भावना को मन के भीतर कैद करने से घुटन तो जरूर होती होगी । फिर लोग इससे निजात क्यों नहीं पाना चाहते हैं ? लोग खुद से क्यों लड़ते रहते हैं ? शायद ऐसे लोग यह सोचते होंगे कि बात होगी तो यह कहूंगा, यह शिकायत भी कर दूंगा और प्रेम की बातें भी प्रकट कर दूंगा, लेकिन जब आमने-सामने आ हैं तो वे तमाम बातें जुबान तक नहीं आ पाती हैं। मन के भीतर ही दबी रह जाती हैं। भावना को सही तरीके से और सही समय पर प्रकट नहीं किए जाने के कारण आज के दौर में अवसाद के कई मामले सामने आ रहे हैं। अस्पतालों के अवसाद विभाग में बढ़ती मरीजों की संख्या इस बात की गवाही देती नजर आती है । कई बार ऐसे लोग मिलते हैं, जो बताते हैं कि मेरे किसी परिजन या रिश्तेदार का निधन हो गया... उनसे 'बहुत स्नेह था ... उनसे मैं बहुत कुछ कहना चाहता था... बचपन में उनके कंधे चढ़ कर खेलता था... उनके साथ उनकी थाली में बैठ कर खाना खा लेता था। लेकिन किसी दिन 'हम बड़ा तो हम बड़ा जैसी एक छोटी-सी बात को लेकर हम लोगों में तकरार बढ़ती गई और हम लोग दूर होते गए। अब मैं भी अधेड़ हो गया हूं और उनका तो निधन ही हो गया । काश वे मुझे एक बार मिलते तो दिल की सारी बातों को खोलकर उनके सामने रख देता, लेकिन अब यह संभव नहीं है। जब तक थे, तब तक कहा नहीं, अब कहना चाहता हूं तो वे हैं नहीं। विडंबना यह है कि ऐसे लोग खुद पहल करके समय को थाम नहीं लेते और बाद में बस अफसोस करते रह जाते हैं । भावना को मन में दबाने के बजाय हम उसे समय पर और सही तरीके से बिना अहंकार के किसी के सामने प्रकट करें, क्या यह संभव नहीं है ? अगर ऐसा है तो हमें करना चाहिए, क्योंकि यह अच्छा है। इससे हम मन ही मन लड़ने, घुटने और अवसाद में रहने के बजाय खुली हवा में सांस ले सकेंगे, खुश रह सकेंगे । व्यक्ति अपने मन को खोल कर देखे, सहज-सरल बन कर देखे... विवेक के साथ स्थितियों का आकलन करते हुए भावनाओं को प्रकट करके देखे । निश्चित तौर पर यह सकारात्मकता को बढ़ाएगा और आखिरकार उसके लिए किसी तरह से अच्छा ही साबित होगा । अच्छे या बुरे की ऊहापोह को दूर करेगा । यों भी, किसी से किसी बात पर अनबन हो गई है तो देखने की जरूरत यह है कि क्या वह कोई ऐसी बात थी, जिससे दूसरे की गरिमा और जीवन को स्थायी हानि हुई ! अगर नहीं, तो दुनिया के चलते रहने की दृष्टि से जीवन को भी सहज बनाना चाहिए और बीती बातों को भुला कर नए सिरे से जीवन को ऐसे अहसास देने की कोशिश करनी चाहिए, जिसमें मानवीयता के मूल्य समाहित हों।

विजय गर्ग

क्या प्री-मैच्योर डिलीवरी के वायु प्रदूषण जिम्मेदार है ?

आज भारत विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ ही विकास और तकनीक के क्षेत्र में लगातार प्रगति पथ पर अग्रसर है, यह काबिले-तारीफ है, लेकिन भारत के जनसांख्यिकीय स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2019-21 के एक बड़े खुलासे के मुताबिक देश में 13 प्रतिशत बच्चों का जन्म समयपूर्व हो रहा है, जबकि 17 प्रतिशत बच्चों का जन्म के समय वजन मानक से कम होता है। सर्वे के अनुसार वायु प्रदूषण भी जन्म से जुड़े प्रतिकूल प्रभावों का कारण बन रहा है, यह बहुत ही चिंताजनक बात है। आज की इस दुनिया में न केवल भारत के लिए अपितु संपूर्ण विश्व के लिए पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है। विकसित देशों ने तो पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से अपना हाथ खींच लिया है, लेकिन इसका खामियाजा कहीं न कहीं विकासशील देशों को भुगतना पड़ रहा है। आज विकासशील देश जीवाश्म ईंधन और बायोमास का उपयोग कर रहे हैं और यह कहीं न कहीं हमारे वातावरण, हमारे पर्यावरण, हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के साथ ही मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव छोड़ रहे हैं। मानव स्वास्थ्य की यहां यदि हम बात करें तो हमारे यहां गर्भ में ही बच्चों की सेहत बिगड़ रही है। बच्चे कम वजन के तथा समय से पहले पैदा हो रहे हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि आइआइटी यानी कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, मुंबई स्थित अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान तथा ब्रिटेन और आयरलैंड के संस्थानों के शोधकर्ताओं ने राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 और दूर संवेदी डेटा का अध्ययन करके गर्भावस्था के दौरान वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से प्रसव परिणामों पर प्रभावों का विश्लेषण किया है। इसमें यह पाया गया है कि गर्भावस्था के दौरान पीएम 2.5 (सूक्ष्म कण प्रदूषण) के अधिक संपर्क में रहने से जन्म के समय कम वजन वाले बच्चे पैदा होने की आशंका 40 प्रतिशत तथा समय से पहले प्रसव की आशंका 70 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। इसमें जलवायु परिस्थितियों जैसे वर्षा और तापमान, का प्रतिकूल जन्म परिणामों से अधिक गहरा संबंध पाया गया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वातावरण में मौजूद 2.5 माइक्रोन से भी छोटे व्यास वाले सूक्ष्म कण पदार्थ को पीएम 2.5 कहा जाता है और इन्हें सबसे हानिकारक वायु प्रदूषक माना जाता है। वातावरण में इनकी मौजूदगी के लिए जीवाश्म ईंधन और बायोमास के दहन को प्रमुख कारणों में से एक माना जाता है। रिसर्चर्स के अनुसार ऊपरी गंगा क्षेत्र में पीएम 2.5 प्रदूषकों का स्तर अधिक है, जिसमें उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा जैसे राज्य शामिल हैं।देश के दक्षिणी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में इसका स्तर(पीएम प्रदूषकों का) कम है। स्वास्थ्य पत्रिका 'पीएलओएस ग्लोबल पब्लिक हेल्थ' में प्रकाशित स्टडी(अध्ययन) के मुताबिक भारत के उत्तरी जिलों में रहने वाले बच्चे वातावरणीय वायु प्रदूषण के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। स्टडी के अनुसार समय से पहले जन्म के अधिक मामले उत्तरी राज्यों जैसे हिमाचल प्रदेश (39 प्रतिशत), उत्तराखंड (27 प्रतिशत), राजस्थान (18 प्रतिशत) और दिल्ली (17 प्रतिशत) में आए, जबकि मिजोरम, मणिपुर और त्रिपुरा(पूर्वोत्तर भारत) में समय पूर्व बच्चों के जन्म के सबसे कम मामले सामने आए हैं। वहीं दूसरी ओर पंजाब में जन्म के समय मानक से कम वजनी बच्चें पैदा होने की दर सबसे अधिक 22 प्रतिशत पाई गई। इसके बाद दिल्ली, दादरा और नगर हवेली, मध्य प्रदेश, हरियाणा और उत्तर प्रदेश का स्थान आता है। हालांकि, जैसा कि ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि पूर्वोत्तर भारत के राज्यों का प्रदर्शन कहीं बेहतर है। पाठकों को बताता चलूं कि यह स्टडी राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण और कंप्यूटर आधारित भौगोलिक आकलन से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग कर की गई है।इतना ही नहीं, गर्भ में वायु प्रदूषण के संपर्क और जन्म परिणामों के बीच संबंध को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विश्लेषण और स्थानिक मॉडलों का उपयोग भी इसमें किया गया है। वास्तव में यह बहुत ही चिंताजनक है कि पीएम 2.5 के स्तर में प्रत्येक 10 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की वृद्धि से कम वजन वाले बच्चों के जन्म पैदा होने की आशंका पांच प्रतिशत और समय से पहले जन्म की आशंका 12 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि जहां वायु प्रदूषण की अधिकता है, वहां बच्चों की समयपूर्व जन्म की दर बढ़ रही है, तथा जहां पर प्रदूषण कम है, वहां स्थिति बेहतर है। रिसर्च से पता चलता है कि वायु प्रदूषण जन्म से पूर्व और जन्म के उपरांत जटिलताओं का कारण बन रहा है। शायद यही कारण है कि पिछले कुछ सालों से महिलाओं में स्वाभाविक प्रसव बहुत कम होता है तथा महिलाओं में प्रसव के दौरान आने वाली कठिनाइयों से बचने के लिए सिजेरियन ऑप्रेशन कर दिए जाते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का असर न केवल भारत पर अपितु संपूर्ण विश्व पर पड़ रहा है। अत्याधिक गर्मी, असीमित वर्षा(अतिवृष्टि) भी बच्चों की सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। आज हमारे देश में विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में वायु प्रदूषण कहीं अधिक है। इसलिए नवजातों की सेहत पर बड़ा खतरा मंडरा है। स्पष्ट है कि यह समस्या केवल चिकित्सा से ही हल नहीं होगी। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को खत्म करके ही हम बच्चों के सामान्य जन्म की उम्मीद कर सकते हैं।इस क्रम में शोधकर्ताओं ने देश में विशेष रूप से उत्तरी राज्यों में राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम को तेज करने की मांग की है। गौरतलब है कि 2019 में शुरू किया गया यह कार्यक्रम भारत में वायु गुणवत्ता को सुधारने के लिए पीएम प्रदूषकों के स्तरों को नियंत्रित करने पर केंद्रित है। अंत में, यही कहूंगा कि आज ग्लोबल वार्मिंग के साथ ही जलवायु परिवर्तन पर हमें समय रहते ध्यान देना होगा और विभिन्न मानवीय गतिविधियों (अंधाधुंध विकास-यथा औधोगिकीकरण, शहरीकरण) को संतुलित तरीके से आगे बढ़ाना होगा। पर्यावरण है तभी जीवों का अस्तित्व है, पर्यावरण नहीं तो कुछ भी नहीं है। आज देश में जलवायु अनूकूलन रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित किए जाने की आवश्यकता महत्ती है। हमें धरती पर जल प्रबंधन व इसके संरक्षण पर ध्यान देना होगा। जीवाश्म ईंधन के विकल्प ढूढ़कर आगे बढ़ना होगा।वायु गुणवत्ता नियंत्रण को भी स्वास्थ्य नीति का अहम् हिस्सा बनाना होगा।वायु प्रदूषण कम करने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं, जिनमें व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास और सामूहिक पहल शामिल हैं। मुख्य रूप से, स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग बढ़ाना, और अधिक पेड़ लगाना(वृक्षारोपण करना), पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक जैसे उपाय वायु प्रदूषण को कम करने में मदद कर सकते हैं। हमें औधोगिक उत्सर्जन को कम करना होगा। साथ ही साथ, शहरी नियोजन में सुधार, प्रदूषण नीतियों को पूरी ईमानदारी से लागू करना, तथा प्रदूषण के ख़तरों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर ही प्री-मैच्योर डिलीवरी और कम वजन के नवजात की समस्या से निपटा जा सकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

लाखों गाँवों में सहकारी संस्थाएं,

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड (इफको) उर्वरकों के उत्पादन और विपणन में विश्व में खासा स्थान रखती है। कृभको यानी कृषक भारती सहकारी लिमिटेड किसानों को उर्वरक, बीज और अन्य कृषि इनपुट उपलब्ध करवाती है तो श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ उत्पादन से महिलाओं को सशक्त बनाती है। राजस्थान स्टेट कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड यानी 'एपेक्स बैंक' राजस्थान में सहकारी बैंकिंग क्षेत्र की शीर्ष संस्था है। इन सबका प्राथमिक संबंध गाँवों और ग्रामीणों से है।

पिछले दिनों अंतरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने जो घोषणा की है वो शहरों और महानगरों में रहने वाले लोगों लिए शायद कोई महत्व नहीं रखती हो, पर ग्रामीणों के लिए एक अहम बात है। शाह ने अगले पांच वर्षों में देश के प्रत्येक गांव में सहकारी संस्था स्थापित करने और राष्ट्रीय सहकारी नीति बनाने की भी घोषणा की। पहली नज़र में यह आम तौर पर प्रायः नेताओं-मंत्रियों द्वारा मंचीय घोषणा की तरह लग सकती है, पर ऐसा नहीं है। यह घोषणा इस मायने में भी महत्वपूर्ण है कि यह मोदी सरकार की सहकारिता विभाग मोदी सरकार का महत्वाकांक्षी मंत्रालय है और इसके मंत्री शाह आम तौर पर ऐसी औपचारिक घोषणाएं नहीं करते हैं। वे जानते हैं कि देश की अधिसंख्य जनसंख्या गाँवों में बसती है और गाँव में रहने वाला व्यक्ति ही जानता है कि गाँव और ग्रामीणों के लिए कोई सहकारी संस्था क्या मायने रखती है। भारत में सहकारी संस्थाएं ब्रिटिश काल से चली रही हैं। मद्रास प्रेसीडेंसी के गवर्नर और और पक्षी-विज्ञानी कर्नल फ्रेडरिक निकोलसन बेट्स की रिपोर्ट के तहत भारत में पहली सहकारी संस्था तमिलनाडु के तिरूर में 30 अगस्त 1904 को स्थापित की गई, जो एशिया की पहली सहकारी संस्था मानी जाती है। तब से भारत के ग्रामीण आर्थिक विकास में सहकारी संस्थाओं ने कृषि,डेयरी,आवास और बैंकिंग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गुजरात की अमूल विश्व में दूध और दुग्ध उत्पादों का सबसे बड़ा सहकारी उत्पादक है। इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड (इफको) उर्वरकों के उत्पादन और विपणन में विश्व में खासा स्थान रखती है। कृभको यानी कृषक भारती सहकारी लिमिटेड किसानों को उर्वरक, बीज और अन्य कृषि इनपुट उपलब्ध करवाती है तो श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ उत्पादन से महिलाओं को सशक्त बनाती है। राजस्थान स्टेट कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड यानी 'एपेक्स बैंक' राजस्थान में सहकारी बैंकिंग क्षेत्र की शीर्ष संस्था है। इन सबका प्राथमिक संबंध गाँवों और ग्रामीणों से है। ग्रामीण विकास मंत्रालय के अनुसार देश में करीब सात लाख गाँव हैं और शाह की मानें तो 2030 तक इनमें से हर गाँव में सहकारी संस्था बन जाएगी। सवाल यह है कि भारत के आधारभूत ढांचे और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अन्य बातों को देखते हुए क्या यह व्यावहारिक रूप से संभव है? दरअसल इस शाही लक्ष्य की प्राप्ति में इतनी चुनौतियां, समस्याएं हैं कि शाह के लिए यह राह आसान नहीं है। मुख्य चुनौतियों को कुछ बिंदुओं में समझा जा सकता है बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी की कमी ग्रामीण क्षेत्रों में खराब कनेक्टिविटी, बिजली और इंटरनेट की कमी के कारण आधुनिक तकनीकों को अपनाना चुनौतीपूर्ण है। सहकारी समितियों को बाजार तक पहुंचने और सप्लाई चैन सिस्टम में तकनीकी पिछड़ापन प्रमुख बाधा है। वित्तीय संसाधन का टोटा सहकारी संस्थाओं को स्थापित करने और संचालित करने के लिए पर्याप्त पूंजी की आवश्यकता होती है। ग्रामीण सहकारी समितियों के पास अक्सर सीमित वित्तीय संसाधन होते हैं। सरकारी फंडिंग पर अत्यधिक निर्भरता और निजी निवेश की कमी बड़ी चुनौती है। प्राइवेट सेक्टर से प्रतिस्पर्धा सहकारी समितियां अक्सर बड़े व्यवसायों और निजी क्षेत्र के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ रहती हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां बाजार तक पहुंच सीमित है। बुनियादी ढांचे की कमी, जैसे गोदामों और परिवहन सुविधाओं का अभाव, उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने में मुख्य बाधा है। सीमित दायरा और एकल उद्देश्य कई सहकारी समितियां केवल एक या दो गांवों तक सीमित हैं और एकल उद्देश्य (जैसे केवल ऋण प्रदान करना) पर काम करती हैं, जिसके कारण उनकी संसाधन क्षमता और प्रभाव सीमित रहता है। केंद्र और राज्य की नीतियों का संघर्ष सहकारी समितियां राज्य सूची का विषय हैं, जिसके कारण केंद्र और राज्य सरकारों के बीच समन्वय की कमी एक बड़ी बाधा है। नई नीतियों और कानूनों, जैसे मल्टी-स्टेट कोऑपरेटिव सोसाइटीज अधिनियम 2023 को लागू करने में भी कई जटिलताएं हैं। राजनीतिकरण मुख्य बाधा सहकारी संस्थाओं से जुड़े पदाधिकारी प्रायः किसी न किसी राजनीतिक दल से जुड़े ही होते हैं। अक्सर राजनेताओं ने समुदाय के कल्याण की कीमत पर अपने राजनीतिक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए सहकारी समितियों का दुरुपयोग भी किया है। सहकारी समितियों में पारदर्शिता, जवाबदेही और लोकतांत्रिक निर्णय लेने की प्रक्रिया का अभाव है। राजनीतिक हस्तक्षेप और नौकरशाही नियंत्रण समितियों की स्वायत्तता को कमजोर करते हैं। इन चुनौतियों को देखते कहा जा सकता है कि यह लक्ष्य एक हिमालयन टास्क है। इसके सियासी ख़तरे भी बहुत हैं। इससे मोदी-शाह की साख के साथ भाजपा का भविष्य भी जुड़ा है। इसकी सियासी गणित इस बात से समझी जा सकती है कि 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को जिस मुख्य कारण ने पूर्ण बहुमत से रोक दिया वो था ग्रामीण मतों में गिरावट। ग्रामीण इलाकों से भाजपा को 35 प्रतिशत वोट मिले, जो 2019 के 39.5 से 4.5% कम थे। गठबंधन की दृष्टि से देखें तो ग्रामीण क्षेत्रों में एनडीए को प्रति 100 मतदाताओं में से 43 वोट मिले, जबकि इंडिया गठबंधन को 42 वोट मिले। फ़ासला भले ही एक फीसदी का हो लेकिन लाखों समितियों के गठन में कोई भी चूक असंतोष उपजाने में पर्याप्त है और कोई भी उलटफेर बड़ी चुनौती बन सकता है।

हरीश शिवनानी

अजय देवगन और मेरे बीच फिल्मों को लेकर कभी झगड़ा नहीं हुआ

बॉलीवुड एक्ट्रेस काजोल ने अपने पति अजय देवगन के साथ काम करने के अनुभव के बारे में आईएएनएस से बात की। उन्होंने कहा कि जब भी वे फिल्मों को लेकर साथ काम करते हैं, तो उनके बीच कभी कोई लड़ाई या झगड़ा नहीं होता। इंटरव्यू में काजोल ने बताया कि दोनों के बीच एक-दूसरे के लिए बहुत इज्जत और समझदारी है, चाहे वो काम से जुड़ी बात हो या घर की। वह अजय के वित्तीय फैसलों में दखल नहीं देतीं, क्योंकि उन्हें भरोसा है कि अजय के पास इस काम के लिए बेहतर सलाहकार हैं।

काजोल ने कहा, पैसों के मामलों में अजय के पास सलाह देने वाले कई लोग हैं, जो उन्हें बताते हैं कि क्या करना है और क्या नहीं। मैं उस मामले में दखल नहीं देती। जहां तक फिल्म मां का सवाल है, तो हां, हमने इस पर काफी लंबी बातचीत की थी। हमें फिल्म का क्लाइमेक्स भी फिर से शूट करना पड़ा, क्योंकि उसमें वीएफएक्स और एक्शन जैसे कुछ काम बाकी थे। कुल मिलाकर हम दोनों की सोच इस फिल्म को लेकर मिलती-जुलती रही। हमारे बीच कोई बड़ी बहस या झगड़ा नहीं हुआ। काजोल ने अजय देवगन के प्रोड्यूसर बनने के सफर के बारे में बात करते हुए कहा, वह बहुत ही अच्छे प्रोड्यूसर हैं। स्क्रिप्ट से लेकर वीएफएक्स तक, वह हर चीज में खुद शामिल रहते हैं। यहां तक कि फिल्म की मार्केटिंग भी उन्होंने अपनी देखरेख में की। वह ध्यान रखते हैं कि सब कुछ अच्छे से हो और सही तरीके से काम हो। मैं कह सकती हूं कि वह एक बेहतरीन प्रोड्यूसर हैं।

काजोल ने कहा, मैं मानती हूं कि अजय एक ऐसे प्रोड्यूसर हैं, जो साफ सोच रखते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि उनकी कंपनी से जो भी फिल्म निकले, वो अच्छी हो, ऐसी हो जिस पर वह गर्व कर सकें और कह सकें कि यह उनकी फिल्म है। कई बार पैसे बचाने के लिए क्वालिटी से समझौता करना आसान होता है, लेकिन अजय ने कभी ऐसा नहीं किया। एक प्रोड्यूसर के तौर पर यह बहुत बड़ी बात है। इसके लिए मैं उनकी तारीफ करती हूं।

शनाया कपूर के लिए विक्रांत को-स्टार ही नहीं मेंटर भी

शनाया कपूर अपनी अपकमिंग फिल्म आंखों की गुस्ताखियां के प्रमोशन में जुटी हैं। उनके अपोजिट विक्रांत मैसी हैं। इस फिल्म से डेब्यू को तैयार अभिनेत्री ने कहा कि अपने को-स्टार से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। शनाया कपूर ने बातचीत के दौरान विक्रांत मैसी के साथ काम करने के अनुभव को साझा करते हुए बताया कि, विक्रांत का स्वभाव बहुत अच्छा है, वो मदद को तैयार रहते हैं। उनके इस नेचर ने मुझे सेट पर काफी सहज महसूस कराया। वह सेट पर मेरे को-स्टार होने के साथ-साथ मेंटर भी थे, जिसने मुझे एक कलाकार के रूप में आगे बढ़ने में मदद की।

अभिनेत्री ने आगे बताया कि, मुझे लगता है कि पहली चीज जो मैंने उनसे सीखी है वह यह है कि एक इंसान के तौर पर वह बहुत उदार हैं, जो उनके काम में भी दिखता है, और मुझे लगता है कि यह बहुत बड़ी बात है, क्योंकि वह सच में एक समर्पित अभिनेता हैं। एक अभिनेता के तौर पर हम बस अपनी लाइन, किरदार और कॉस्टयूम के बारे में सोचते रहते हैं।

मैंने एक अभिनेता के तौर पर सीखा कि सबसे पहले आपको एक समर्पित अभिनेता बनना पड़ेगा और पूरे सीन के बारे में सोचना पड़ेगा। आप बस अपने बारे में नहीं सोच सकते हैं। लेकिन इससे भी अच्छी जो उनकी खासियत थी, वह यह कि उन्होंने मुझे सेट पर सहज महसूस करवाया। उन्होंने सेट पर कभी मुझे यह महसूस नहीं होने दिया कि मैं नई कलाकार हूं, और यह एक अनुभवी अभिनेता की निशानी है यह अविश्वसनीय है क्योंकि उन्हें मेरे लिए ऐसा करने की जरूरत नहीं थी, लेकिन उन्होंने ऐसा किया।

अभिनेत्री ने याद करते हुए बताया कि कैसे विक्रांत अक्सर सीन पर उनसे इनपुट मांगते थे, जैसे कि, तुम मुझे भी बताओ, तुम्हें कैसा लग रहा है? तुम्हें क्या लगता है? क्या हमें इसे इस तरह से करना चाहिए या उस तरह से? अभिनेत्री ने प्रशंसा की कि एक नए व्यक्ति के लिए, ऐसा माहौल आश्चर्यजनक और आरामदायक दोनों था।

मुझे प्रभावित करती है केके मेनन की शैली

मोस्टअवेटेड जासूसी-थ्रिलर स्पेशल ऑप्स 2, 11 जुलाई से जियो हॉटस्टार पर स्ट्रीम होने वाली है। इस सीरीज में एक्टर ताहिर राज भसीन खलनायक की भूमिका में नजर आएंगे। ताहिर ने अपने को-एक्टर केके मेनन के साथ काम करने के अनुभव को साझा किया और बताया कि उनसे काफी कुछ सीखने को मिला। ताहिर ने केके मेनन के साथ एक्टिंग को एक बड़ी उपलब्धि और चुनौती बताया। उन्होंने कहा, केके मेनन जैसे दिग्गज एक्टर के सामने काम करना मेरे लिए सम्मान की बात है। मैंने उनके हीरो और विलेन दोनों किरदारों को देखकर बहुत कुछ सीखा है। हिम्मत सिंह के रूप में उनकी एक्टिंग, गंभीरता दर्शकों को बेहद पसंद है। हालांकि, मेरा किरदार ऐसा है, जो कहानी में तनाव को और बढ़ाता है, जिसमें सहजता और चतुराई दोनों का तड़का है। ताहिर ने मेनन से मिली सीख का जिक्र करते हुए कहा, केके सर से मैंने सेट पर और बाहर दोनों जगह बहुत कुछ सीखा। उनकी धैर्यपूर्ण और सादगी भरी शैली मुझे बहुत प्रभावित करती है। जिंदगी के अनुभवों से भरी बातचीत से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। स्पेशल ऑप्स 2 में केके मेनन एक बार फिर अधिकारी हिम्मत सिंह की भूमिका में दिखेंगे। इस बार हिम्मत एक ऐसी जंग लड़ते हैं, जो दिखाई नहीं देती। मेनन ने अपने किरदार के बारे में कहा, हिम्मत सिंह हमेशा बुद्धि, साहस और जज्बे के साथ लड़ता है। इस बार चुनौती और भी जटिल है। यह सीजन न केवल देश की सुरक्षा के मुद्दों को उठाता है, बल्कि हिम्मत के निजी जीवन, एक पिता और देशभक्त की भावनाओं को भी उजागर करता है। शिवम नायर के निर्देशन में तैयार इस सीरीज में ताहिर राज भसीन, केके मेनन के साथ एक्टर प्रकाश राज, विनय पाठक, सयामी खेर, इब्राहिम, गौतमी कपूर, परमीत सेठी और काली प्रसाद मुखर्जी जैसे कलाकार भी अहम किरदारों में हैं। स्पेशल ऑप्स 2 साइबर और राष्ट्रीय सुरक्षा की पृष्ठभूमि में एक रोमांचक कहानी पेश करती है। सीरीज का प्रीमियर 11 जुलाई से जियो हॉटस्टार पर होगा।

दीपिका को मिला हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम सम्मान

दीपिका पादुकोण को 2026 हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम सम्मान के लिए चुना गया है। यह सम्मान पाने वाली वो पहली भारतीय हैं। हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम सम्मान मिलने के बाद दीपिका ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी में इसे लेकर रिएक्शन दिया है। उन्होंने ने अपनी स्टोरी में इसके लिए आभार जताया है। हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम को मैनेज करने वाली आधिकारिक संगठन 'हॉलीवुड चैंबर ऑफ कॉमर्स' की तरफ से 2 जुलाई को इंस्टाग्राम पर यह खबर शेयर की गई है। उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा- 'मोशन पिक्चर्स, टेलीविजन, लाइव थियेटर/लाइव परफॉरमेंस, रेडियो, रिकॉर्डिंग और स्पोर्ट्स एंटरटेनमेंट कैटेगरी में एंटरटेनमेंट प्रोफेशनल के एक नए ग्रुप को हॉलीवुड चैंबर ऑफ कॉमर्स के वॉक ऑफ फेम चयन पैनल द्वारा हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम पर स्टार प्राप्त करने के लिए चुना गया है। हमें 2026 के वॉक ऑफ फेम क्लास में आपका स्वागत करते हुए गर्व हो रहा है!'इसके साथ ही उन्होंने हर कैटेगरी के लिए चुन गए आर्टिस्ट का नाम शेयर किया है। दीपिका को मोशन पिक्चर्स कैटेगरी में सम्मान के लिए चुना गया है। इस लिस्ट में दीपिका के अलावा टिमोथी चालमेट, रेचल मैकएडम्स, डेमी मूर, स्टेनली टुची, रामी मालेक और एमिली ब्लंट जैसे इंटरनेशनल आर्टिस्ट शामिल हैं। हॉलीवुड वॉक ऑफ फेम कैलिफोर्निया का फेमस टूरिस्ट लोकेशन है।

प्रियंका ने 'हेड्स ऑफ स्टेट' के प्रीमियर पर काम को लेकर की बात

प्रियंका चोपड़ा जोनस ने अपनी नई फिल्म हेड्स ऑफ स्टेट के लंदन प्रीमियर में रेड कार्पेट पर शानदार मौजूदगी दर्ज की। उन्होंने बताया कि वह ऐसी भूमिकाएं चुनती हैं, जो हल्की न हों, बल्कि कहानी को आगे बढ़ाएं। एक इंटरव्यू के दौरान. प्रियंका चोपड़ा ने कहा, मैं अपने काम पर गर्व करना चाहती हूं।

इस फिल्म में वह नोएल बिसेट नाम की एक तेज-तर्रार MI6 एजेंट की भूमिका में हैं, जो हमेशा दस कदम आगे सोचती है। उन्होंने बताया कि उन्हें ऐसी महिलाओं के किरदार निभाना पसंद है, जो कहानी का हिस्सा बनें, न कि सिर्फ सजावट हों। इस एक्शन-कॉमेडी फिल्म में उनकी बुद्धिमानी, कॉमेडी और एक्शन का शानदार मिश्रण देखने को मिलता है।

फिल्म और सह-कलाकार

इल्या नैशुल्लर द्वारा निर्देशित इस फिल्म में इदरीस एल्बा और जॉन सीना जैसे बड़े सितारे हैं, जो विश्व नेताओं की भूमिका में हैं, जबकि प्रियंका की किरदार कहानी को जोड़े रखती है। फिल्म में पैडी कॉन्सिडाइन, कार्ला गुगिनो और जैक क्वैड जैसे कलाकार भी हैं। प्रीमियर में प्रियंका के पति निक जोनस के अलावा कई सेलेब्स ने शिरकत की।

प्रियंका की सलाह

प्रियंका ने अपने अनुभव शेयर करते हुए कहा, अभ्यास से ही पूर्णता आती है। असफलता मिले तो हार मत मानो। उन्होंने सलाह दी कि अपने लक्ष्यों पर ध्यान दो और नकारात्मक लोगों की बातों को नजरअंदाज करो। जो लोग आपसे प्यार करते हैं, उन पर ध्यान दो, बाकी लोग मायने नहीं रखते।

रणबीर के साथ 'रामायण' में मुख्य किरदार निभा रहे हैं रवि दुबे

रणबीर कपूर की आगामी फिल्म 'रामायण' आने वाली बॉलीवुड की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है। इस फिल्म का दर्शक बड़ी ही बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। अब 'रामायाण' की पहली झलक कल यानी 3 जुलाई को आने वाली है। इसको लेकर जबरदस्त बज बना हुआ है। उम्मीद है कि इस दिन फिल्म से राम और रावण के लुक सामने आ सकते हैं। भारी भरकम स्टारकास्ट वाली इस फिल्म में रणबीर कपूर राम, साई पल्लवी सीता और यश रावण के किरदार में नजर आएंगे। इसके अलावा सनी देओल हनुमान और रवि दुबे लक्ष्मण का किरदार निभा रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि सुपरस्टार्स से भरी इस फिल्म में लक्ष्मण का किरदार निभाने वाले रवि दुबे कौन हैं? हाल ही में रामायण के सेट से एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें रणबीर कपूर रवि दुबे को गले लगाते दिखे थे। ये वीडियो फिल्म की शूटिंग पूरी होने के बाद का बताया जाता है। आइए जानते हैं लक्ष्मण का किरदार निभाने वाले रवि दुबे के बारे में।

टेलीकॉम इंजीनियरिंग में हासिल की डिग्री

रवि दुबे का जन्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में 23 दिसंबर 1983 को हुआ था। रवि के पिता एक सिविल इंजीनियर हैं। हालांकि, रवि दुबे के जन्म के बाद ही उनका परिवार दिल्ली चला आया था। रवि दुबे ने मुंबई के राजीव गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से टेलीकॉम इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की है। कॉलेज के दिनों में ही शुरू की मॉडलिंग रवि दुबे ने अपने करियर की शुरुआत मॉडलिंग से की। उन्होंने अपने कॉलेज के दौरान ही मॉडलिंग शुरू कर दी थी। इसके बाद वो कई विज्ञापनों में नजर आए। यही नहीं रवि ने एक्टिंग में अपना पहला ब्रेक मिलने से पहले ही अलग-अलग ब्रांड्स के लिए तकरीबन 40 से ज्यादा विज्ञापन कर लिए थे।

टीवी से की करियर की शुरुआत

इसके बाद उन्होंने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत साल 2006 में आए डीडी नेशनल के शो 'स्त्री तेरी कहानी' से की। इस शो को दिलीप कुमार और सायरा बानो ने प्रोड्यूस किया था। इसके बाद रवि 'यहां के हम सिकंदर', 'रणबीर रानो', '12/24 करोल बाग' और 'सास बिना ससुराल' जैसे कई डेली सोप में नजर आए। हालांकि, रवि को टीवी सीरियल्स की दुनिया में सफलता 2014 में आए डेली सोप 'जमाई राजा' से मिली।

कई रियलटी शो में आए नजर और किए होस्ट

कई डेली सोप में काम करने के बाद रवि कई रियलटी शो में भी नजर आए। इनमें 'कॉमेडी सर्कस', 'कहानी कॉमेडी सर्कस की', 'नच बलिये 5', 'फियर फैक्टर खतरों के खिलाड़ी', 'लिप सिंग बैटल' जैसे रियलटी शो शामिल हैं। नच बलिये में रवि सरगुन मेहता के साथ नजर आए थे। जो अब उनकी पत्नी हैं। इसके बाद रवि ने कई रियलटी शोज को होस्ट भी किया। इनमें इंडियाज डांसिंग सुपरस्टार, फैशन का जलवा, सबसे स्मार्ट कौन और सा रे गा मा लिटिल चैंप्स शामिल हैं। सरगुन मेहता से की शादी, बाद में साथ मिलकर खोला खुद का प्रोडक्शन हाउस अगर पर्सनल लाइफ की बात करें तो रवि दुबे ने साल 2013 में अभिनेत्री सरगुन मेहता से शादी कर ली। रवि ने सरगुन को रियलटी शो में ही प्रपोज किया था। 2019 में रवि दुबे ने पत्नी सरगुन के साथ ड्रीमियाता एंटरटेनमेंट के नाम से अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस शुरू किया। जिसके अंतर्गत उन्होंने कई पंजाबी फिल्में, म्यूजिक एल्बम और सिंगल सॉन्ग प्रोड्यूस किए हैं।

रवि दुबे ने फिल्मों में अपनी शुरुआत साल 2011 में आई फिल्म 'यू आर माय जान' से की थी। इस फिल्म में रवि छोटी सी भूमिका में नजर आए थे। इस फिल्म को अभिनेता अरुण गोविल ने डायरेक्ट और प्रोड्यूस किया था। हालांकि, रवि दुबे को पहचान टीवी शो 'जमाई राजा' और रियलटी शोज से ही मिली। इसके अलावा उनके अभिनय की तारीफ 2021 में 'मत्स्य कांड' में काफी हुई थी। इसमें पीयूष मिश्रा और रवि किशन जैसे अभिनातओं के सामने रवि ने अपनी एक्टिंग की छाप छोड़ी थी। इसके अलावा रवि कुछ एक और वेब सीरीज में भी नजर आए हैं। साथ ही 'वे हानिया' जैसे सुपरहिट सिंगल सॉन्ग में भी रवि दुबे दिखाई दिए हैं।

'रामायण' से बदलेगा रवि का करियर !

अब 'रामायण' में लक्ष्मण के किरदार निभाना रवि दुबे के करियर के लिए टर्निंग प्वाइंट हो सकता है। क्योंकि नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में एक से बढ़कर एक दिग्गज सुपरस्टार नजर आने वाले हैं। वहीं इस फिल्म को लेकर जबरदस्त बज क्रिएट है और ये भारतीय सिनेमा की एक बड़ी फिल्म बन सकती है।

लायंस क्लब कुचामन सिटी द्वारा सत्र 2025-26 के प्रथम सप्ताह में अंतरराष्ट्रीय वैश्य समाज के साथ मिलकर एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.) क्लब अध्यक्ष बाबूलाल मानधनिया ने बताया कि रक्त संग्रह का कार्य संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल अस्पताल, जयपुर तथा राजकीय चिकित्सालय, कुचामन सिटी की टीमों द्वारा किया गया। इस अवसर पर क्लब के पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण में सचिव निकित मदान, कोषाध्यक्ष मनीष बंसल, संजय रावका, श्यामसुंदर खोखरिया, नरेन्द्र शर्मा, नरेश जैन, कृष्ण कुमार टेलर और अन्य सदस्य उपस्थित रहे। अंतरराष्ट्रीय वैश्य समाज से परमानंद अग्रवाल, राम काबरा प्रदीप काला, मुरलीधर अग्रवाल, मुरली स्नेही सहित अन्य सदस्यों ने इस आयोजन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया। क्लब अध्यक्ष बाबूलाल मानधनिया तथा कृष्ण कुमार टेलर ने स्वयं भी रक्तदान कर सभी को प्रेरणा दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा।

कुचामन विकास महिला मंच के तत्वाधान में धूमधाम से किया सावन से पहले सावन का स्वागत

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.) कुचामन विकास महिला मंच के तत्वाधान में खूब धूमधाम से किया सावन से पहले सावन का स्वागत जिसमें बरखा जैन की अध्यक्षता में सचिव ज्योति मोर के सहयोग से 50 से अधिक महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। तरह-तरह के गेम्स लहरिया परिधान में पहुंची निर्मला जी गौड़ एवं उनके साथियों ने हरियाली तीज एवं सावन के गीत गाकर के कार्यक्रम का आगाज किया हाउजी प्रतियोगिता में रेखा शर्मा एवं सुनीता कोठारी फुल हाउस के विनर रहे एवं तमन्ना गॉड, मधु मंढावाला ,शकुंतला जी मंघाणिया ,मंजू करवा, ममता शर्मा ,मिंटू गॉड ,सुनीता रावका, श्रीदेवी दीक्षित ,निर्मला सोमानी, वंदना गॉड एवं अन्य कुछ महिलाएं प्रतियोगिताओं की विनर रही। कार्यक्रम की सफलता में आशा झवर, विनीता अग्रवाल, जिम्मी पाटोदी, कृष्णा मंत्री एवं निर्मला खोकरिया का विशेष सहयोग रहा ।लहरिया परिधान में राठी भवन में महिलाओं ने खूब सेल्फी लेकर मौसम का आनंद लिया अंत में लकी ड्रॉ विनर निकाला गया जिसमें मिस सावन का खिताब संतोष सोनी को मिला।

माहेश्वरी समाज के रघुनंदन तेला की पौत्री परिधि माहेश्वरी ने किया नरैना का नाम रोशन

सीए इंटर ऑल इंडिया रैंक में प्राप्त किया 42 वां

स्थान

जयपुर टाइम्स

नरैना(निसं)। किसी भी लक्ष्य को हासिल करने के लिए पक्के इरादों व हौसलों के साथ साथ मेहनत की आवश्यकता होती है। हम बात कर रहे हैं नरैना मूल के निवासी दीपक-मेघा तेला की सुपुत्री परिधि माहेश्वरी की, जिन्होंने अपने पक्के इरादों व हौसलों के साथ मेहनत से चार्टर्ड अकाउंटेंट इंटर में ऑल इंडिया रैंक (एयर) में 42 वां स्थान प्राप्त कर अपने परिवारजनों, माता-पिता व दादा रघुनंदन तेला, माहेश्वरी समाज नरैना सहित दादूधाम नरैना का नाम रोशन किया। इस अवसर पर माहेश्वरी समाज नरैना के लोगों ने अपनी शुभकामनाएं देकर परिधि के उज्जवल भविष्य की कामना की। बता दें लगभग दो दशक पूर्व परिधि के दादा रघुनंदन व पिता दीपक तेला नरैना छोड़कर जयपुर में रहने लग गये लेकिन नरैना से कभी दूर नहीं हुए ओर समय समय पर लगातार नरैना आ रहें हैं।

डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की जन्म जयंती मनाई

जयपुर टाइम्स

शाहाबाद,(निसं.) भारत की एकता एवं अखंडता के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले,प्रखर राष्ट्रवादी विचारक,जनसंघ के संस्थापक एवं हम सभी के प्रेरणास्रोत श्रद्धेय डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की जन्म जयंती पर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। मुख्य अतिथि देवेन्द्र शर्मा(जस्सू) ने डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों पर प्रकाश डाला इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के शाहाबाद मंडल के मंडल अध्यक्ष आनंद गोयल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मनचासिन नगर परिषद वार्ड पार्षद योगेश गौतम,वार्ड पार्षद कौशल नागर,युवा मोर्चा शहर महामंत्री रोहित नायक सरकार रहे!

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा

अतिरिक्त कलेक्टर (प्रशासन) ने डांडूसर एवं रुणिया बड़ाबास में आयोजित शिविरों का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.),अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के नोडल अधिकारी रामावतार कुमावत ने रविवार को डांडूसर एवं रुणिया बड़ाबास में आयोजित शिविरों का निरीक्षण किया। डांडूसर में शिविर के दौरान विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा की। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के कार्मिकों के पास पेंशन सत्यापन के संबंध में ग्राम की संपूर्ण सूची उपलब्ध नहीं होने को गंभीरता से लिया और बचे हुए कैंपों में सूची सहित उपस्थित रहने के निर्देश दिए। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग, शिक्षा विभाग संपादित होने वाले रकार्यों की समीक्षा की। विभागीय कार्यों की प्रगति नहीं पर नाराजगी जताई और आगामी शिविरों में प्रगति के निर्देश दिए। श्री कुमावत ने मेडिकल विभाग की ओर से आयुष्मान योजना के अंतर्गत चिकित्सा बीमा के कार्डों के समय पर वितरण नहीं होने को गंभीरता से लिया एवं चिकित्सा अधिकारी को कार्ड वितरण हेतु निर्देश दिए। पशुपालन विभाग के कार्य की समीक्षा के दौरान विभागीय कार्मिकों द्वारा टीकाकरण एवं दवा वितरण के कार्यों की सराहना की। सभी ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को विभागीय कार्यों को शिविर में गंभीरता से पूर्ण करने के निर्देश दिए। ग्राम पंचायत रुणिया बड़ा बास में शिविर निरीक्षण के दौरानरामावतार कुमावत ने विभिन्न विभागों के कार्यों की समीक्षा करते हुए चिकित्सा विभाग के कार्मिकों को आयुष्मान योजना के कार्ड शीघ्र वितरण के निर्देश दिए। शिविर में चिकित्सा अधिकारी की अनुपस्थिति को गंभीरता से लेते हुए नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। शिविर में ग्रामीण एवं पंचायती राज विभाग, शिक्षा विभाग के कार्यों की समीक्षा के दौरान विभागीय कार्यों की क्रियान्विति नहीं होने को गंभीरता से लेते हुए आगामी शिविर में प्रगति के निर्देश दिए। वन विभाग के अधिकारियों को अधिक से अधिक पौध वितरण तथा भविष्य में शिविर के दौरान ही मौके पर पौधे रखने के निर्देश दिए। शिविर निरीक्षण के दौरान तीन खातों के 25 खातेदारों को आपसी सहमति से हुए बंटवारे का बटवारा नामा सुपुर्द करते हुए राजस्व विभाग के कार्मिकों को बंटवारे संबंधी कार्य में प्रगति लाने एवं सीमा ज्ञान तथा अन्य राजस्व कार्यो में प्रगति के निर्देश दिए। कुमावत ने जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग एवं विद्युत विभाग के अधिकारियों को शिविर के दौरान प्राप्त समस्त प्रार्थना पत्रों के निस्तारण तथा आगामी शिविरों से पूर्व प्री कैंप का आयोजन कर ग्रामीणों की समस्याओं को चिन्हित कर उनके शिविर पूर्ण समाधान के निर्देश दिए।

कुचामन में परंपरागत श्रद्धा और अकीदत के साथ मनाया गया मोहर्रम पर्व

हजारों की भीड़ के साथ निकले 6 ताज़िए

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.) इस्लाम धर्म के आखिरी पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के नवासे हजरत इमाम हुसैन और उनके साथियों की कर्बला में दी गई कुर्बानी की याद में देशभर की तरह रविवार को कुचामन सिटी में भी मुहर्रम का पर्व परंपरागत श्रद्धा और अकीदत के साथ मनाया गया। कुचामन शहर में में 6 ताजियों का भव्य एवं सामूहिक जुलूस निकाला गया, जिसे देखने के लिए हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी। माहौल गमगीन रहा, लेकिन अदब और अनुशासन की मिसाल भी हर कदम पर नजर आई। ताजियों का यह जुलूस शहर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरा और पुरानी धान मंडी में ,सभी जुलूस के साथ मिलने से , जुलूस का रूप विशाल हो गया ढोल-ताशों की मातमी धुनों और या हुसैन की सदाओं के बीच ताजिए सजे हुए और गुलपोशी के साथ आगे बढ़े। सदर बाजार से लेकर घाटी कुआं तक का क्षेत्र जनसैलाब में तब्दील हो गया। इतनी अधिक भीड़ रही कि कई स्थानों पर लोगों को खड़े होने तक की जगह नहीं मिली। महिलाओं और युवतियों ने छतों से ताजियों के दीदार किए। बच्चे भी ताजियों के आगे-पीछे उत्साह से चलते नजर आए। जुलूस के साथ चल रहे अखाड़ों ने मार्ग में कई स्थानों पर पारंपरिक और सिम्बोलिक हथियारों के साथ करतब दिखाए। तलवारबाज़ी और लाठियों से किए गए प्रदर्शन ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान मदरसा इस्लामिया सोसायटी की और से ढोल - ताश पार्टी और अखाड़ा के उस्तादों की दस्तारबंदी भी की गई । ताजिया जुलूस आखिर में छीपा मोहल्ला और खान मोहल्ला से होता हुआ कर्बला पहुंचा, जहां परंपरा अनुसार सभी ताजियों को सैराब किया गया। इससे एक दिन पूर्व शनिवार रात को कत्ल की रात के रूप में सामूहिक जलसा आयोजित हुआ। इस दौरान ताजियों पर सेहरे चढ़ाए गए और मन्नतें मांगी गईं।इसमें सभी ताजिए व अखाड़ों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्रद्धालु पूरी रात इमाम हुसैन की याद में इबादत और मातम करते रहे। इस पूरे आयोजन में सभी समुदायों के लोगों ने सहयोग दिया और प्रशासन की ओर से भी सुरक्षा व यातायात व्यवस्था चुस्त रही। मोहर्रम का यह आयोजन सामाजिक एकता, परंपरा और श्रद्धा का सुंदर उदाहरण बनकर उभरा।

बालावाला डिग्गी रोड़ स्टेशन से वाटिका गांव मे जोड़ने वाली दस किलोमीटर सड़क कि गिट्टी उखड़कर गड्ढों में तब्दील, वाहन चालकों की मुसीबत, ग्रामीणों में भारी आक्रोश

जयपुर टाइम्स

सांगानेर(निसं.) जयपुर -सांगानेर पंचायत समिति के गांव बालावाला डिग्गी रोड स्टेशन से लेकर वाटिका तक एक सड़क निर्माण के छह महीने में टूट गई। सड़क टूटने के कारण आए दिन हादसे होते हैं। बालावाला स्टेशन से डाबला मोड़, श्रीरामपुरा मोड़ ,ग्राम पंचायत लाखना, सीतारामपुरा चौराहा,पहाड़िया सोसायटी चौराहा,जिंद बाबा मंदिर लाखना, साइन इंटरनेशनल स्कूल, दादिया चौराहा,भाठेड चौराहा, रामसिंहपुरा चौराहा, राजकीय सेटेलाइट अस्पताल वाटिका गांव आदि तक जाने वाली डामरीकरण सड़क वर्तमान में क्षत्रिग्रस्त हो गई है। ग्रामीणों ने बताया कि जगह जगह गहरे गड्ढे होने के कारण राहगीर रोजाना हादसे के शिकार हो रहे हैं
बता दें कि उस समय भी सड़क का घटिया निर्माण किया था, जिस कारण सड़क करीब छह महीने बाद ही टूट गई है। दस किलोमीटर तक सड़क कई जगह जगह डामर पूरी तरह उखड़कर गिट्टी बाहर आ गई है। ग्रामीणों का कहना है कि ठेकेदार ने सड़क का निर्माण सही नहीं करने से सड़क पुरी जगह से क्षतिग्रस्त हो गई है, जिस कारण आए दिन वाहन चालक गिरकर चोटिल हो रहे है। इस सड़क पर धूल के गुब्बारे उड़ने से ओर साथ ही गहरे गड्ढों के होने के कारण यहां से आना जाना बहुत ही मुश्किल हो रहा हैं । बालावाला डिग्गी रोड स्टेशन से वाटिका जाने वाली सड़क जिसकी दूरी दस किलोमीटर है जिसका निर्माण बगरू क्षेत्र में आता है इसको भी सार्वजनिक निर्माण विभाग बगरू द्वारा किया गया था। ये सड़क पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं और बारिश होने के बाद तो हालात ओर भी ज्यादा ख़राब हो जाएंगे, ये सड़क बगरू विधानसभाओं में आती है आखिर जिम्मेदारी कौन

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के गुसाईंसर बड़ा के प्रस्तावित दौरे के मद्देनजर जिला कलेक्टर ने की तैयारियों की समीक्षा

जयपुर टाइम्स

बीकानेर (निसं.)मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 8 जुलाई के प्रस्तावित दौरे के मद्देनजर जिला कलक्टर नम्रता वृष्णि ने रविवार को विभिन्न विभागों के अधिकारियों की बैठक ली। सर्किट हाउस में आयोजित बैठक के दौरान जिला कलेक्टर ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा गुसाईंसर में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत आयोजित शिविर के अवलोकन के प्रस्तावित कार्यक्रम के मद्देनजर सभी अधिकारी पूर्ण गंभीरता और जिम्मेदारी से कार्य करें। सभी विभागों के अधिकारी सोमवार को शिविर स्थल का मुआयना कर लें तथा सुनिश्चित करें कि सभी व्यवस्थाएं चाक-चौबंद रहें। उन्होंने मंगलवार को मुख्यमंत्री के प्रस्तावित दौरे के दौरान सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों को तथा शिविर से संबंधित विभागों के लाभार्थियों के साथ मौजूद रहने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गर्मी के मद्देनजर पेयजल और छाया की पर्याप्त व्यवस्था हो। साथ ही मेडिकल टीम, सुरक्षा, बैठक, ब्रांडिंग, डायस सहित प्रत्येक व्यवस्था की समीक्षा करते हुए उन्होंने सोमवार तक इन्हें अंतिम रूप देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी आपसी समन्वय में रखते हुए कार्य करें तथा किसी प्रकार की समस्या आए, तो तत्काल सूचित करें।
इस दौरान पुलिस अधीक्षक कावेंद्र सागर, नगर निगम आयुक्त मयंक मनीष, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सोहनलाल, अतिरिक्त कलेक्टर (प्रशासन) रामावतार कुमावत, अतिरिक्त कलेक्टर (शहर) रमेश देव सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा- सोमवार को विभिन्न स्थानों पर होंगे शिविर

बीकानेर (निसं.)पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के तहत सोमवार को विभिन्न ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित किए जाएंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बीकानेर के राजेरा, मालासर, मेघासर व जलावाली में, लूणकरणसर के चकजोहड़, रामसरा व बालादेसर में, श्रीडूंगरगढ़ के बेनीसर, समन्दसर, लखासर व दुसारणा पण्डरिकजी में, कोलायत के नाइयों की बस्ती, रणधीसर व सुरजडा में, बज्जू के गोकुल व फुलासर छोटा में, पूगल के कुम्हारवाला व गंगाजली में, छत्तरगढ़ के 1 केएम व 1 डीएलएसएम में, खाजूवाला के 25 केवाईडी व 2 केडब्ल्यूएम में, नोखा के भामटसर, कुदसू, सोमलसर, रोड़ा व बिलनियासर ग्राम पंचायतों में शिविर आयोजित किए जाएंगे।

चोरों ने दिनदहाड़े एक सुने मकान को बनाया निशाना

कोटपूतली(निसं.) क्षेत्र में चोरी की वारदातें निरन्तर बढ़ रही है। जिससे चोरों के हौंसले बुलंद दिखाई दे रहे है। ऐसा ही एक मामला कस्बे के बीचों बीच स्थित एक मकान पर शनिवार दोपहर सामने आया। जब दिनदहाड़े मौहल्ला बाछड़ी स्थित प्राचीन श्री शनि मन्दिर के सामने एक गली में सूने मकान को अज्ञात चोरों द्वारा निषाना बनाया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार चोरों ने सूने मकान का ताला तोड़कर उसमें रखी नकदी सहित डेढ़ किलो चांदी के जग व गिलास का सेट, 50 साड़ी, 02 महंगे लहंगे, गिजर, आर ओ, नल की ठुठी आदि सामान पार कर ले गये। उल्लेखनीय है कि उक्त मकान का मालिक कैलाष मोरीजावाला अपने परिवार सहित कई महिनों से व्यापार के सिलसिले से बाहर गया हुआ है। सुने मकान पर चोर शटर व दरवाजे का ताला तोड़कर अन्दर घुसे एवं वारदात को अन्जाम देते हुये बेड में बने बॉक्स व लोहे की आलमारियों को खोलकर सामान बिखेर दिया। चोर घर में रखे सिलेण्डर, एलईडी, मोटर स्टार्टर, इनवर्टर बैटरी, एसी सहित घर में रखी नये नोटों की गड्डी भी ले गये। स्थानीय निवासी एड. अभिषेक मोरीजावाला को घर का दरवाजा खुला होने की जानकारी मिली तो उन्होंने मौके पर पहुंचकर मकान मालिक को इसकी सूचना दी

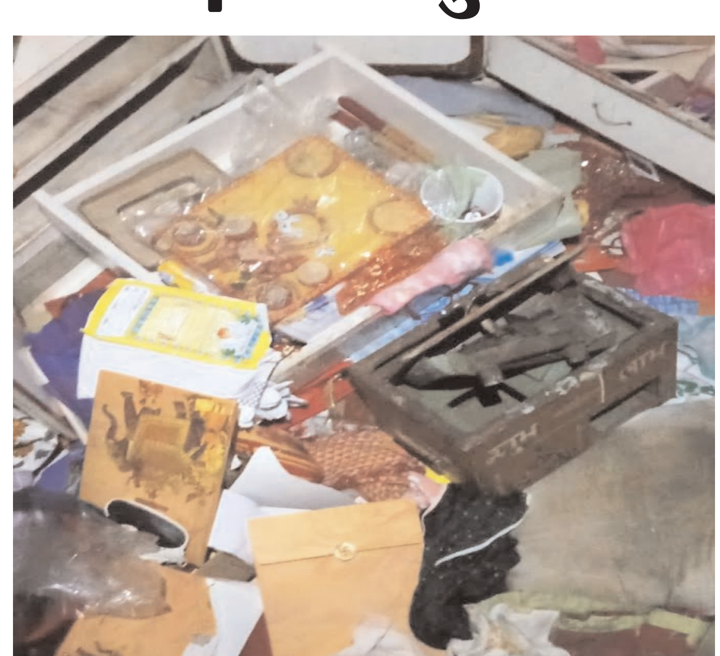

फुकरे भाई ने नाबालिक बहन के साथ किया दुष्कर्म

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.) विगत 18 जून को राजाखेड़ा थाना में एक पिता ने अपनी 13 वर्षीय नाबालिक पुत्री के साथ दुष्कर्म करने का मामला दर्ज कराया उन्होंने मामला दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी पुत्री अपने मौसी के यहां कासिया पूरा थाना राजाखेड़ा गई थी रहने के लिए वहां पर उसके फुफेरे भाई हरिकेश पुत्र धर्मजीत निसाद निवासी पुराना शहर धौलपुर उसका अपहरण कर ले गया और उसके साथ दुष्कर्म किया पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ कर दी और आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पोक्सो एवं अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ कर दी हैं!

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा के तहत शिविरों का आयोजन जारी, यहां होगें अगले शिविर

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राज्य सरकार सभी वर्गों युवा, महिला, किसान और गरीब के उत्थान के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है। अन्त्योदय के लक्ष्य की प्राप्ति के क्रम में वंचितों को वरीयता देते हुए राज्य सरकार 24 जून से 9 जुलाई तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा संचालित किया जा रहा है। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी बताया कि पखवाड़े के तहत आयोजित होने वाले शिविरों में अधिक से अधिक व्यापक गतिविधियां संचालित कर जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ आमजन को पहुंचाया जा रहा है।जिला कलक्टर ने बताया कि 7 जुलाई को उपखण्ड धौलपुर की ग्राम पंचायत दुबाटी के अटल सेवा केन्द्र में, दुल्हारा के अटल सेवा केन्द्र में, सादिकपुर के अटल सेवा केन्द्र में, उपखण्ड बाड़ी की ग्राम पंचायत नीमखेड़ा के अटल सेवा केन्द्र में, जपावली के अटल सेवा केन्द्र में, पिदावली के अटल सेवा केन्द्र में, उपखण्ड बसेड़ी की ग्राम पंचायत हरजूपुरा के अटल सेवा केन्द्र में, उपखण्ड राजाखेड़ा की ग्राम पंचायत खुडिला के अटल सेवा केन्द्र में, उपखण्ड सैपऊ की ग्राम पंचायत नन्दपुरा के अटल सेवा केन्द्र में, जारौली के अटल सेवा केन्द्र में, उपखण्ड सरमथुरा की ग्राम पंचायत झिरी के अटल सेवा केन्द्र में शिविरों का आयोजन किया जाएगा।

गोडवाड़ मेवाडा कलाल विकास समिति की प्रथम बैठक में समाज उत्थान एवं समाजहित में 14 प्रस्ताव किए पारित

समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाजहित में कार्य करने होंगे- हरिशंकर मेवाड़ा

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। निंबेश्वर महादेव मंदिर परिसर स्थित मेवाड़ा समाज धर्मशाला में रविवार को गोडवाड़ मेवाडा कलाल विकास समिति की प्रथम आम बैठक अध्यक्ष एडवोकेट प्रकाशचंद गहलोत की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि कांग्रेस विधानसभा सुमेरपुर प्रत्याशी हरिशंकर मेवाड़ा के सानिध्य में आयोजित हुई। बैठक का शुभारंभ भगवान सहस्त्रबाहु अर्जुन की तस्वीर पर माल्यार्पण कर किया गया। बैठक में समाज हित पर सर्वसम्मति से 14 प्रस्ताव पारित किए गए। अध्यक्ष गहलोत ने बताया कि बैठक में निम्बेश्वर महादेव समाज धर्मशाला के जीर्णोद्धार, फालना छात्रावास में नवीन कमरों का निर्माण, मुंडारा स्थित भामाशाहों द्वारा दी गई भूमि पर वाड़ी निर्माण पर विकास करवाने, शिक्षा को लेकर जरूरत मंद होनहार छात्रों के लिए ऑनलाईन प्रोजेक्ट व कोचिंग की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिए शिक्षा समिति का गठन करने, समाज के बुजूर्गो की सलाहकार समिति का गठन करने, समाज सुधार व एकजुटता सहित कई आवश्यक निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए। इस अवसर पर समिति कार्यकारिणी में महामंत्री पद पर गिरधारीलाल मेवाड़ा मुंडारा, कोषाध्यक्ष हरिश मेवाड़ा सांडेराव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेन्द्र मेवाड़ा सेमड़, उपाध्यक्ष भरत मेवाड़ा पावा को मनोनीत किया गया। बैठक में भामाशाह धनराज लुणावा, डालचंद मदराड़ा का बहुमान किया। छात्रावास संचालक नरेन्द्र गहलोत ने हिसाब-किताब नए अध्यक्ष को पेश किया।

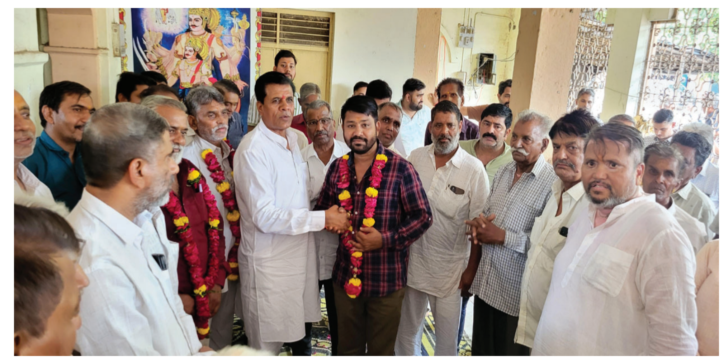

स्वार्थ से ऊपर उठकर समाजहित में कार्य करने होंगे- हरिशंकर मेवाड़ा

बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि हरिशंकर मेवाड़ा ने कहा कि समाज से ऊपर कोई नहीं हैं। हम सभी मिलकर समाज को नई ऊंचाईयां प्रदान करने में सहयोग प्रदान करें। मैं हमेशा समाज की भावनाओं के साथ खड़ा हूं। नि संकोश गहलोत पहले अध्यक्ष हैं जो निष्पक्ष तरीके से धरातल पर समाज को आगे ले जाने का कार्य कर रहें हैं। यह उनके कार्यों से अभी दिखने लग गया हैं। उन्होंने युवाओं को सोच, समझ कर व सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए समाज को अग्रसर रखने की बात कही। हमें समाज की एकजुटता, शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर रखने व सकारात्मक सोच के साथ समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाजहित में कार्य करने होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा गोडवाड़ परगरा पहला ऐसा परगना था जिसने सर्व प्रथम सामूहिक विवाह आयोजित करवाया था और अभी गत दिनों पुरे पाली जिले से समाज के अग्रणी व प्रवासी सैकड़ों समाज बंधुओं की मौजूदगी में लोकतांत्रिक तरीके से पारदर्शिता के साथ करवाए गए समिति के चुनाव में 825 समाजजन ने मतदान कर प्रकाशचंद गहलोत को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना हैं। अब हमारा भी दायित्व बनता हैं कि सर्वसम्मति से चुने गए अध्यक्ष के साथ कंधा से कंधा मिलाते हुए समाज हित को सर्वोपरि रखते हुए सदैव कार्य करना होगा। समाज एकजुट रहेगा तो ही समाजहित के कार्य होंगे। उन्होंने अध्यक्ष से भी आग्रह किया कि गोडवाड़ समाज के अध्यक्ष होने के नाते सहन शक्ति रखकर जनहित के कार्य करने होंगे तभी समाज को मजबूती मिलेगी। सभी समाजजन को साथ लेकर कार्य करना होगा। मंच संचालन प्रकाश कुमार मेवाड़ा मुंडारा ने किया। इस मौके पर धनराज मुंडारा, हजारीमल बिसलपुर,हस्तीमल सुमेरपुर, बाबुलाल चाणौद, सुखदेव कोसेलाव, राजुभाई कोसेलाव, रजनीश दादाई, प्रताप बिसलपुर, संजयपाल सांडेराव, किशोर कुमार सांडेराव, भैरूलाल करदा, आनदं मेवाड़ा देसूरी, शांतिलाल घाणेराव, मोहनलाल मुंडारा, प्रदीप मेवाड़ा बीजापुर सहित देसुरी, सांडेराव, घाणेराव, सादड़ी, नाडोल, सायरा, सेमड़, पावा, सुमेरपुर शिवगंज, फालना, रानी सहित अन्य क्षेत्रों से समाजजन ने भाग लिया।

मातमी माह मुहर्रम पर गमगीन माहौल, कर्बलाओं में ताजियों को किया गया सुपुर्द-ए-खाक

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले में रविवार को मुहर्रम के मातमी अवसर पर मुस्लिम समुदाय द्वारा ताजियों को पूरे सम्मान और परंपरा के साथ कर्बलाओं में सुपुर्द-ए-खाक किया गया। सुबह से ही गम और मातम का माहौल पूरे जिले में देखने को मिला। मुस्लिम समाज के लोग अपने-अपने मोहल्लों और क्षेत्रों में बनाए गए ताजियों को लेकर कर्बलाओं की ओर रवाना होते दिखाई दिए।

ताजियों की विदाई में उमड़ा जनसैलाब

शहर के घंटाघर रोड स्थित प्रमुख कर्बला स्थल पर सुबह से ही श्रद्धालु इकट्ठा होने लगे थे। विभिन्न इलाकों से ताजियों के जुलूस बैंड-बाजों, ढोल और मातमी नौहों के साथ रवाना हुए। लोग 'या हुसैन' की सदाओं के साथ ताजियों को अंतिम विदाई देने पहुंचे। बच्चों, युवाओं, महिलाओं और बुजुर्गों सहित हर आयु वर्ग के लोग इस मातमी आयोजन में सहभागी बने।

परंपरा के अनुसार मनाया गया मुहर्रम

ताजियों की सजावट और उन्हें कर्बला तक ले जाने की प्रक्रिया में लोगों ने गहरी आस्था और श्रद्धा दिखाई। कई स्थानों पर अखाड़ों ने करतब दिखाए और नौहे पढ़े गए। मुस्लिम समुदाय के युवाओं ने अपने पारंपरिक परिधान में ढोल-नगाड़ों के साथ मातम किया।

प्रशासन रहा मुस्तैद

कर्बलाओं में भीड़ को देखते हुए जिला प्रशासन और पुलिस विभाग पूरी तरह सतर्क रहा। गौरव पथ, घंटाघर, शास्त्री नगर, निहालगंज, माधवगंज जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में पुलिस की विशेष तैनाती की गई थी। सिटी कोतवाली, महिला थाना, ट्रैफिक और होमगार्ड की टीमों ने मौके पर ड्यूटी संभाली। सीओ सिटी मुनेश कुमार और थाना अधिकारी निहालगंज सहित अन्य अधिकारी सुबह से ही मोर्चा संभाले रहे और जुलूस के सुरक्षित संचालन को सुनिश्चित किया। ड्रोन कैमरों और सीसीटीवी से निगरानी रखी गई। मेडिकल टीम और फायर ब्रिगेड भी मौके पर मौजूद रहे।

अमन और भाईचारे का संदेश

इस अवसर पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने शांति और सद्भाव का संदेश दिया। कई जगहों पर हिंदू समुदाय के लोगों ने भी ताजियों के मार्ग पर पानी और शरबत की व्यवस्था कर भाईचारे की मिसाल पेश की।

जिले के बीएलओ का एक दिवसीय प्रशिक्षण 7 जुलाई से

__धौलपुर(निसं.)__। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले के समस्त बीएलओ का एक दिवसीय प्रशिक्षण किया जाना है। निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी एसडीएम धौलपुर डॉ. साधना शर्मा ने बताया कि धौलपुर विधानसभा क्षेत्र 79 में बीएलओ प्रशिक्षण के लिए तिथि निर्धारित की गई है। प्रशिक्षण के लिए बीएलओ निर्धारित तिथि एवं समय पर नगर परिषद सभाकक्ष मचकुण्ड रोड़ धौलपुर में आवश्यक रूप से उपस्थित हों। उन्होंने बताया कि 7 जुलाई को बीएलओ भाग संख्या 1 से 50 तक, 8 जुलाई को 51 से 100 तक, 9 जुलाई को 101 से 150 तक, 14 जुलाई को 151 से 200 तक एवं 15 जुलाई को 200 से 232 तक प्रात: 9 बजे से सायं 6 बजे तक मास्टर ट्रेनर अतुल चौहान, बालमुकुन्द बंसल एवं देवेन्द्र बघेला द्वारा प्रशिक्षण दिया जाएगा।

अंत्योदय शिविर में विजयसिंह और अमरसिंह के राजस्व रिकॉर्ड में सही नाम दर्ज

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राज्य सरकार द्वारा आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय संबल पखवाड़ा के तहत ग्राम पंचायत हथवारी में लगाए गए शिविर ने दो किसानों के लिए वर्षों पुरानी मुश्किल का समाधान कर उनकी उम्मीदों को नया जीवन दिया। ग्राम ढोड़िकापुरा के कृषक विजयसिंह पुत्र रामकिशन, जाति बढ़ई निवासी नादौली, और अमरसिंह पुत्र रामचरण निवासी मछरिया, लंबे समय से अपनी भूमि अभिलेखों में गलत नाम दर्ज होने के कारण परेशान थे। रिकॉर्ड में विलयसिंह और अनारसिंह लिखा होने के कारण उनकी भूमि से जुड़ी कई योजनाओं का लाभ लेने में बाधा उत्पन्न हो रही थी। 15 वर्षों तक प्रयास के बावजूद कोई स्थायी समाधान नहीं मिल सका। जब अन्त्योदय शिविर में इन किसानों ने अपनी समस्या शिविर प्रभारी उपखंड अधिकारी वर्षा मीना के समक्ष रखी, तो प्रशासन ने संवेदनशीलता और तत्परता का परिचय देते हुए तुरंत ही कार्रवाई शुरू की। नायब तहसीलदार मरैना, हरिओम शर्मा को मौके पर भेजा गया, जिन्होंने भू-अभिलेख निरीक्षक रमाशंकर झा और पटवारी प्रवीण शर्मा के साथ तत्काल जांच करवाई। जांच में स्पष्ट हुआ कि रिकॉर्ड में दर्ज नाम गलत हैं और इन्हें सही करने की जरूरत है। नायब तहसीलदार ने मौके पर ही आवश्यक आदेश पारित किए, जिसके तहत विलयसिंह को विजयसिंह और अनारसिंह को अमरसिंह में शुद्ध किया गया। मौके पर ही ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी कर दोनों किसानों को शुद्धि की नकल सौंप दी गई। विजयसिंह और अमरसिंह के चेहरे पर बरसों से जमी चिंता की रेखाएं पलभर में गायब हो गईं और उसकी जगह मुस्कान लौट आई। उन्होंने कहा कि सालों से हम इस गलती के कारण बार-बार परेशान होते रहे, पर आज अन्त्योदय कैंप में ही समाधान मिल गया। अब हम निश्चिंत होकर अपनी जमीन पर अधिकार और सरकारी योजनाओं का लाभ उठा पाएंगे। दोनों किसानों ने सम्पूर्ण राजस्व टीम और राज्य सरकार का आभार जताया।

धौलपुर में हनीट्रैप गिरोह का खुलासा, महिला आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले की महिला थाना पुलिस ने हनीट्रैप के एक गंभीर मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए एक महिला को गिरफ्तार किया है। महिला थानाधिकारी छवि फौजदार ने बताया कि 3 जुलाई को एक पीड़ित व्यक्ति ने थाने में तहरीर दी थी, जिसमें उसने खुद को एक साजिश का शिकार बताया। पीड़ित ने बताया कि आरोपी प्रेमसिंह गुर्जर, ध्रुव कंषाना और महिला उर्मिला ने उसे अपने झांसे में लेकर 23 जून को धौलपुर बुलाया था। आरोप है कि उक्त आरोपियों ने पीड़ित को कोल्ड ड्रिंक में नशीला पदार्थ मिलाकर बेहोशी की हालत में एक होटल में ले जाकर महिला के साथ रखा। इसके बाद महिला उर्मिला ने अपने साथियों के साथ मिलकर पीड़ित पर बलात्कार व छेड़छाड़ के झूठे आरोप लगाकर पांच लाख रुपए की मांग की और रकम नहीं देने पर बलात्कार का मुकदमा दर्ज कराने की धमकी दी। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा के निर्देशन में मामले की जांच प्रारंभ की गई। जांच के बाद पुलिस ने मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के जौरा निवासी उर्मिला पत्नी कल्लू ब्राह्मण को गिरफ्तार कर लिया है। थानाधिकारी ने बताया कि इस गिरोह के अन्य सदस्य प्रेमसिंह गुर्जर और ध्रुव कंषाना सीधे-साधे लोगों के मोबाइल नंबर जुटाकर उन्हें महिला उर्मिला तक पहुंचाते थे। उर्मिला पहले उन्हें विश्वास में लेकर दोस्ती करती, फिर मुलाकात के दौरान शारीरिक संबंध बनाकर बाद में बलात्कार का आरोप लगाकर रुपए की मांग करती थी। रुपए नहीं देने पर आरोपियों द्वारा मुकदमा दर्ज कराया जाता था। फिलहाल पुलिस ने मुख्य महिला आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि प्रेमसिंह और ध्रुव की तलाश की जा रही है। मामले की जांच जारी है।

कार्यालय ग्राम पंचायत चाड़वास,

पंचायत समिति बीदासर (चूरू)

क्रमांक- ग्रा.पं../.नि./2025-26/ 254-259 दिनांक 02.07.2025

खुली निविदा सूचना संख्या- 04/2025-26

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत चाड़वास पंचायत समिति बीदासर (चूरू) में स्वीकृत निम्नकार्यों को सम्पादित कराने हेतु पहली वर्षाकाल समाप्ति पश्चात एक वर्ष की डिफेक्टिव लाइब्लिटिजके साथ उपर्युक्त श्रेणी राजस्थान / केन्द्र सरकार में पंजीकृत संवेदकों से खुली निविदा प्रप्रि या द्वारा निर्धारित प्रपत्र / फार्म में दिनांक 04.07.2025 समय दोपहर 12.00 पी. एम. बजे से निविदायें आमन्त्रित की जाती है।

क्र.सं.	कार्य का नाम	अनुमानित राशि (रूपये)	धरोहर राशि (रूपये)
01.	पाइप लाइन डालना का कार्य मुख्या टंकी से मेघवाल की ढाणीयों की ओर चाड़वास	600000	12000
02	टिन सेड निर्माण कार्य बुडागढ ढाणीयों का बस स्टेड चाडवास	330000	6600
03	जल ग्रहण कूप निर्माण कार्य 02न. खेल मैदान के पास चाडवास	245000	4900
04	सार्वनिक श्मशान भूमि के मुख्य दरवाजे पर टिन शेड निर्माण कार्य चाडवास	430000	8600
05	ग्राम पंचायत भवन परिसर में टीन शेड निर्माण कार्य चाडवास	600000	12000
06	पीने के पानी हेतु पाइप लाइन का कार्य खिचडों की ढाणी गोपालपुरा चैम्बर से चक चाडवास	600000	12000
07	पुराने जल होज के पास एवं तालाब के पास टीन शेड निर्माण कार्य चाडवास	500000	10000
08	नाला निर्माण कार्य नत्थू व्यापारी के घर से मुख्य रास्ते की और चाडवास	600000	12000
09	मुख्य बस स्टैंड टीन शेड निर्माण कार्य चाडवास	350000	7000
10	नाला निर्माण कार्य विधूत ट्रासफार्मर के सामने तिरया से मुख्य रास्ते की ओर चाडवास	600000	12000
11	पानी निकासी हेतु नाली निर्माण कार्य पुराणी सिक्का बस्ती एवं मुख्य रास्ते की और श्यामलाल मेघवाल के घर की ओर मुन्सी सिक्का के घर की ओर मने रास्ते की ओर चाडवास	600000	12000
12	पानी निकासी हेतु इट खुरा निर्माण कार्य ओम चोडिया के घर से पुरानी नाई बस्ती व मैन रास्ते के सामने से फूल जी चोडिया के घर से होते हुए मुख्या रास्ते की ओर चाडवास	599000	12000

उक्त कार्यों के इच्छुक निविदादाताओं द्वारा निर्धारित शुल्क कार्यालय में जमा करवाकर दिनांक 11.07.2025समय 11.00ए.एम. बजे तक निविदा फार्म एवं शर्तो की प्रति प्राप्त की जा सकती है। भरी हुई एवं सीलबन्द निविदाऐं दिनांक 11.07.2025समय 12.00 पी. एम. बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय में जमा करवाई जा सकती है। धरोहर राशि निविदा आवेदन-पत्र के साथ संलग्न शर्तों अनुसार स्थानीय बैंक शाखापर देय बैंक डी0डी0 / बैंकर्स चेक द्वारा जमा कराई जा सकेगी। प्राप्त निविदाओं को दिनांक 11.07.2025 को दोपहर 02.00 बजे से गठित ₹ य समिति के द्वारा खोली जायेगी। निविदा शुल्क प्रत्येक कार्य का रूपये 200/- जमा करवाना होगा। उक्त से संबन्धित अन्य विस्तृत शर्ते कार्यालय समय में ग्राम पंचायत कार्यालय में देखी जा सकती है। उक्त से संबन्धित अन्यविस्तृतविवरण http://sppp.rajasthan.gov.in पर

NIBNo. ZCR2526A0522 UBN No-

ZCR2526WSOB00802, ZCR2526WSOB00803, ZCR2526WSOB00804,
ZCR2526WSOB00805, ZCR2526WSOB00806, ZCR2526WSOB00807,
ZCR2526WSOB00809, ZCR2526WSOB00810, ZCR2526WSOB00811,
ZCR2526WSOB00812 तक पर से Download कर देखा जा सकता है।

प्रशासक
ग्राम पंचायत चाड़वास,
पंचायत समिति बीदासर (चूरू)

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत चाड़वास,
पंचायत समिति बीदासर (चूरू)

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
7 जुलाई, 2025

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने दी श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। भारतीय जनता पार्टी ने रविवार को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती मनाई। कार्यक्रम में भाजपा कार्यकर्ताओं ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर भाजपाध्यक्ष मोहनलाल सैनी ने कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन देश की एकता, अखण्डता के लिए किये गए त्याग व बलिदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने कहा कि 6 जुलाई 1901 बंगाल के कलकत्ता शहर में जन्मे मुखर्जी विचारक और प्रखर शिक्षाविद थे, सही मायने में मानवता के उपासक व सिद्धान्तवादी थे। पूर्व पार्षद कैलाश पीपलवा ने कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी का लक्ष्य देश की एकता व अखंडता का था। उनका लक्ष्य राष्ट्रीय एकता का था। समाज सुधारक व राजनीतिक के विशेषज्ञ होने के साथ साथ मुखर्जी अहिंसावादी भी थे। डा. मुखर्जी की विचारधारा मजबूत थी। इस अवसर पर पार्षद संदीप परिहार, पूर्व पार्षद कैलाश शर्मा, महेश पंवार,मोहन परिहार, बाबूलाल सैनी, विशाल सैनी, विष्णुकांत नारेड़ा,पवन जोशी, विनोद शर्मा, पिंटू शर्मा, गोपीराम कुमावत, संजय परिहार और राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक संघ से नरेंद्र सिंह भाटी, नरेंद्र, देवेंद्र,अभिषेक जावेद आदि उपस्थित रहे।

पेयजल समस्या का समाधान होने पर ग्रामीणों ने जताई खुशी

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। विधायक मण्डावा रीटा चौधरी का आभार व्यक्त करते हुए समाज सेवी रिटायर्ड पटवारी रामगोपाल लोयल की धर्मपत्नी ग्रामीण कांग्रेस दिग्गज नेता चणणा देवी लोयल के नेतृत्व में मिठाई खिलाकर एक दूसरे का किया, मुंह मीठा करवाया गया। कांग्रेस मण्डल अध्यक्ष समसाद खान ने बताया कि गत दिनों विधायक रीटा चौधरी कि अनुशंसा पर गांव में दो सार्वजनिक कुओं की स्वीकृति मिली थी जिसका गांव में बोरिंग मशीन की ओर से खुदाई कार्य चालू है। पहलें कुएं का कार्य करने के बाद रविवार सुबह गांव के ग्रामीण चोक मे जैसे ही बोरिंग मशीन लगाई गई। महिलाओं में खुशी का ठिकाना नहीं रहा पिछले काफी समय से पानी के लिए झुझ रही माताओं ओर बहिनों ने विधायक का आभार प्रकट किया इस दौरान नुआं कांग्रेस मण्डल अध्यक्ष समसाद खान सिरियासर कलां उपाध्यक्ष सुनील फोजी, ब्लॉक उपाध्यक्ष मनीष लोयल कांग्रेस नेता चणणा देवी, पूर्व पंच उम्मेद देवी जागीड़, कमला देवी जांगिड, लक्ष्मण लोयल, रामगोपाल पटवारी, सुभाष चन्द्र लोयल , राजेन्द्र जागीड़, संदीप मेघवाल , सहित काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहें।

जितेन्द्र व राजेश जांगिड युवा ब्राह्मण महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। अजीतगढ़ निवासी जितेंद्र जांगिड़ व राजेश जांगिड़ कावट को राजस्थान प्रदेश युवा जांगिड़ ब्राह्मण महासभा का प्रदेश उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति 5 जुलाई को जयपुर में आयोजित हुए समाज के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में जांगिड़ समाज के चमकते सितारे हर समय समाज सेवा में तत्पर रहने वाले युवा और जुझारू समाज के कर्मठ कार्यकर्ता जितेंद्र जांगिड़ अजीतगढ़ व राजेश जांगिड़ कावट को जयपुर में आयोजित प्रदेश स्तरीय युवा प्रकोष्ठ की कार्यकारणी मे उपाध्यक्ष बनाया गया है। जितेंद्र जांगिड़ अजीतगढ़ दिवराला भाजपा मंडल का उपाध्यक्ष भी है। इस अवसर पर जितेंद्र जांगिड़ ने कहा कि वह समाज को मजबूत करने का काम करेंगे और युवाओं को नशे की आदत से दूर रहने की अपील करेंगे। जितेंद्र जांगिड़ को उपाध्यक्ष बनाए जाने पर अजीतगढ़ नगर पालिका के वाइस चेयरमैन मनोज खंडेलवाल, सुरेंद्र मीणा, जीएल टेलर आदि ने बधाई दी है।

चार माह से फरार हत्या के प्रयास का आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। पुलिस ने 4 माह से फरार चल रहे हत्या के प्रयास के आरोपी को गिरफ्तार किया। थानाधिकारी सुरेश कुमार ने बताया कि हत्या के प्रयास के मामले में राहुल उर्फ बुली (23) पुत्र राजेश हरिजन निवासी वार्ड संख्या 19 रींगस हाल निवास इंद्रा कॉलोनी गोविंदगढ़ को गिरफ्तार किया गया। आरोपी की तलाश में गठित पुलिस टीमों ने अहमदाबाद, गुजरात और जयपुर के कई इलाकों में दबिश दी। गौरतलब है कि आरोपी ने अपने साथियों के साथ मिलकर 11 फरवरी को रीको औद्योगिक क्षेत्र से सवारियां भरकर फाटक संख्या 108 पर पहुंचे टैंपो चालक कमलेश कुमार पर जानलेवा हमला कर दिया था। जिस पर कमलेश के बड़े भाई मोहनलाल पुत्र गणपत राम जाट निवासी ढाणी पावंडा की तन बावड़ी की ओर से पुलिस थाने में नामजद मुकदमा दर्ज करवाया गया था। इस मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार करके जेल भेज चुकी है।

रींगस में गड़बड़ाई यातायात व्यवस्था, जाम में फंसे श्याम भक्त

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। कस्बे में देवशयनी एकादशी पर खाटूश्याम जी जाने वाले श्याम भक्तों की भारी भीड़ रही। इसके चलते अलसुबह से ही कस्बे की बाइपास पुलिया, भैरुजी मोड़, मिल तिराहा आदि जगहों पर जाम की स्थिति बनी रही। श्याम भक्तों को घंटों जाम में जूझ कर आवागमन करना पड़ा। श्याम भक्तों ने प्रशासन पर बिना प्लान के यातायात व्यवस्था बनाने और अधिकारियों पर एसी में बैठ कर आदेश फरमाने के आरोप लगाए। गौरतलब है कि पुलिस प्रशासन की ओर से रींगस के भैरुजी मोड़ पर बेरिकेडिंग लगाकर वाहनों के प्रवेश को रोका गया जिससे कस्बे की सभी सड़के खाली रही और व्यापारियों का धंधा भी चौपट हो गया। वहीं एनएच 52 की बाइपास पुलिया पर ट्रैफिक का भारी दबाव रहा। पूरे दिन रींगस से लेकर लाखनी मोड़ तक करीब 8 किलोमीटर लंबा जाम लगा रहा।

श्याम भक्तों ने कुंभ मेलें की व्यवस्थाओं का दिया उदाहरण

देवशयनी एकादशी पर खाटूश्याम आने वाले भक्तों को अपने आराध्य के दीदार करने के लिए जाम, पुलिस की नोंक-झोंक, पार्किंग कर्मचारियों की बदसलूकी आदि विकट समस्याओं का सामना करना पड़ा। जिस पर श्याम भक्तों ने विगत दिनों आयोजित हुए महाकुंभ मेले की शानदार व्यवस्थाओं का उदाहरण दिया। भक्तों ने बताया कि उत्तरप्रदेश पुलिस सभी भक्तों से जय श्रीराम बोलकर अच्छा मार्गदर्शन कर रही थी वहीं रविवार को खाटूश्याम आने के दौरान राजस्थान पुलिस श्याम भक्तों से अभद्रता कर रही है।

श्याम भक्तों की आस्था में रोड़ा बनी पुलिस की कार्यशैली

रींगस के प्राचीन श्याम मंदिर जाने वाले भक्तों की आस्था में पुलिस की कार्यशैली रोड़ा बन कर सामने आई। प्राचीन श्याम मंदिर दर्शन के लिए श्याम भक्त अनेक प्रकार की दलीलें देते रहे लेकिन पुलिस ने श्याम भक्तों की एक न सुनी। यहां तक कि श्याम मंदिर कमेटी ने अपने स्तर पर स्वयं सेवक भी खड़े कर रखे थे लेकिन पूरे दिन स्वयं सेवकों की भी पुलिस से तकरार चलती रही। गौरतलब है कि पिछले कुछ सालों फाल्गुनी मेले के दौरान खाटूश्याम जाने वाले पदयात्रियों की सुविधा के लिए कस्बे से वाहनों के आवागमन को रोकने के लिए भैरुजी मोड़ पर बेरिकेडिंग लगाकर दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, अलवर, जयपुर, हिसार आदि जगहों से आने वाले श्याम भक्तों के वाहनों को रोका जाता है लेकिन अब धीरे-धीरे प्रशासन वर्ष भर आने वाली एकादशी पर्वों पर भी भैरुजी मोड़ पर बेरिकेडिंग करने लग गया जिससे कस्बेवासियों को भी भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। श्याम भक्तों ने प्रशासन की कार्यशैली को देखकर आरोप लगाया कि प्रशासन ने इतनी अधिक संख्या में आने वाले श्याम श्रद्धालुओं की सुरक्षा और दर्शनों की सुलभता को लेकर कोई व्यवस्था नहीं की। वहीं दिल्ली से आए कुछ श्याम भक्तों ने प्रशासनिक अधिकारियों पर एसी में बैठ कर आदेश फरमाने के आरोप लगाए। देवशयनी एकादशी पर की गई व्यवस्थाओं को लेकर रींगस उपखंड अधिकारी बृजेश कुमार से बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि खाटू मार्ग पर वाहनों का आवागमन रोकने या वन-वे करने जैसे कोई भी आदेश जारी नहीं किए गए।

विधायक सुभाष मील ने समझी श्याम भक्तों की पीड़ा

खाटूश्याम जी मार्ग पर संचालित सैंकड़ों होटल संचालक और रींगस श्याम मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों की ओर से खंडेला विधायक सुभाष मील को प्रशासन की तानाशाही और यातायात की समस्या से अवगत करवाया गया तो उन्होंने तत्काल सीकर एसपी से बात की और रींगस से खाटूश्याम जी तक यातायात व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए। विधायक सुभाष मील ने कहा कि आगामी दिनों में प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक कर श्याम भक्तों की यात्रा में आ रही समस्याओं का स्थाई समाधान निकाला जाएगा।

शहीदों के सम्मान में रक्तदान शिविर, 153 यूनिट रक्तदान

जयपुर टाइम्स

कांवट(निस)। भारतीय सशस्त्र बलों एवं वीर शहीदों के सम्मान में टीम किशोर दुल्हेपुरा कांवट ने रविवार को प्रयास कोचिंग व लाईब्रेरी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। मीडिया प्रभारी एड. राजेंद्र सिंह शेखावत ने बताया कि शिविर का शुभारंभ खण्डेला विधानसभा क्षेत्र के युवानेता, जनसेवक किशोर दुल्हेपुरा के मुख्य आतिथ्य में देश के शहीदों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित कर शुरू किया। शिविर में कांवट व आसपास के क्षेत्र के युवा रक्तदाताओं ने जोरदार जोश से हिस्सा लेकर रक्तदान किया। रक्तदान शिविर में 153 यूनिट रक्त संग्रहण किया। इस मौके पर अतिथियों की ओर से रक्तदान करने वाले युवा रक्तदाताओं का हौसला अफजाई करते हुए प्रशस्ति पत्र और माला पहनाकर सम्मानित किया गया। पत्रकारों को संबोधित करते हुए जनसेवक किशोर दुल्हेपुरा ने कहा हमारी टीम लगातार क्षेत्र में जनसेवा का कार्य कर रही है। इसी कड़ी में कांवट में सशस्त्र बलों एवं शहीदों के सम्मान में रक्तदान शिविर लगाया गया है। दुल्हेपुरा ने कहा कि सशस्त्र बलों के जवान और वीर शहीद देश के युवाओं के असली हीरों है। युवाओं के होंसला अफजाई के लिए हरजनपुरा बालाजी पुजारी गोकुल महाराज, कोचिंग के निदेशक सतवीर जाखड़, सह निदेशक मनीष डूडी, नायरा फाउंडेशन के इस्लामुदीन, पूर्व पंस सदस्य विष्णु बंसल, पत्रकार रंगलाल स्वामी, करण मलाका, प्रकाश वर्मा, मनीष सैनी, विजय वर्मा, कमलेश, सुमन वर्मा, संदीप कुमार, मातादीन कुमावत, प्रभुदयाल प्रजापति, दयाराम यादव, जेपी कुमावत, विक्रम यादव, सतीश वर्मा सहित कई लोग उपस्थित रहे।

श्री धन्ना भक्त जाट समाज धर्मशाला ट्रस्ट की बैठक में अनेक मुद्दों पर चर्चा

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे के निकटवर्ती त्रिवेणी धाम में श्री धन्ना भक्त जाट समाज धर्मशाला ट्रस्ट कार्यकारिणी की मीटिंग का आयोजन ट्रस्ट अध्यक्ष नृसिंह लाल कपूरिया की अध्यक्षता में किया गया। मीटिंग में प्रतिभावान सम्मान समारोह के आयोजन, विधान के अनुसार ट्रस्ट कार्यकारिणी के चुनाव, धर्मशाला में नवनिर्माण को लेकर विचार व्यक्त किए गए। ट्रस्ट के मीडिया प्रभारी कैलाश बोबास्या ने बताया कि चंद्रभान सिंह पलसानिया ने सुझाव दिया कि वर्तमान कार्यकारिणी में जो पद रिक्त हैं उन पर चयन किया जाए। कैलाश बोबास्या ने ट्रस्ट में यूथ कार्यकारिणी का गठन करने और ट्रस्ट में यूथ का प्रतिनिधित्व बढ़ाने का सुझाव दिया। रामेश्वर ताखर ने धर्मशाला में ट्रस्ट की ओर से नए निर्माण कार्य करने का सुझाव दिया। रिछपाल कलवानिया ने सुझाव दिया कि नवगठित कार्यकारिणी में सभी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व होना चाहिए और ट्रस्ट में चंदा इकट्ठा करने पर बल दिया। रामलाल पलसानिया ने वर्तमान कार्यकारिणी को यथावत रखने का सुझाव दिया, ग्यारसी लाल बोबास्या और मंगल चंद बधाला ने नया निर्माण कार्य करने को लेकर सुझाव दिए, बोदूराम बड़सरा ने सभी सदस्यों को सक्रिय होने व नई कार्यकारिणी का गठन आम सहमति से करने पर जोर दिया। महामंत्री प्रहलाद पलसानिया ने ट्रस्ट में महिला कार्यकारिणी का गठन करके महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने पर बल दिया। अध्यक्ष नृसिंहलाल कपूरिया ने सुझाव दिया कि प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर एक कमेटी गठित की जाए और निर्माण कार्य को लेकर एक कमेटी बनाई जाए। ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने सामूहिक रूप से ट्रस्ट की नई कार्यकारिणी का चुनाव आम सभा बुलाकर 3 अगस्त को करवाने, प्रतिभावान सम्मान समारोह कार्यक्रम के आयोजन का निर्णय अक्टूबर माह में नई कार्यकारिणी के गठन के पश्चात लिया जाएगा और धर्मशाला में आवश्यक नया निर्माण कार्य करने के बारे में आगामी माह की मीटिंग में निर्णय लिया जाएगा। बैठक में श्रवण भावरिया, मुकेश रोलानिया, पप्पू बराला ,रुडमल बराला, साधुराम मंगावा, चंद्रसेन जाट, रामलाल खारलोटिया उपस्थित रहे। अंत में ट्रस्ट अध्यक्ष नृसिंह लाल कपूरिया ने सभी सदस्यों का धन्यवाद दिया।

अश्लील वीडियो बनाए, ब्लैकमेल कर युवती से सामूहिक ज्यादती

जयपुर टाइम्स

थोई(निस)। थोई थाना इलाके में 21 साल की युवती से दुष्कर्म करने का मामला दर्ज हुआ है। आरोपी ने चोरी-छिपे युवती के फोटो -वीडियो बनाए। इसके बाद अपने दो दोस्तों के साथ मिलकर उसके साथ गैंगरेप किया। आरोपी करीब एक साल से पीड़िता को परेशान कर रहे थे। आरोपियों ने युवती के भाई को भी जान से मारने और एससी- एसटी एक्ट में फंसाने की धमकी दी। अब पुलिस में नामजद मामला दर्ज कराया गया है। पीड़िता ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि वह पढ़ने जाती थी, तब बस में अमित कड़वासरा नाम का लड़का उसके साथ छेड़छाड़ करता था। उसने चोरी-छिपे उसके वीडियो रिकॉर्ड कर लिए। इसके बाद किसी से उसके मोबाइल नंबर लेकर धमकी देने लगा। कहने लगा कि उसके पास फोटो और वीडियो है। वह सोशल मीडिया पर डालकर समाज में उसे बदनाम कर देगा। नवंबर 2024 में युवक ने फोटो-वीडियो डिलीट करने का झांसा देकर युवती को चाय पीने के लिए बुलाया। कैफे में चाय पीने के बाद युवती को होश नहीं आया। इसका फायदा उठाकर युवक ने उसके साथ दुष्कर्म किया और उसके फोटो-वीडियो बना लिए। इसके बाद उसे ब्लैकमेल कर बार-बार दुष्कर्म करने लगा। पिछले माह भी युवक और उसके साथी आशीष व अंकित ब्लैकमेल कर उसे कैफे पर लेकर गए। इसके बाद तीनों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। किसी को बताने पर उसके भाई को जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता ने बताया कि करीब 6 दिन पहले आरोपी अंकित अपने दोस्तों को उसके बारे में बता रहा था। ये बात युवती के भाई ने सुन ली। उसने आरोपी युवक से उसका मोबाइल छीन लिया। तब अंकित ने धमकी दी कि यदि अमित को हाथ लगाया तो सिर फोड़कर एससी-एसटी एक्ट का मुकदमा दर्ज करवा दूंगा। भाई घर आया, तब उसे आपबीती बताई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच

इग्नू पाठ्यक्रम के प्रवेश शुरू

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। स्थानीय भगवानदास तोदी महाविद्यालय में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से संचालित इग्नू अध्ययन केंद्र 2312 के एच ओ आई डॉ . एन. एस. नाथावत व समन्वयक डॉ. जितेंद्र कांटिया ने बताया कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय इग्नू के विभिन्न कोर्स, डिप्लोमा व सर्टिफिकेट कोर्स के लिए फ्रेश व रि रजिस्ट्रेशन की प्रवेश प्रक्रिया शुरू हो गई है। डॉ कांटिया ने बताया कि छात्र-छात्राओं के लिए इग्नू में लगभग 300 कार्यक्रम उपलब्ध है। इसमें विद्यार्थियों के लिए डीईसीई प्रारंभिक - बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा में - डिप्लोमा प्रोग्राम भी इस अध्ययन केंद्र पर संचालित है। इग्नू की ओर से एससी व एसटी वर्ग के - छात्र-छात्राओं को स्नातक कार्यक्रम में प्रवेश शुल्क में 50 प्रतिशत छूट दी जा रही है। वहीं इस वर्ग के विद्यार्थियों को समाज कल्याण विभाग की ओर से जारी छात्रवृति योजना का लाभ भी दिया जाएगा। प्रवेश आवेदन इग्नू की वेबसाइट पर उपलब्ध एडमीशन पोर्टल की ओर से ऑनलाइन माध्यम से ही किया जा सकता है। नए एडमीशन की अंतिम तिथि 15 जुलाई है। सरकार की बालिका दूरस्थ शिक्षा के तहत सभी वर्गों की किसी भी आयु की महिला व छात्रा को किसी भी कोर्स में प्रवेश लेने पर फीस राशि के पुनर्भरण का लाभ मिलेगा। इस योजना से संबंधित नियम, दिशा-निर्देश विभागीय वेबसाइट rajasthan - in@online & scholar-ship पर उपलब्ध हैं। विभागीय वेबसाइट पर एसएसओ आईडी से लॉगिन करने के बाद स्कॉलरशिप के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसलिए विद्यार्थी अंतिम तिथि तक इंतजार नहीं करते हुए शीघ्र ईमित्र अथवा अन्य किसी माध्यम से जुलाई सत्र में प्रवेश लेकर लाभान्वित हों। अधिक जानकारी के लिए इग्नू के वेबसाइट पर देखें।

इमाम हुसैन की याद में किया रक्तदान

सीकर (निस)। जिले के फतेहपुर शेखावाटी में नेता तैयब महराब ख़ान व उनकी टीम के आसिफ़ मोयल, मुस्तफ़ा भाटी रामगढ़, मक़सूद चोपदार आदि ने हज़रत इमाम हुसैन (अ.स) की याद में रक्तदान किया। तैयब महराब ख़ान का यह चालीसवाँ रक्तदान था, जिसे उन्होंने इंसानियत की सेवा और कर्बला के पैग़ाम को ज़िंदा रखने के लिए अंजाम दिया। तैयब ख़ान ने इस मौक़े पर कहा कि इमाम हुसैन (अ.स) की शहादत हमें इंसाफ़, कुर्बानी और इंसानियत का पैग़ाम देती है। कर्बला सिर्फ़ एक तारीखी वाक़िआ नहीं, बल्कि यह हर दौर के ज़ालिम के ख़िलाफ़ एक आवाज़ है। हम भी अगर इस राह पर चलना चाहते हैं तो हमें इंसानियत की ख़िदमत करनी होगी। रक्तदान उसी ख़िदमत का एक हिस्सा है। उन्होंने कहा कि रक्तदान एक ऐसा अमल है जिससे हम बग़ैर किसी भेदभाव के किसी की जान बचा सकते हैं। यह सच्ची इबादत और इमाम की याद में पेश की गई एक छोटी सी नज़र है। इस मौक़े पर स्थानीय लोग, अमर अस्पताल के संचालक सुभाष रायका, डॉक्टर लोकेश, अकील अहमद, समाजसेवी जोंटी हेतमसर, आप नेता शाहरुख़ लंगा, बासिद सब्ज़ीफ़रॉस, अदनान क़ाज़ी, आदि पार्टी कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

रक्तदान शिविर के पोस्टर का विमोचन

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। रीता चंद्र सक्सेना की पुण्य स्मृति में रोटरी क्लब और सीसीए शिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर के पोस्टर का विमोचन किया गया। रोटरी सह प्रांतपाल डॉ भंवर सिंह ताखर ने बताया कि 15 जुलाई को कस्बे की सीसीए शिक्षण संस्थान में विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर संयोजक झाबर निठारवाल ने बताया कि शिविर को लेकर कस्बे सहित आसपास के क्षेत्र में लोगों से जनसंपर्क किया जा रहा है। रोटरी पदाधिकारियों ने पौधारोपण करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस दौरान रोटरी के पूर्व सह प्रांतपाल डॉ अजय सक्सेना, रोटेरियन अर्जुन सिंह लांबा, रघुनाथ जाट, डॉ विनोद गुप्ता, रघुवीर सिंह तंवर आदि मौजूद रहे।

मील ने किया आश्वस्तः रींगस में उपखंड और तहसील कार्यालय रहेंगे यथावत

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। पिछले कुछ दिनों से राजस्थान में कांग्रेस सरकार में बनाए गए उपखंड और तहसील कार्यालयों को खत्म करने की सूचना सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रही है जिसको लेकर अलग-अलग दलों से जुड़े लोग अपने पक्ष रख रहे हैं। रविवार को जनसुनवाई के दौरान रींगस नगर पालिका उपाध्यक्ष अमित शर्मा और पंचायत समिति सदस्य रिछपालसिंह बाजिया की ओर से विधायक सुभाष मील से इस मामले में चर्चा की गई तो विधायक मील ने आश्ववस्त करते हुए कहा कि रींगस में उपखंड और तहसील कार्यालय यथावत रहेंगे। इसको लेकर हाल ही में विधायक सुभाष मील ने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा से भी बातचीत की है। गौरतलब है कि पिछली सरकार में रींगस में उप तहसील के बाद तहसील और उपखंड कार्यालय खोला गया था जिससे आमजन को सहूलियत मिली है।

आस्ट्रेलियाई फूलों से बाबा श्याम का मनमोहक श्रृंगार, भक्तों ने नवाया शीश

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। प्राचीन श्याम मंदिर में देवशयनी एकादशी पर आस्ट्रेलियाई फूलों से बाबा श्याम का विशेष श्रृंगार किया गया। श्री श्याम मंदिर कमेटी अध्यक्ष विक्रम सिंह चौहान ने बताया कि एकादशी पर बाबा का कोलकाता से आए आस्ट्रेलियाई गुलाब, टाटा गुलाब आदि से मनमोहन श्रृंगार किया गया। कोषाध्यक्ष गजेन्द्र सिंह चौहान ने बताया कि श्याम भक्तों का आवागमन प्रातः मंगला आरती से ही शुरू हो गया था जो शयन आरती तक जारी रहा। भक्तों ने बाबा श्याम की चौखट पर शीश नवाकर मनौती पूरी होने की कामना की। श्री श्याम मंदिर कमेटी ने श्याम भक्तों की सुरक्षा के लिए सुरक्षा गार्ड लगाएं और छाया, पेयजल की सुविधा के लिए विशेष इंतजाम किए। मंदिर कमेटी के सह कोषाध्यक्ष राहुल सिंह चौहान ने बताया कि श्याम भक्तों के लिए लाखों रुपए की लागत से विशेष इंतजाम किए थे, लेकिन पुलिस प्रशासन की ओर से यात्रियों को भैरुजी मोड़ पर ही बेरिकेडिंग लगाकर रोक दिया गया, जिससे श्याम भक्तों को मंदिर पहुंचने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। एकादशी पर्व पर उपाध्यक्ष गणपत सिंह चौहान, सचिव विजय सिंह चौहान के नेतृत्व में मंदिर कमेटी पदाधिकारियों ने सेवाएं दी।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स
जयपुर, सोमवार
7 जुलाई, 2025

विधायक बुड़ानिया ने 31.80 लाख के विकास कार्यों का किया शिलान्यास

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर विधायक नरेन्द्र बुड़ानिया, पंचायत समिति प्रधान संजय कस्वां व नगरपालिका चेयरमेन प्रियंका बानो ने नगरपालिका की ओर से कस्बे के सात्युँ सड़क पर स्थित सार्वजनिक कब्रिस्तान में 31.80 लाख रूपये की लागत से चार दीवारी व टीन शैड निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। विधायक बुड़ानिया ने कहा कि हमने विकास कार्य करवाने में पहले भी कोई कमी नहीं छोड़ी है और आगे भी कोई कमी नहीं आने दूंगा। प्रधान संजय कस्वां ने कहा कि पिछले कार्यकाल में विधायक बुड़ानिया ने विकास की गंगा बहाई थी, विधायक बुड़ानिया ने सड़क, शिक्षा, चिकित्सा, बिजली पानी आदि क्षेत्र में अनेकों विकास कार्य हुए है लेकिन अब भाजपा सरकार में विकास के पहिये पर ब्रेक लग गए है। इस मौके पर विधायक बुड़ानिया ने कार्यकर्ताओं के साथ कब्रिस्तान में पौधारोपण भी किया। इस मौक़े पर बीडीसी मेंबर मोहर सिँह ज्याणी, सुरेन्द्र सहारण, कृष्ण सहारण, एडवोकेट राकेश सांगवान, दौलत राम मेघवाल, वेद प्रकाश सहारण, बाबू हुसैन कुरैशी, मानसिंह सैनी, बुँदे खां लुहार, जासम खोखर, असरफ बिसायती, दिनेश शर्मा आदि मौजूद रहे।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती मनाई

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विष्णु भगवान प्रजापत की अध्यक्षता श्री नाथनगर गौशाला में श्यामा मुखर्जी की जयंती पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रविवार को देश की एकता, अखंडता व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर पौधरोपण किया और उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए गए। प्रजापत ने मुखर्जी की जीवनी पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि भारतीय जनसंघ की स्थापना कर उन्होंने देश को एक राष्ट्रवादी विचारधारा वाला वैकल्पिक राजनीतिक मंच दिया। मातृभूमि के सच्चे उपासक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का जीवन व उनके विचार सदैव सभी देशवासियों को प्रेरणा देते रहेंगे। इस मौके पर भाजपा के खेमराज पारीक, पवन बोथरा, धनपत शर्मा, कपिल पारीक, सांवरमल खटिक, किशोर प्रजापत, राजकुमार विनायकिया, नगराज सोनी, कानाराम जाट, सुनिल प्रजापत, राजेश गर्ग सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

राजस्थान कुम्हार कुमावत महासभा की बैठक, विभिन्न पदों पर नियुक्तियां

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। राजस्थान कुम्हार कुमावत महासभा की बैठक कस्बे के तेजस्वी कंप्यूटर सेंटर में जिलाध्यक्ष एडवोकेट गोविंद सिंह कठोड की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष एडवोकेट दीनदयाल प्रजापत, युवा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष पवन कुमार प्रजापत का माला पहनाकर स्वागत व अभिनंदन किया। जिलाध्यक्ष एडवोकेट कठोड की सहमति से युवा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष पवन कुमार प्रजापत ने राजलदेसर युवा प्रकोष्ठ के नगर अध्यक्ष पद पर गौतम किरोड़ीवाल, बीदासर युवा प्रकोष्ठ नगर अध्यक्ष पद पर योगेश निरानिया, पडिहारा युवा प्रकोष्ठ नगर अध्यक्ष पद पर हितेश भोडीवाल को नियुक्त किया। साथ ही जिला कार्यकारिणी में अमित प्रजापत को युवा प्रकोष्ठ का जिला उपाध्यक्ष व जिला महामंत्री गौतम प्रजापत को नियुक्त किया। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष व चूरू प्रभारी एडवोकेट दीनदयाल प्रजापत ने नवनियुक्त पदाधिकारी का माला पहनाकर स्वागत किया और महासभा को मजबूती से आगे बढ़ने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर महासभा के जिला अध्यक्ष एडवोकेट कठोड ने कहा कि प्रजापति समाज को राजनीति में अपना वर्चस्व बढ़ाना चाहिए और आने वाले चुनाव में ज्यादा से ज्यादा समाज के युवाओं को मजबूती से चुनाव लड़कर जीत हासिल करनी चाहिए।

शीतल पेय जल सेवा प्रकल्प का समापन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। प्रचंड गर्मी के मौसम में द् यंग्स क्लब ऑफ सुजानगढ की ओर से विभिन्न दानदाताओं के सहयोग से नगर के अनेक प्रमुख स्थलों पर लगभग ढाई महीने लगातार संचालित -शीतल जल सेवा प्रकल्प.. का समापन रविवार को हुआ। क्लब के सांस्कृतिक सचिव गिरधर शर्मा के अनुसार भामाशाह कमलेश भरत डूंगरवाल, मांगीलाल सेठिया, आदित्य -निशा कनोई, कमला सिंघी, अशोक -आलोक सेठिया, डॉ सरोज कुमार छाबड़ा, झंकार-नवरतन सुराणा फाउंडेशन कोलकाता, भागीरथ चांडक, गोविंद प्रसाद-राजेन्द्र कुमार कनोई, रामावतार जडिया, अनारदेई सोनी ट्रस्ट कोलकाता के सौजन्य से यंग्स क्लब के सामने, गणेश मंदिर, जनाना हॉस्पिटल (नाथो तालाब), ठरडा शिवालय, पंचायत समिति के सामने, तहसील कार्यालय, डीवाईएसपी ऑफिस के पास, बी डी एस होटल के पास राहगीरों के लिए केम्पर्स की ओर से ठंडे पानी की व्यवस्था की गई थी। क्लब अध्यक्ष निर्मल भूतोड़िया व सचिव महावीर मिरणका की प्रेरणा से जनसेवार्थ संचालित इस सेवा कार्यक्रम में क्लब के दानमल शर्मा, गोपाल चोटिया, हाजी मोहम्मद, ललित सोनी, योगेन्द्र भोजक आदि का सहयोग रहा।

मोहर्रम पर ताजियों का निकाला जुलूस

जयपुर टाइम्स

पलसाना(निस)। कस्बे में रविवार को मोहर्रम का पर्व बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। इससे पहले शनिवार रात को पलसाना में ताजियों को इमामबाड़ों से बाहर लाया गया। इस दौरान मातमी धुनों के बीच कलाकारों ने करतब भी दिखाए। रानोली थानाधिकारी राजेश बुडानिया ने बताया कि मोहर्रम पर्व को देखते हुए पुलिस का भारी जाप्ता तैनात रहा। अलग-अलग पॉइंट्स पर पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया। इसके साथ ही सादा वर्दी में भी पुलिसकर्मी तैनात रहे। ताजियों का जुलुस मदीना मस्जिद से होते हुए श्रृंगार मार्केट, रामलीला मैदान, पुराना बाजार, कुमावतों के मोहल्ले कस्बे के मुख्य मार्गो से होते हुए कब्रिस्तान पहुंचा। जहां पर उसे खाक कर दिया गया। इस मौके पर मुस्लिम समुदाय के महासचिव वार्ड पंच इब्राहिम, लाइसेंस धारी अयूब लोहार, इस्लाम रंगरेज, सलीम रंगरेज, वार्ड पंच गुलाम रसूल, मदनी सरपंच सुरेश, यासीन, नवाब यासीन, साहिल, निसार, शहजा, व ग्रामीण मौजूद रहे।

सुजानगढ़। सुजानगढ़ में इमाम हुसैन और उनके साथियों को शहादत की याद में ताजियों के 2 जुलूस निकाले गए। एक दो छोटे ताजिये भी जुलूस में नजर आए। ताजियों के जुलूस बाजारों से होकर गांधी चौक, घंटाघर आदि स्थानों से गुजरे। युवाओं ने ढोल ताशों पर मातमी धुनें बजाई और कुछ लोगों ने लाठीबाजी के करतब दिखाए। ताजियों के जुलूस के दौरान एहतियात के तौर पर बड़ी संख्या में पुलिस जाप्ता भी तैनात रहा। गांधी चौक में हर वर्ष देखा जाता है कि राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि शिरकत करके ताजियेदारों का स्वागत करते हैं, लेकिन इस बार गांधी चौक में कोई राजनीतिक दल का प्रतिनिधि नहीं पहुंचा। मोहर्रम में अपेक्षाकृत लोगों की भीड़ कम नजर आई।

लक्ष्मणगढ़। शहर में रविवार को इस्लामी नववर्ष के पहले महीने मोहर्रम की 10वीं तारीख को ताजियादारी और मातमी जुलूस निकाला गया। इमाम हुसैन की शहादत की याद में निकाले गए। इस जुलूस में बड़ी संख्या में अकीदतमंदों ने हिस्सा लिया। जुलूस के दौरान या हुसैन - या हुसैन की सदा के साथ मातमी धुनें बजाई गईं और नौहे पढ़े गए। जुलूस शहर के पानी की टंकी, कबूतरिया कुआ, चौपड़ बाजार, पुराने बस स्टेंड सहित मुख्य मार्गों से होते हुए करबला चौराहे पहुंचा, जहां ताजियों को सुपुर्द-ए-खाक किया गया। इस मौके पर मातमी धुनों के बीच ढोल, ताशे और नगाड़ों की गूंज से माहौल गमगीन हो गया। जुलूस में लक्ष्मणगढ़ पुलिस उपाधीक्षक दिलीप कुमार मीणा के नेतृत्व में पुलिस प्रशासन की ओर से सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। जगह-जगह पर पुलिस जाप्ता तैनात था और यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखा गया।जुलूस के दौरान लक्ष्मणगढ़ नगरपालिका अध्यक्ष हाजी मुस्तफा कुरैशी, साबिर बाबू हाजी, अल्ताफ खत्री सहित बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग मौजूद रहे।

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर बूथ स्तर पर कार्यक्रम

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। जनसंघ के सस्थापक सदस्य डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी की जयंती पर बूथ संख्या 167, 109, 87, 264, 265 पर आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित होकर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवां ने कहा की डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी के जीवन से हम सब कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलती है। हम सब उनके ऋणी है कि उन्होने लोकतंत्र और अखण्ड भारत के लिए जीवन समर्पण कर दिया। वह अंतिम व्यक्ति तक न्याय पहुंचे इसके पक्षधर थे। उनका सबसे बड़ा सपना था कि देश में एक विधान एक निशान और एक प्रधान हो जिसे उनकी प्रेरणा से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कि सरकार ने पूरा किया है। अखण्ड भारत के हिमायती थे। देश की अखण्डता के लिए उन्होने अपना बलिदान दिया। एक कुशल प्रशासक संगठनकर्ता और सरल हृद्वय व्यक्ति थे जो कार्यकर्ताओ के मार्गदर्शक थे। इस अवसर पर जिला मंत्री श्यामलाल पारीक, डेयरी चेयरमैन लालचंद मूंड, वरिष्ठ कार्यकर्त्ता मूलचंद दुगड़, नगर अध्यक्ष मुकेश भामा, पार्षद बाबूलाल प्रजापत, ओबीसी मोर्चा पूर्व जिला उपाध्यक्ष हरिमोहन भोजक, पूर्व ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष किशन मोयल, जिला उपाध्यक्ष निरंजन धानका, युवा मोर्चा महामंत्री गुरु धानका, जगदीश पिंगोलिया, दुनिचंद जोशी, अश्विनी मकवाना, युवा मोर्चा उपाध्यक्ष अभिषेक भोजक, पवन पारीक, राजेश माटोलिया, भजनलाल नाई, घनश्याम भोजक, अशोक भोजक, तेजकरण भिवानिया, सत्यनारायण भालेरी, महावीर पारीक, रजत शर्मा, विक्रम जोशी, श्यामसुन्दर दर्जी, हनुमान पारीक, चुनिसिंह पुरोहित, एडवोकेट वसुधा भोजक सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। तारानगर के जेईएस क्रिकेट एकेडमी व बी डी हैंडलूम ने मिलकर तारानगर में अंडर 19 तीन दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जिसमें 6 टीमों ने भाग लिया। विजेता टीम जेईएस क्रिकेट एकेडमी की रही जिस ने 20 ओवर में 147 रन बनाए। वहीं उप विजेता टीम सुभाष स्कूल साहवा रही जिसने 130 रन बनाए, विजेता को 10 हजार रूपये व ट्रॉफी, उप विजेता को 5 हजार रूपये व ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। सुखदेव, रणवीर, राकेश, ओमप्रकाश, मनसुख आदि ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इन सभी ने खिलाड़ियों का मानसमन बढाया और खिलाड़ियों को सम्मानित किया।

भारतीय किसान संघ की बैठक में विचार विमर्श

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। भारतीय किसान संघ नगर इकाई सीकर की बैठक बालिका आदर्श विद्या मंदिर ऋषिकुल मार्ग पर संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रांत जैविक प्रमुख कानसिंह निर्वाण व सीकर संभाग प्रभारी नीरज कुमार ने की। संभाग संगठन मंत्री नीरज कुमार, प्रांत जैविक प्रमुख कान सिंह निर्वाण वंनगर मंत्री जयप्रकाश सैनी ने किया गया।बैठक में नगर इकाई के विस्तार पर चर्चा करते हुए वार्ड प्रभारी नियुक्त किए गए। उपस्थित सदस्यों को वार्ड संयोजक व सह संयोजक, महिला प्रमुख नियुक्त करने का लक्ष्य दिया गया।

कथा में सुनाया सीता स्वयंवर का प्रसंग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय रेल्वे स्टेशन के सामने स्थित सियाराम बाबा की बगीची में श्रीरामकथा के रविवार को छठे दिन कथा वाचक केशवरायपाटन बूंदी के घनश्यामदास महाराज ने राम सीता स्वयंवर के प्रसंग बारे में बोलते हुए कहा कि सीता माता का स्वयंवर रामकथा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह भगवान राम की वीरता, सीता के प्रति उनके प्रेम और धार्मिकता को दर्शाता है। इस प्रसंग में राम ने ना केवल शिव धनुष को तोड़कर अपनी शक्ति का प्रर्दशन किया, अपितु उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि वे मर्यादा पुरूषोत्तम हैं। इस दौरान उमरण ब्रह्मपुरी यज्ञ शाला बावड़ी के महामंडलेश्वर पीठाधीश्वर रामरतनदास महाराज, सियाराम बाबा बगीची महन्त श्यामसुंदर दास महाराज, नंदी धाम गौशाला के श्यामदास महाराज, सुदर्शन आचार्य, चित्रकूट के प्रेमदास महाराज, कानपुर के हरिदास महाराज सहित अन्य संतो का सानिध्य रहा। श्रीराम कथा में मुख्य यजमान जयपाल सिंह राठौड़, नरेंद्र भाटी, दामोदर शर्मा आदि ने व्यवस्थाएं संभाली।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर पुष्प अर्पित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय अग्रसेन नगर में अग्रसेन नगर समग्र विकास समिति की ओर से रविवार को शिक्षाविद् और भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। इस दौरान विधायक हरलाल सहारण, भाजपा मंडल अध्यक्ष सुरेश सारस्वत, अग्रसेन नगर समग्र विकास समिति अध्यक्ष वैद्य बनवारी लाल शर्मा आदि ने पुष्प अर्पित कर डॉ. मुखर्जी की जयंती मनाई। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद ने स्वेच्छा से अलख जगाने के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। डॉ. मुखर्जी मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी थे। डॉ. मुखर्जी इस धारणा के प्रबल समर्थक थे कि सांस्कृतिक दृष्टि से हम सब एक हैं। इसलिए धर्म के आधार पर वे विभाजन के कट्टर विरोधी थे। सुरेश सारस्वत ने भी मुखर्जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अग्रसेन नगर विकास समिति के अध्यक्ष बनवारी लाल शर्मा ने बताया कि मुखर्जी जम्मू कश्मीर को भारत का पूर्ण और अभिन्न अंग बनाना चाहते थे।

बीरड़ा की स्मृति में रक्तदान शिविर में युवाओं ने दिखाया उत्साह

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। गुलेरिया गांव के निवासी कालूराम बीरड़ा की प्रथम पुण्यतिथि पर जाट छात्रावास में रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। रतनगढ़ विधायक पूसाराम गोदारा ने कालूराम बीरड़ा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर शिविर का शुभारंभ किया। महंत स्वामी कानपुरी महाराज ने कहा कि रक्तदान ही महादान है और आज तक विज्ञान के युग में भी रक्त का कोई भी अन्य विकल्प नहीं खोजा जा सका है। पूर्व मंत्री खेमाराम मेघवाल, पूर्व सभापति सिकंदर अली खिलजी, सुजला महा सत्याग्रह संयोजक श्रीराम भामा, रणसिंह श्योराण, सुरजा राम बीरड़ा, बनवारी लाल कुलहरि ने कालूराम बीरड़ा की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। इस अवसर पर पौधारोपण भी किया गया। शिविर में युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर रणजीत भींचर, रामेश्वरलाल खिचड़, गोवर्धन लाल जानू, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष महेंद्र गोदारा, श्याम सुंदर स्वर्णकार, रामनिवास घोटिया, पूसराज स्वामी, सुकेश कड़वा, सरदार सिंह कासनियां, पंडित श्रीराम शर्मा, सुखराम बुरड़क, कमल जाखड़, सदाम खान, रोहित बीरड़ा, भंवरलाल जानू, कालूराम बाबरिया आदि लोग मौजूद रहे। रक्तदाताओं का सम्मान किया गया।

प्रशासन ने मोरथल गाँव में हटाया अतिक्रमण

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। जिला कलेक्टर व तारानगर उपखंड अधिकारी के निर्देशन में प्रशासन ने तारानगर क्षेत्र के गाँव मोरथल में अतिक्रमण हटाया। तहसीलदार शुभम शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि उच्च अधिकारियों के निर्देशानुसार नायब तहसीलदार, भू अभिलेख निरीक्षक, पटवारियों की ओर से पुलिस के सहयोग से मोरथल के खसरा नंबर 5,131,132,120 किस्म गैर मुमकिन गोचर में से अतिक्रमण हटाया गया जिसमें एसएचओ गौरव खिड़ीया, नायब तहसीलदार महावीर प्रसाद मीणा, भू अभिलेख निरीक्षक प्रदीप सहारण, नथूराम गोयल, बुधराम जोशी, प्रताप रुलानिया, शुभकरण मीणा, डूडी, प्रकाशी मीणा, पटवारी राकेश पूनिया, गुरदयाल आदि उपस्थित रहे।

कांग्रेस सेवादल की जिला कार्यकारिणी का विस्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। कांग्रेस सेवादल की जिला कार्यकारिणी का पुनर्गठन करते हुए नए कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियां दी गई हैं। कांग्रेस सेवादल के जिला अध्यक्ष संजय दीक्षित ने बताया कि कांग्रेस सेवादल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालजी देसाई, प्रदेश प्रभारी गोविंद भाई, ज्योति खन्ना व प्रदेश अध्यक्ष हेमसिंह शेखावत के निर्देश पर जिला कार्यकारिणी का विस्तार व पुनर्गठन किया गया है। दीक्षित ने बताया कि सांसद व विधायकों व नेताओं की अनुशंसा पर 10 नए ब्लाक बनाए गए है और जिले में खाली चल रहे पदो पर नई नियुक्तियां दी गई है। सेवादल के नव नियुक्त कार्यकर्ताओं ने उच्च नेतृत्व राष्ट्रीय अध्यक्ष लालजी देसाई, प्रदेश प्रभारी ज्योति खन्ना, प्रदेश अध्यक्ष हेमसिंह शेखावत, जिला अध्यक्ष संजय दीक्षित का आभार व्यक्त किया।

ट्रेन से कटकर युवक की मौत

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में बीती रात बीकानेर की तरफ से आ रही रेल की चपेट में आने से युवक की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार रात 9 बजे सूचना मिली कि राजलदेसर के पश्चिम ओवर ब्रिज से आगे एक युवक रेल की चपेट में आ गया। सूचना पर मौके पर पहुंचे जहां युवक की पहचान श्रवण कुमार पुत्र जेठाराम प्रजापत उम्र 34 निवासी वार्ड सं 1 राजलदेसर के रूप में हुई। पुलिस ने मृतक के शव को राजकीय चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया गया। सुबह परिजनों की उपस्थिति में पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया। मृतक के पिता घासीराम पुत्र जेठाराम ने रिपोर्ट दी मृतक श्रवण शराब पीकर लड़ाई झगडा करता था।

सड़क दुर्घटना में तीन लोग घायल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। गुलेरिया गांव के पास मोटरसाइकिल की टक्कर से बस मे चढ़ रहे बुजुर्ग किशनाराम भार्गव (70) निवासी चाड़वास के गंभीर चोट लगी। उसी मोटरसाइकिल सवार द्वारा लापरवाही से बाईक चलाने से उस पर बैठी सवारिया गिर गई। जिनमे सुरेंद्र (7) बावरी, सम्पति (10) निवासी निम्बी जोधा घायल हो गए। घटना के बाद मोटरसाइकिल सवार मोटरसाइकिल सहित फरार हो गया। सूचना पर टीम हारे का सहारा संयोजक श्याम स्वर्णकार, एम्बूलेंस चालक नवरत्न बिजारणिया मौके पर पहुचे और घायलों को सुजानगढ़ सरकारी अस्पताल की इमरजेंसी मे भर्ती कराकर इलाज शुरू कराया। सूचना पर कोतवाली थाना सुजानगढ़ से हेड कांस्टेबल दिलीप भी अस्पताल पहुंचे तथा मामले की जानकारी ली।

अवैध खिड़कियां बंद करवाने की मांग

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ(नि.सं.)। नया बास निवासी ओमप्रकाश तूनवाल ने नगरपरिषद के आयुक्त को एक ज्ञापन देकर आवासीय मकान के पीछे छोड़े गए पैसेज में पड़ोसी की ओर से निकाली गई अवैध खिड़की बंद करवाने की मांग की है। आयुक्त को प्रार्थना पत्र में बताया गया है कि वार्ड न. 25 नया बास में मेरा मकान स्थित है, जिसमें मेरे हवा, पानी, रोशनी के लिए 21 फुट का पैसेज छोड़ हुआ है। मेरे मकान के पीछे रमेश तोषनीवाल की ओर से पीछे की तरफ मेरे घर से सटती खिड़कियां मेरी तरफ खुली छोड़ दी, जिससे मेरी निजता का हनन हो रहा है। प्रार्थना पत्र में मकान के अवैध होने का आरोप भी लगाया गया है। पीड़ित ओमप्रकाश तूनवाल ने बताया कि अब तक नगरपरिषद की ओर से मुझे कोई राहत प्रदान नहीं की गई है।

नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों के मनोनयन के लिए प्राप्त आवेदनों के दस्तावेज सत्यापन का अंतिम अवसर

आवेदक 9 जुलाई को करवाएं सत्यापन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। नागरिक सुरक्षा विभाग, चूरू में नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों के मनोनयन के लिए जिले में इच्छुक आवेदकों से प्राप्त आवेदन पत्रों के सत्यापन के लिए अंतिम अवसर दिया गया है। आवेदक अभ्यर्थी 9 जुलाई को सवेरे 10 बजे से सांय 05 बजे तक जिला मुख्यालय स्थित टाउन हॉल में अपना दस्तावेज सत्यापन करवा सकते हैं। एडीएम अर्पिता सोनी ने बताया कि आवेदकों को 9 जुलाई को निर्धारित समयानुसार दस्तावेज सत्यापन के लिए अपने मूल दस्तावेजों सहित उपस्थित होने के लिए कहा गया है।

80 लाख की अवैध शराब के साथ एक गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। ऑपरेशन वज्र अभियान के तहत भानीपुरा पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए पंजाब से गुजरात अवैध शराब ले जा रहे अन्तर्राज्यीय शराब तस्कर को पकड़ने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने आरोपी स्वरूपाराम निवासी भादरेस पूनसिया, जिला बाड़मेर को गिरफ्तार कर उसके ट्रक से पंजाब निर्मित अंग्रेजी शराब के 526 कार्टून कुल 6312 बोतल बरामद किए। जब्त शराब की बाजार कीमत करीब 80 लाख रुपये बताई जा रही है। जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेन्द्र दादरवाल व वृताधिकारी रोहित सांखला के निर्देशन में थानाधिकारी रायसिंह के नेतृत्व में डीएसटी चुरु टीम ने पुलिस ने आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गौरतलब है कि भानीपुरा पुलिस की ओर से पिछले दो महीनों में यह तीसरी बड़ी कार्रवाई है। इससे पहले 1 मई को 850 कार्टून शराब व 4 जुलाई को 26 कार्टून शराब तस्करी में भी तस्करों को गिरफ्तार किया गया था। थानाधिकारी रायसिंह, रामेश्वरलाल, रामचन्द्र बुडानिया, विनोद कुमार, सुरेन्द्र कुमार, पवन कुमार, हरेन्द्रपाल, डीएसटी प्रभारी जयप्रकाश मय टीम व साइबर सैल से हैडकानि धर्मवीर सिंह शामिल रहे।

विधायक सुभाष मील ने सुनी जनसमस्याएं

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। खंडेला विधायक सुभाष मील ने सौंथलिया स्थित विधायक आवास पर जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन कर क्षेत्रवासियों की समस्याएं सुनी और अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए। ओएसडी शीशराम घोसल्या ने बताया कि विधायक सुभाष मील ने क्षेत्रवासियों की बिजली, पानी, सड़क, जमीन, स्थानांतरण, स्टाफ नियुक्ति आदि समस्याओं की सुनवाई की। गौरतलब है कि अब तक विधायक सुभाष मील ने क्षेत्र में पिछले कई सालों से चल रहे 51 विवादित रास्तों के मामलों में समझाइश करते हुए सुलह करवाई है। जिस पर क्षेत्रवासियों ने विधायक सुभाष मील का साफा बंधवाकर और दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया।

नाली निकासी को लेकर विवाद, दो गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में वार्ड सं 30 में पानी की नाली निकासी की बात को लेकर झगड़ा हो गया। जिसमें दोनों पक्षों से दो व्यक्तियों को शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार पुलिस को सूचना मिली कि वार्ड सं 30 में दो पक्षों में झगड़ा हो गया। जिस पर मौके पर पहुंचे तो पानी की नाली निकासी को लेकर दो पक्ष आपस में झगड़ा कर रहे काफी समझाइश के बाद नहीं मानने से एक पक्ष से अस्फाक पुत्र ईशुदिन कसाई उम्र 45 निवासी वार्ड सं 30 राजलदेसर तथा दुसरे पक्ष से सदाम पुत्र अब्दुल गनी उम्र 20 साल निवासी वार्ड नं 30 राजलदेसर को शांति भंग में गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जाएगा।

रोटरी क्लब की प्रासंगिकता पर डाला प्रकाश, दिलाई शपथ

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। रोटरी क्लब सीकर की नई टीम का शपथ ग्रहण कार्यक्रम सीकर में गोविन्दम में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में शपथ अधिकारी के रूप में जयपुर से आए रोटरी प्रांत 3056 के निर्वाचित प्रांतपाल रो. अरूण बगड़िया ने क्लब की नव निर्वाचित अध्यक्ष रो. धीरज कँवर, सचिव गौरव सोमानी सहित क्लब के बोर्ड के सभी सदस्यों को पद व दायित्व की शपथ दिलाई। रो. अरूण बगड़िया ने सीकर क्लब के सेवा प्रकल्पों की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि रोटरी सेवा, सहयोग और मैत्री का ऐसा मंच है, जो विश्व बन्धुत्व, शिक्षा, चिकित्सा, जल-संरक्षण, समाज के आर्थिक सहयोग आदि क्षेत्रों में प्रभावशाली तरीके से कार्य कर रहा है। पूर्व प्रांतपाल डॉ. बलवन्त सिंह चिराना ने सदस्यों को रोटरी की प्रासंगिकता और जीवन में सेवा व जरूरतमंद को सहयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ सदस्य और सुप्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ. जी.एल.राठी ने रोटरी की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए सेवा-भावना के महत्व को बताया। सहप्रांतपाल डॉ. दिव्या कचौलिया ने रोटरी की परम्पराओं के बारे में बताया। निवर्तमान अध्यक्ष रो. चम्पा सोनी ने गत वर्ष के सहयोग के लिए आभार प्रकट किया, वहीं निवर्तमान सेक्रेटरी डॉ. अनीता राठी ने गत वर्ष किये गये कार्यक्रमो का विवरण रखा। कार्यक्रम का संचालन रो. सुनील मोर एवं डॉ. अमर सिंह कविया ने किया। इस अवसर पर सीए सुशील अग्रवाल, रो. जितेन्द्र कचौलिया, डॉ. अर्जुन सिंह शेखावत, रो. दिनेश बियानी, रो. अनुराग बियानी का रोटरी फाउण्डेशन में सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। रो. डॉ. दीपक गर्ग ने रो. अरूण बगड़िया का परिचय दिया।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव जाकर किया जनसंपर्क

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। धोद में आयोजित संविधान बचाओ आम सभा को लेकर कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव जाकर किया जनसंपर्क। धोद विधानसभा में 13 जुलाई को आयोजित संविधान बचाओ आम सभा की तैयारी तेज कर दी गई है। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि जिस तरह से भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार व राज्य सरकार संविधान के साथ छेड़छाड़ कर रही है। संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर रही है, आम आदमी की समस्याओं की तरफ ध्यान नहीं दे रही, इसके विरोध में धोद विधानसभा में संविधान बचाओ आम सभा 13 जुलाई को धोद कस्बे में रखी गई है जिसमें मुख्य वक्ता कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, राजस्थान के सह प्रभारी चिरंजी राव, जिला प्रभारी विशाल जांगिड़ उपस्थित रहेंगे।इस दौरान कांग्रेस प्रत्याशी जगदीश दानोदिया ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में आम सभा में पहुंचकर भारतीय जनता पार्टी की आम जन विरोधी नीतियों का विरोध करें। स्मार्ट मीटर लगाकर आम उपभोक्ता का शोषण करने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार कर रही है। आज महंगाई बढ़ाकर आम जनता पर बोझ डालने का काम राज्य सरकार कर रही है, हम इसका पुरजोर शब्दों में विरोध करते हैं। आने वाले समय में कांग्रेस का कार्यकर्ता इस सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेगा। कांग्रेस ने गांवों में जाकर जनसंपर्क किया।

जाट विकास संस्थान की मासिक बैठक में अनेक मुद्दों पर की चर्चा

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के जाट विकास संस्थान की मासिक बैठक संस्थान भवन में अध्यक्ष दौलत राम सारण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में संस्थान की जून माह की गतिविधियों की समीक्षा की गई। जिसमें बताया गया कि गांव-गांव जाकर संस्थान से 624 नए सदस्यों को जोड़ा गया। यह कार्य पूर्व अध्यक्ष रामेश्वरलाल मूंड, मालाराम गोदारा, महामंत्री महावीर सहू, हरिराम सारण, रणवीर सारण, कोषाध्यक्ष नंदराम चाहर आदि के नेतृत्व में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। क्रय समिति खरीद समिति का गठन कर उपाध्यक्ष महेन्द्र सिहाग की अध्यक्षता में 5 सदस्यों की टीम के रूप में किया गया। संस्थान के लेखा-जोखा को अद्यतन करने हेतु महामंत्री महावीर सहू की अध्यक्षता में समिति बनाई गई। संस्थान की गतिविधियों, उपलब्धियों व योगदान को समर्पित जाट विकास संस्थान स्मारिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। समुदाय के इतिहास और वर्तमान कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करेगी। भंवरलाल सारण द्वारा संस्थान में एसी भेंट करने, संजय भंवरिया को निःशुल्क टेंट व भंवरलाल देडू को कूलर भेंट करने पर माला पहनाकर व तेजा जी की तस्वीर भेंटकर सम्मानित किया गया। बैठक में नगरपरिषद सभापति राजकरण चौधरी, ईश्वर राम डूडी, प्रभुदयाल सिहाग, भगवानराम जाखड़, शेर सिंह रेवाड़ ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर हीरालाल बेनीवाल, प्रभुराम पूनियां, सुरेंद झोरड़, रामनिवास सारण, भंवरलाल सारण, रजीराम कड़वासरा, श्रवण कुमार सहू, रामचंद्र सिहाग, केशरराम सारण, मेघाराम हुड्डा वं कोषाध्यक्ष नंदराम चाहर उपस्थित रहे। अध्यक्ष दौलत राम सारण ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान लगातार सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक उन्नयन की दिशा में अग्रसर है। सभी सदस्यों का सहयोग संस्था को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

शिविर में मिली फव्वारा सयंत्र की स्वीकृति, अब उन्नत कृषि कर सकेंगे किशोर सिंह

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जब सरकार की योजनाएँ ज़रूरतमंदों तक सही समय पर पहुँचती हैं, तो उसका प्रभाव जीवन बदलने वाला हो सकता है। ऐसा ही एक वाकया है चूरू जिले के भींवसर निवासी कृषक किशोर सिंह का, जिनके लिए जिले में चल रहे पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा अंतर्गत शिविर एक आशा की किरण बनकर उभरा है। चूरू जिले के भींवसर निवासी कृषक किशोर सिंह पुत्र रामसिंह राजपूत के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा अंतर्गत आयोजित शिविर सौगात लेकर आया। किशोर सिंह लंबे समय से वर्षा पर निर्भर होकर खेती कर रहे थे। कम पानी की उपलब्धता और पारंपरिक सिंचाई के तरीकों से उनकी फसलें अक्सर प्रभावित होती थीं। पानी की कमी के कारण उत्पादन में लगातार गिरावट आ रही थी और आय पर भी असर पड़ रहा था। जिले के भींवसर में 2 जुलाई को आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा अंतर्गत शिविर आयोजित होने की सूचना प्राप्त हुई तो किशोर सिंह ने शिविर में उपस्थित होकर अधिकारियों को अपने खेत में फव्वारा संयंत्र अनुदान हेतु उद्यान विभाग में राज किसान साथी पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत करने की जानकारी दी। अधिकारियों ने तुरंत मौके पर ही आवेदन व पात्रता की जांच कर किशोर सिंह को फव्वारा संयत्र की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की। अब किशोर सिंह के खेत में फव्वारा संयंत्र स्थापित होने से कृषक को अनुदान राशि के साथ फव्वारा संयंत्र से पानी की बचत, बढ़ी हुई फसल पैदावार, आसान संचालन और कम श्रम के लाभ भी मिल पाएंगे। किशोर सिंह ने स्वीकृति प्राप्त होने की सूचना मिलते ही मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का आभार जताते हुए कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हम जैसे किसानों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ चलाई हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय शिविर के माध्यम से मुझे समय पर स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली की स्वीकृति मिली है। अब मैं अपने खेतों में कम पानी में भी अधिक क्षेत्र की सिंचाई कर पाउंगा और उन्नत कृषि से मेरा उत्पादन बढ़ेगा।

राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी ने किया सड़क का शिलान्यास

हजारों ग्रामीणों को मिलेगा फायदा

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। जिले के कुदन रविवार को कुदन यालसर 3.75 किलोमीटर रोड़ का शिलान्यास समारोह में आयोजित किया गया। यह रोड़ कुदन से कोराना जोहड़ा होते हुए यालसर तक जाएगी जिसका राज्यसभा सांसद घनश्याम तिवाड़ी और अतिथियों ने पट्टिका का अनावरण किया। इस दौरान धोद विधायक गोरधन वर्मा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुभाष महरिया, पूर्व विधायक फतेहपुर नंदकिशोर महरिया, उप जिला प्रमुख ताराचंद धायल, सहकारी भूमि विकास बैंक चैयरमैन कैलाश तिवाड़ी, सहायक अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग अनिल जांगिड, कूदन सरपंच रामप्यारी देवी, पूर्व सरपंच जेपी थोरासी, दोलतपुरा सरपंच दिनेश आर्य, सरपंच प्रतिनिधि लालासी राजु गढ़वाल, सरपंच प्रतिनिधि सुल्तान सुडा, शिक्षाविद दयाराम महरिया, किसान नेता पुरणमल चाचा, उपसरपंच प्रतिनिधि करणसिंह, दुर्गा सिंह सेवा समिति अध्यक्ष विधाधर काजला गांव के सैंकड़ों लोग उपस्थित रहे। अतिथियों का स्वागत हरिराम बाबा मंदिर प्रांगण में हरिराम सेवा समिति कोराना जोहड़ा की ओर से माला और शाल ओढ़ाकर किया गया। सांसद घनश्याम तिवाड़ी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शेखावाटी में पानी की समस्या का हल जल्द से जल्द करने की कोशिश की जा रही है। कार्यक्रम का संचालन नेकीराम ने किया।

विश्व हिंदू परिषद की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। शहर की संचियालाल बैद आदर्श विद्या मंदिर परिसर में रविवार को विश्व हिंदू परिषद की जिला बैठक संत विजयनाथ महाराज के सानिध्य में हुई। जिलाध्यक्ष सुभाष पारीक की अध्यक्षता में हुई बैठक में विभाग मंत्री गजानंद दाधीच ने परिषद का सदस्यता अभियान के लिए चलाए जाने वाले हित चिंतक अभियान, नई समितियों के गठन, धर्म रक्षा निधि नियोजन के संदर्भ में जानकारी देते हुए कार्यकर्ताओं को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। बैठक में उन्होंने बताया कि संघ के शताब्दी वर्ष व विहिप के षष्ठी पूर्ति समापन वर्ष के उपलक्ष में हित चिंतक अभियान चलाकर परिषद का कार्य हर गांव की इकाई स्तर तक पहुंचाकर सनातन धर्म व संस्कृति की अलख जगाने और आगामी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। पारीक ने हिंदू नववर्ष के प्रारंभ से लेकर अब तक चलाए गए कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया। प्रांत धर्म प्रसार टोली सदस्य नरेंद्र भाटी ने वर्षा ऋतु में अधिक से अधिक पौधरोपण करने एवं प्लास्टिक के उपयोग की रोकथाम के लिए संकल्प बद्ध होने का आह्वान किया। दुर्गावाहिनी प्रांत सहसंयोजिका राजेश्वरी जांगिड़ ने मातृ शक्ति व दुर्गा बालिकाओं के प्रशिक्षण के लिए कार्यों की प्रगति देने के लिए कार्य योजना पर प्रकाश डाला। बैठक में कोषाध्यक्ष प्रेम तुनवाल की ओर ह्आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया और संपूर्ण जिले में परिषद कार्यकर्ताओं के परिजनों के निधन होने पर दो मिनट का मौन रखा गया। परिषद के प्रखंड रतनगढ़ के अध्यक्ष राजकुमार महर्षि ने आगंतुकों का आभार प्रकट किया। जिला बैठक में महावीरप्रसाद महर्षि, विनोद शर्मा, शिवदयाल पारीक, अरविंद मिश्रा, प्रहलाद राजपुरोहित, मनोहरलाल शर्मा, धनराज सैन, राजेश सुंदरिया, सीमा पारीक, कालूराम बाबरिया, रोहिताश सहदेवड़ा, दिनेश नाई, बजरंगलाल प्रजापत, जगदेव शर्मा, राजेंद्र चांदगोठिया, कृष्णकुमार रामावत, सुजल सैन, रामदेव चंदनिया सहित कई लोग उपस्थित रहे।

संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती मनाई

सीकर(निस)। भारतीय जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती रविवार को जिला भाजपा कार्यालय में मनाई गई। जिलाध्यक्ष मनोज बाटड़ की अध्यक्षता में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर भाजपा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।जिलाध्यक्ष मनोज बाटड़ ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी ने कश्मीर के लिए अपना बलिदान दे दिया। वे कहते थे कि एक देश में दो विधान व दो निधान नहीं चलेंगे। वक्ताओं ने डॉ. मुखर्जी के जीवन पर प्रकाश डाला और देश के हित के लिए उनके बताए मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

खेल खेल में निगल लिया 1 रुपए का सिक्का, गले में सिक्का फंसने से आफत में पड़ी जान

राजकीय उप जिला अस्पताल में डॉक्टरों ने किया जटिल ऑपरेशन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है जहां एक ढाई साल की मासूम बच्ची ने खेलते-खेलते गलती से 1 रुपए का सिक्का निगल लिया। इस छोटी सी लापरवाही से बच्चे की जान भी जा सकती थी। दरअसल सरदारशहर के गांव रामसीसर भेडवालिया की ढाई वर्षीय रुचिका नायक के गले में खेलते वक्त एक रुपए का सिक्का फंस गया। जैसे ही यह बात रुचिका के परिजनों को पता चली। परिजनों की जान अटक गई। इस दौरान रुचिका की मां का रो रो कर बुरा हाल हो गया। वहीं सिक्का गले में खाने की नली में फंसा होने के कारण रुचिका की जान पर बन आई। जिसके बाद सरदारशहर के राजकीय उपजिला अस्पताल में रुचिका का इएनटी रोग विशेषज्ञ डॉ लोकेंद्रसिंह राठौड़ की टीम ने जटिल ऑपरेशन कर एक रुपए के सिक्के को बाहर निकाला। इस दौरान अस्पताल प्रभारी डॉ चन्द्रभान जांगिड़ ने बताया कि खेलते वक्त ढाई वर्षीय रुचिका ने सिक्का निगल लिया था। उस समय बच्ची के घरवालों को पता नहीं चला लेकिन धीरे धीरे बच्ची को खाने ओर सांस लेने में दिक्कत होने लगी। जिस पर बच्ची के परिजन बच्ची को राजकीय उपजिला अस्पताल लेकर पहुंचे। जिसके बाद बच्ची का एक्स-रे करवाया गया। जांच में यह सामने आया कि सिक्का बच्चे की सांस व खाने की नली में फंसा हुआ है। यह स्टेज बहुत डेंजर था क्योंकि सिक्का सांस की नली को भी ब्लॉक कर सकता था। जिससे बच्चे की जान जाने का भी खतरा था। ऐसे में डॉ लोकेंद्र सिंह राठौड़ और उनकी टीम ने बच्ची को इमरजेंसी ऑपरेशन थिएटर में शिफ्ट किया और जटिल ऑपरेशन के बाद सिक्के को सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया।

डॉक्टर ने बचाई बच्ची की जान

बच्ची का सफल ऑपरेशन करने वाले डॉ लोकेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया की गले में फंसे सिक्के के साथ परिजन बच्चे को लेकर अस्पताल पहुंचे। फिर कड़ी मशक्कत के बाद सिक्के को बाहर निकाला गया। डॉ राठौड़ ने बताया कि बच्चों के परिवारजनों से यह अपील की है कि अगर किसी भी छोटे बच्चों को सिक्का देते हैं तो सावधानी बरतें, नहीं तो बच्चों की जान पर भारी पड़ सकता है। अमूमन गांव के घरों में बच्चे सिक्के लेकर मुंह में डाल लेते है। यह कारण है कि बच्चे सिक्के निगल जाते हैं, जो ज्यादातर गले में जाकर अटक जाता है। ऐसी स्थिति में सिक्के को बाहर निकालना किसी खतरे से कम नहीं रहता है। लेकिन जब गले में किस जगह पर सिक्का अटक जाता है। उसका सही आंकलन हो जाने पर ही ट्रीटमेंट और सिक्का निकालने की शुरुआत की जाती है। ऑपरेशन में शामिल डॉ कमलेश ने बताया कि खाने की नली में कोई भी वस्तु फंस जाना बहुत गंभीर होता है। अगर इलाज में थोड़ी सी भी देरी हो जाती तो स्थिति जानलेवा हो सकती थी। लेकिन समय पर इलाज मिलने से बच्ची अब पूरी तरह सुरक्षित है। वहीं अब सिक्का निकलने के बाद रुचिका के परिजनों ने राहत की सांस ली हैं। राजकीय उप जिला अस्पताल में यह ऑपरेशन मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत पूरी तरह से निशुल्क हुआ। जिसके लिए परिजनों ने डॉक्टरों और राज्य सरकार का आभार प्रकट किया।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।